अथर्व संहिता विधान



प्रधान सम्पादक—
डा० मण्डन मिश्र, आचार्य

लेखक—
आचार्य केशवदेव शास्त्री, शास्त्र चूडामणि

प्रकाशक—
श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली-१६

अथर्व संहिता विधान



प्रधान सम्पादक—
डा० मण्डन मिश्र, प्राचार्य

लेखक—
आचार्य केशवदेव शास्त्री, शास्त्र चूडामणि

सम्पादक—
आचार्य डा० अजय कुमार मुद्गल

प्रकाशक—
श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ
नई दिल्ली-१६

प्रकाशक—
डा० मण्डन मिश्र
प्राचार्य

प्रथम संस्करण, ५५० प्रतियां

मूल्य :

वर्ष—१९८८-८९ ई०

श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ के
तत्त्वावधान में प्रकाशित

मुद्रक—
आदर्श प्रिंटिंग प्रेस, बंगाली घाट, मथुरा (उ. प्र.)

प्रधान सम्पादकीय

भारतीय जीवन के अन्तःस्थल में निरन्तर प्रवाहशील अजस्र स्रोत के रूप में वेदों का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। वेद हमारे अध्ययन और चिन्तन के ही नहीं, हमारे जीवन के भी आधार हैं। वेदों के माध्यम से ही हमारी उदात्त संस्कृति का उदय और विकास हुआ तथा विश्व के रंगमंच पर उच्चतम प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। वैदिक वाङ्मय को सभी समालोचकों ने प्राचीनतम साहित्य के रूप में स्वीकार किया है। वेदाध्ययन को परम पुरुषार्थ अंगीकार करते हुए ब्रह्म प्राप्ति का उपाय बताया गया है—

वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो यत्र कुत्राश्रमे वसन्।
इहैव लोके तिष्ठन् स ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ (मनुस्मृति)

वेद वस्तुतः एक है परन्तु स्वरूप-भेद के कारण चार विभागों में विभक्त किया गया है। याज्ञिक अनुष्ठान को दृष्टि में रखते हुए भिन्न-भिन्न ऋत्विजों के उपयोग के लिये स्वयं भगवान् वेदव्यास ने इन संहिताओं का ऋक्-संहिता, यजुः संहिता, सामसंहिता एवं अथर्वसंहिता के रूप में संकलन किया। ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद पारलौकिक फल देने वाले हैं, केवल अथर्ववेद ही पारलौकिक के साथ ही ऐहिक फल लाभ दिलाने वाला वेद है। जीवन को सुखमय तथा दुःख-रहित बनाने के लिये जिन साधनों की आवश्यकता होती है, उन सभी की सिद्धि के लिये नानाविध अनुष्ठानों का वर्णन इस वेद में किया गया है। सार्वलौकिक कार्यसिद्धि में अथर्व ही मुख्यरूप से प्रयुक्त होता है। अथर्ववेद में मुख्यरूप से निम्नलिखित विषय वर्णित हैं—

(१) **भैषज्यसूक्त**—इन मन्त्रों में विभिन्न रोगों की चिकित्सा के उपायों का वर्णन है।

(२) **आयुष्यसूक्त**—इन सूक्तों में दीर्घ आयु के लिये एवं प्रत्येक प्रकार के रोग से रक्षा के लिये की गई प्रार्थनाओं का समावेश है। इन सूक्तों का विशेष प्रयोग पारिवारिक उत्सवों के अवसर पर होता था।

(३) **पौष्टिकसूक्त**—इस विभाग में गृह निर्माण के लिये, कृषि कर्म के लिये, व्यापार के लिये नाना प्रकार के आशीर्वादों की प्रार्थना की गई है।

(४) प्रायश्चित्तसूक्त—इस विभाग के अन्तर्गत विभिन्न चारित्रिक त्रुटियों, धार्मिक विरोधों एवं विधिहीन आचरणों के लिये प्रायश्चित्त का विधान है।

(५) स्त्रीकर्म – विवाह, प्रेम तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने वाले अनेक सूक्त इस विभाग के अन्तर्गत आते हैं।

(६) राजकर्म—राजाओं के धर्म-कर्म से सम्बद्ध अनेक मन्त्र अथर्ववेद में पाये जाते हैं। शत्रुओं को परास्त करने की प्रार्थना के साथ ही संग्राम तथा तदुपयोगी साधनों का भी विशद वर्णन है। इसीलिये इसे क्षत्रवेद भी कहा गया है।

इसके अतिरिक्त पृथिवीसूक्त, ब्रह्मसूक्त आदि अनेक महत्त्वपूर्ण सूक्तों का इस में अन्तर्भाव है।

पं० केशवदेव शास्त्री जी द्वारा विरचित अथर्वसंहिता विधान नामक इस ग्रन्थ में विस्तारपूर्वक अथर्ववेद विहित विधि विधानों का वर्णन किया गया है। शास्त्री जी इस विद्यापीठ में शास्त्र चूडामणि योजना के अन्तर्गत विशिष्ट विद्वान् के रूप में नियुक्त हैं। ये भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी रहे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त शास्त्री जी ने स्वयं को सम्पूर्ण रूप से वैदिक शोधकार्य में संलग्न कर लिया तथा कर्मजव्याधिनिरोध, कर्मजभवव्याधि दैवीचिकित्सा, श्रीमहाविद्यालक्ष्मी अर्चनम् आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की। प्रस्तुत ग्रन्थ भी इसी शृंखला की अग्रिम कड़ी है। यह सौभाग्य की बात है कि दिल्ली विद्यापीठ को शास्त्र चूडामणि योजना के अन्तर्गत श्री शास्त्री जी की सेवायें उपलब्ध हुई हैं। विद्या के साथ-साथ उनका साधना पक्ष विशेष रूप से स्पृहणीय है। उनके ज्ञान तथा अनुभव का लाभ देश को मिले—इस दृष्टि से वेदजिज्ञासु विद्वज्जनों के लिये श्री शास्त्री जी की यह कृति निश्चित ही लाभप्रद रहेगी।

अत्यन्त खेद है कि इस पुस्तक का मुद्रण कार्य सम्यक् प्रकार से न हो सकने के कारण मुद्रण में अनेक अशुद्धियां रह गई हैं। आशा है विद्वज्जन इस ओर अधिक ध्यान न देते हुए क्षमा करेंगे।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः।

डा० मण्डन मिश्र
प्राचार्य,

अथर्व विधान-भाषा

अघोरचक्षरपतिघ्न्येधि स्योनाशग्मासुशेवा सुयमागृहेपु ।

प्रजावती वीरसू देवकामे-मामाग्निं गार्हपत्यं स पर्य ॥१॥ (८)

अदे वृच्न्य पतिघ्नेधिस्योना-पशुभ्य सुमना सुवीरा ।

वीरसूदेवकामा संत्वयै धिषीमहि सुमनस्य माना ॥ (९)

वैदिक भारतीयों की धर्म की मूलधार भगवती श्रुति अथर्व पिप्पलाद १८।८ ९ सर्व या बन्ध है। भारतीय उसकी रक्षा के लिये सभी प्रकार के प्रयत्न कर रहे हैं। वेद राशि की यथावत स्थिति प्राप्त के लिये वेद वाक्यों के पठन के लिये पद क्रम जटाघनादि रीतियों का अन्वेषण किया। इस पर अनन्त विघ्न समय-समय पर आये और महान् वेदनिधि लुप्त हो गई, परन्तु जो भी कुछ अभी अवशिष्ट है वह भी कोई साधारण नहीं। प्राचीन काल में भारतीय गुरु परम्परानुगत इस वेद राशि को किस प्रकार कण्ठ स्थर रखते रहे यह बड़े आश्चर्य का विषय है। भारत का गौरव और वैशिष्टय वेद और वैदिक ग्रन्थों में ओत-प्रोत है। वेद हमारे प्राण हैं।

वेद परमेश्वर के निश्वसित रूप हैं। जिनको जन कल्याणार्थ परमात्मा ने प्रकाशित किया। ऋषियों ने अपने तपोवल से उनका साक्षात्कार किया। वेद-राशि अनन्त है "अनन्तो वै वेदः" इतिश्रुति (तैत्तिरीय ब्राह्मण) यह पूर्व काल में एक ही थी। परन्तु भगवान वेद व्यासजी ने प्राणियों की मन्द मति का अनुभव कर उस सम्पूर्ण १ वेद राशि को ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, तथा अथर्व वेद के रूप में चतुर्धा विभाजित किया। जिसको सर्व प्रथम क्रमशः पैल, वैशम्पायन-जैमिनि और सुमन्तु ने ग्रहण किया। इसी (वेदान्-विव्यास) से वेद व्यासजी कहलाये। ये २ वेद विभाग संहिता शब्द से ख्यात हैं इस संहिता का निर्माण काल त्रेता युग में हुआ।

ऋग्वेद पाठन काल में पैल के वाष्कल और शाकल दो शिष्य थे। जिन्होंने यथा क्रम स्ववेद को चार पांच भागों में विभक्त किया। गृहीत यजुर्वेद को वैशम्पायन जी ने अनेकों शिष्यों को पढ़ाया जिन में एक याज्ञवल्क्य भी थे। किसी प्रकार गुरु शिष्य विवाद के कारण याज्ञवल्क्य जी ने पढ़े हुए वेद का परित्याग कर दिया। उस समय वैशम्पायन जी के अन्य शिष्यों ने तित्तिरिपक्षि रूप धारण कर उसे धारण किया। वह वेद भाग कृष्ण यजुर्वेदीय तैत्तिरीय संहिता हुई। याज्ञवल्क्य जी ने सूर्योप देश से वेद को अधिगत किया वह शुक्ल यजुर्वेद नाम से ख्यात है। जैमिनि गृहीत सामवेद पाठनान्त सहस्रधा रूप में विभक्त हुआ। उनमें पौष्यंजी प्रभृति सहस्रों शिष्य

हुए, वे औदीच्या कहलाये। गृहीत अथर्व वेद को सुमन्तु ने कवन्ध को उपदिष्ट किया। उनके वेददर्श और पथ्य दो शिष्य हुए उनके क्रमशः चार और तीन शिष्य हुए।

टिप्पणी—१ "चत्वारो वा इमे वेदा-ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ब्रह्मवेदः। गो० ब्रा० २।१६

२—ततस्त्रेतायुगं नम त्रयी यत्र भविष्यति। महा० शान्ति पूर्व १३०८८ श्लोक उपर्युक्त वेद की चारों शाखा वेदत्रीय पद या त्रयी पद से वर्णित हैं। इन वेदों का यज्ञार्थ कर्म में साक्षात्सम्बन्ध है। ये चारों वेद भाग ही मन्त्र संहिता रूप हैं। वस्तुतः वेद राशि मन्त्र ब्राह्मणात्मक, वेदनामधेय है महर्षि पाताञ्जलि के मत से एक शतमध्वुर्शाखा; सहस्त्रवर्त्मा साम वेदः, एक विंशतिधा बाङ् नवधा-ऽथर्वणो वेदः"।

ऋग्वेद की २१ शाखा भेद हैं। उनमें एक शाकल शाख ही उपलब्ध है अन्य २० अनुपलब्ध हैं। उपलब्ध शाकल शाखा ही ऋग्वेद के रूप में परिगणित हैं यह १० मण्डल १२८ सूक्तों में वर्णित है।

यजुर्वेद की १०१ शाखा हैं। चरण व्यूह गन्थ में ८६ का ही उल्लेख है। आजकल ६ शाखा ही उपलब्ध है। यजुर्वेद के कृष्ण-शुक्ल दो भेद हैं। कृष्ण यजुर्वेद की काठक संहिता, कपिष्ठल संहिता, मैत्रायणी संहिता, तैत्तिरीय संहिता ये ४ प्राप्य हैं शुक्ल यजुर्वेद की माध्यान्दिनी संहिता काण्व संहिता ये दो उपलब्ध हैं। यज्ञ प्रतिक्रिया प्रतिपादन पर गद्य रूप वेद भाग यजुर्वेद में हैं। कृष्ण यजुर्वेद में तैत्तिरीय संहिता में आग्याधान प्रभृति- अग्निष्टोम- वाज पे यादि विविध यज्ञों कीं प्रक्रिया का नर्णन है ये सभी प्रक्रिया असाधारण ज्ञान कौणल पूर्ण हैं। जो साङ्गो पाङ्ग विस्तार पूर्ण पठन से बिस्मय में डाल देने वाली हैं।

शुक्ल यजुर्वेद की वाज सनेयी शाखा के ४० अध्याय हैं। इनके प्रथम २५ अध्यायों में महत्व पूर्ण यज्ञ विधियां हैं। २६ से ३५ तक खिल-संज्ञक हैं जिनको पूरणिकाध्याय प्राचीन परम्परा में कहा है। ३६ से ३९ अध्यायों में प्रवर्ग्य भाग है। ४० वां ईशोपनिषद है इन दोनों संहिताओं में कर्म और ज्ञान दोनों ही का विवरण है। यज्ञ प्रसङ्ग में अध्वर्यु: यजुर्वेद का ही उपयुक्त होता है।

सामवेद की १००० शाखाओं में से एक ही शाखा उपलब्ध है। उसके २ भाग हैं। १ आर्चिक भाग, २ स्तोक भाग। आर्चिक के दो में दो पूर्वार्चिक एवं उत्तरार्चिक दोनों में ऋग्वेद की ही ऋचायें है। ऋचा संख्या १८७५ में से १५४९ ऋग्वेदः के हैं।

सामवेद का पठन समस्त वेदों के पठनान्तर करने का नियम है। सामपठनान्त वेद पाठ नहीं करना चाहिये। यज्ञ कर्म में उद्‌गा ग्राह्य हैं उसे छन्दोग भी कहते हैं।

अथर्व वेद

अथर्व वेद के अनेक नाम हैं जो प्रायः १ उपर्युक्त मन्त्रों में ही निर्दिष्ट है। यथा सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम्'' (१० ७।२० अथर्व)

''तमृचः सामानि यजूंषि ब्रह्म चानुव्यचलन्'' (१५-६८)

''ऋचः साभानिभेषजाः'' (११-६-१४)

''अथर्व वेदमधीयते'' (१-२०) गोपथ ब्राह्मण

''एतद्वै भूयिष्ठं ब्रह्म यद्भृग्वङ्गिरसः'' (३-४) गो० ब्रा०

सतपथ—''ता उपदि शति अंगिरोवेद'' इति (१३-४-८)

''साम-क्षत्र वेद'' इति (१४।८।१४-२)

इस प्रकार-ब्रह्मवेद, क्षत्रवेदः, भैषज्यवेदः आङ्गि से वेदः अथर्वाङ्गिरस ब्रह्मः भृग्वङ्गिरस ब्रह्म'' ये स्पष्ट नाम वर्णित है। इनमें ब्रह्म वेद ही प्रसिद्ध है महाभारतादि में इसी को क्षत्र वेद तथ अथर्वाङ्गिरस में ब्रह्म के नाम से ख्यात है। मनु-आदि स्मृतियों में धर्म सूत्रों में भी यही वर्णित है। अथर्व वेद-नाम से प्राधान्यतया ''अथर्वणाँ'' ''आङ्गिरस'' का निर्देश है। जो निश्चय से ऋषि कुल नाम है। यज्ञ कर्म में ''ब्रह्मा'' यज्ञ रक्षक होने से ब्रह्म वेद ही अथर्व वेद का पर्यायी नाम हैं। क्षत्रियोपयोगी समस्त ज्ञान इसमें होने से ''क्षत्रवेद'' है। वैदिक युग में प्रचलित समस्त भैषज्य विज्ञन की मूल होने से ''भैषज्य वेद'' के नाम से ख्यात है।

अथर्व वेद की नव शाखायें हैं। (१) पैप्पलाद शाखा (२) तौद (३) मौद (४) शौनक (५) जाजल (६) जलद (७) ब्रह्मवेद (८) देवदर्शि (९) चारण वैद्या अर्थात् भैषज्य वेद। इनके नामों की पुष्टि चरण व्यूह ग्रन्थ से होती है। इनमें से शौनकीय तथा पिप्पलाद दही उपलब्ध हैं अन्य अप्राप्य या लुप्त प्राय: हैं उपर्युक्त पिप्पलाद शाखा-शारदा लिपि में प्रथम काश्मीर में प्राप्त हुई ऐसा कहा जाता है। वस्तुत: शौनकीय शाखा ही अथर्व वेद है। इसके २० काण्ड ७३० सूक्त अथवा ६००० मन्त्र हैं। इन सूक्तों को काण्ड, प्रपाठक सूक्त की पद्धति में वर्णन किया है। बीस वें काण्ड में श्रौत कर्मोपयोगि ऋग्वेद सूक्तों का संग्रह है। अन्य काण्डों मे बड़े ही कौतूहल के साथ सूक्त क्रम निश्चत किया गया है। यथा प्रथम काण्ड में प्राय: ४ मन्त्रों के सूक्त २,३,४,५ में क्रमश: ५, ६, ७, ८ मन्त्रों के सूक्तों का इस वेद की संहिता के संकलन में है।

छन्द और ऋषि–अथर्व वेद सूक्त के प्राय वैदिक छन्द ही हैं। यथा-गायत्री, अनुष्टुभ–पंक्ति, त्रिटुभ-ज गती-इत्यादि।

५ वें काण्ड का बहु भाग तथा पूरा षोड़श काण्ड गद्यात्मक हैं। इसी कारण वृहत्सर्वाणुक्रमणी में "निचृत: भूरिगर्भा: आर्षी" आदि छन्द मिलते हैं एक ही सूक्त में विभिन्न छन्द इस वेद में हैं। वहुत से सूक्त अनुष्टुप से प्रारम्भ त्रैष्टुभ पर समाप्त किये हैं। अथर्व वेद के अनुष्टुभ् ऋग्वेद से भिन्न हैं।

वृहत्सर्वानुक्रमणी में अथर्व वेद के ऋषियों में प्रधान अथर्वा, अङ्गिरा भृगु ये तीन हैं। कहीं-कहीं अप्रतिरथ:, वभ्रुपिङ्गल:, प्रमोचन, चातन प्रशोचन आदि भी उल्लेखित हैं। विषनाशक ऋषि गरुत्मान, पुरुष सूक्त के नारायण, विवाह सूक्त के 'सूर्या" विषयानुसार है।

अथर्व वेद के मन्त्रों के प्रतिपाद्य विषय:—

कौशिक सूत्रानुसार अथर्व वेद के ये प्रतिपाद्य विषय हैं:—(१) भैषज्यम् (२) अभिचारिकम् (३) स्त्रीकर्म (४) राजकर्म (५) साम्मनस्यम् (६) पौष्टिकम् (७) प्रायश्चित्तम् (८) अध्यात्मम् (९) संस्कारा: (१०) यज्ञकर्म (११) ब्राह्मण-हितम् (१२) कुन्तापसूक्तोन।

भैषज्य सूक्तों में :—तक्म, जलोदर, हरिमास्राव, कुष्ठ, विद्रधि व्रणादि रोगों का वर्णन, रजनी, लाक्ष्या: अरुन्धती, पृश्निपर्णि आदि भैषज्यों की स्तुति है। रोग निदान मन्त्रोपयोग, रोगज्ञान, रोगनिवारण साधनादि हैं। अभिचार कर्म में–पिशाच, कण्व, असुरादि निवारण शत्रु कृत्या प्रति हरण, मणिबन्धनादि हैं। आयुष्य सूक्तों में मृत्यु से छुटकारा निर्ऋत्यादि की प्रार्थना अग्नि उपासना: मणिबन्ध-नादि है।

स्त्री कर्म विषय में :— वशीकरण: सपत्नीमर्दन, पति-पत्नि ईर्षा निवारण गर्भ रक्षण, पतिवेदन, गर्भ दोष निवारण गर्भस्त्ररण, रक्तश्रावादि निवारण सोष्यन्ती आदि कर्म स्त्री सम्बन्धि बहु कर्मों का वर्णन है।

राज्य कर्म सूक्तों में :— युद्धोद्यत शत्रु के पराजय के लिये सेनापति आदि किस की आज मृत्यु होगी ? कौन जीवित आयेगा आदि विज्ञान, कवच धारण ध्वज उद्वज्रादि प्रयोग विधि राज्याभिषेक, प्रजासंवर्धन, राज्यभ्रष्ट राजा को पुनः राज्य प्रस्थापन, सांग्रासिक, अपराजित विधि राष्ट्र सभा आदि वर्णित हैं।
पौष्टिक कर्मों में-शाला निर्माण, वास्तुज्ञान, वास्तु दोष निवारण, कृषि वृद्धि संरक्षण, पर्जन्य प्रार्थना सर्पादिनिवारण अपशकुन शान्ति, आदि वर्णित हैं। विवाहादि संस्कारों का भी पूर्ण रूपेण वर्णन है। पाप, शाप आदि निवारणार्थ ब्रह्म वेद वर्णित है। अथर्व में ब्राह्मण गौ (५-१७,१८) ब्राह्मण हितार्थ ब्राह्मण द्वेषियों के प्रति शाप रूप में वर्णित है। यज्ञकर्मतथा अध्यात्मविषय तो इस वेद में अनूठे अनेक सूक्तों में वर्णित हैं।

अथर्व मन्त्रों का श्रौत कर्म में विनियोग :—

अथर्व वेदुमें प्राय: श्रौत कर्मोपयोगि विषय अल्प रूप में हैं। कहीं-कहीं यज्ञ वर्णन है। (७ ६७, १६०-१, ५८,५६) कहीं वेदी वर्णन है (७·१६) कहीं हवि-वर्णन (७-१८) में है। किन्तु उसका परोक्ष रूप है न कि साक्षात् श्रौत कर्म संवद्ध। वैतान सूत्रानुसार (६-४७, ४८) सूक्त यज्ञ-अग्निष्टोमादि के हैं। इनका तीनों ही सवनों में विनियोग है। (५-१२, २७) आप्त सूक्ति में पशुबन्ध में विनियोग किया है।

इसी प्रकार संस्राव्यहविः, यशोहविः, नैर्हस्तहवि, भूतहविः, समानहविः, आदि का श्रौत कर्मानुबन्धित्व रूप में वर्णन है।

राष्ट्र संवर्ग अथर्व परिशिष्टः—

अथर्वा सृजते घोरमद्भुतं शमयेत्तथा । अथर्वा रक्षते यज्ञं यज्ञस्यपतिरङ्गिराः । दिव्यान्तरिक्ष भौमानामुत्पातमनेकधा । शमयिता ब्रह्म वेदज्ञः तस्माद्दक्षिणतोभृगुः ।। ब्रह्मा शमयेन्नाध्वर्युर्न छन्दोगों न बह्वृचः । रक्षांसि रक्षति ब्रह्मा ब्रह्मा तस्मादथर्वविद ।।

अथर्व वेद साहित्यः—अथर्व वेद सम्बद्ध साहित्य विपुल है न केवल अथर्व मात्र मन्त्र निर्वाचन ही वेद विज्ञान का भण्डार है । उससे सम्बन्धित ग्रन्थों में प्रदर्शित रीति से अर्थ का ज्ञान करना भी अनिवार्य है ।

अथर्व वेद के पांच उपवेद हैं ।

गोपथ—"पञ्च वेदान् निरमिमीत सर्प-वेदं पिशाचवेदं, असुरवेदम् इतिहास वेदश्चेति । (९-१, १०) अथर्व सम्बन्धि ब्राह्मण "गोपथ ब्राह्मण" है इसके पूर्वोत्तर दो भाग हैं । "वैतान सूत्रम्" अथर्व वेद का श्रौत सूत्र है । कौशिक गृह्य सूत्र-समस्त सम्वद्ध ग्रन्थों में प्रधान है । केशव व पद्धति में वर्णित है "तत्रचतसृपु-शाखासु शौनकीयादिषु कौशिकोऽयं संहितांविधिरीति" अथर्व-हृदय-ज्ञान के लिये कौशिक सूत्र से अन्य कुछ भी नहीं है । यह अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ माना है । इसमें १४ अध्यायों के ग्रन्थ में अथर्वोक्त कमविस्तृतरूपसे वर्णित है । अथर्ववेद के पाँच कल्प ग्रन्थ वर्णित हैं । (१) नक्षत्र कल्प, (२) आंगिरस कल्प, (३) शान्ति कल्प, (४) वैतान कल्प और (५) संहिता कल्प ।

"पञ्चकल्पमथार्वाणं कृत्याभिः परिबृंहितम् ।
कल्पयन्ति हि यां विप्रा अथर्वाणविदस्तथा ।।"

अथर्ववेदस्य के "द्वासप्तति संख्याकानि परिशिष्टानि सन्ति" । अथर्व सम्बन्धी अन्य ग्रन्थों में— (१) पैठीनसी, (२) स्मृतिः, (३) लक्षण ग्रन्थ, (४) चतुराध्यायी, (५) पंच पटलिका, (६) प्रातिशाख्यः, (७ दन्त्योष्ठ विधिः, (८) वृहत्सर्वानुक्रमणिका, (९) सायणाचार्य विरचित अथर्व भाष्य—ये सुप्रसिद्ध हैं । (अ० प० ४ ५)

यस्य राज्ञे जनपदे अथर्वा शान्तिपारगाः ।
निवसत्यपिपताष्ट्रं वर्धते निरूपद्रवम् ।।
तस्माद्राज्ञा विशेषेण अथर्वाणं जितेन्द्रियम् ।
दान सन्मान सत्कारैर्नित्यं समभिपूजयेत् ।।

राष्ट्ररक्षा, राष्ट्रसम्वर्द्धनः, राष्ट्रीय उपद्रव निवारणार्थ, जितेन्द्रियं अथर्ववेत्ता का दान सन्मानादिराष्ट्र करे। (अथर्ववेद की विशेषता परिशिष्ट २।५)

नं तिथिर्न च नक्षत्रं न ग्रहो न च चन्द्रमाः।
अथर्वमन्त्रासम्प्राप्य सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥

अथर्व मन्त्रों की उपलब्धि तिथि, नक्षत्र, ग्रह, चन्द्रमा की प्रतिकूलता में भी सर्वार्थ सिद्धिप्रद होती है। (गो० का० १।१०)

"यस्तत्रार्थर्वण.न् मन्त्रान् जपेच्छ्रद्धासमन्वितः।
तेषां अर्थोद्भवं कृत्स्नं फलं प्राप्नोति सध्रुवम्"

जो निष्ठा, श्रद्धा तथा विधि से अथर्व मन्त्रों को जपता है निश्चय ही अर्थोद्भव महान् फल को प्राप्त करता है। इस कारण वेदाध्ययन अत्यन्त मनोविनोद कर समस्त ऐहिक, पारलौकिक तथा आध्यात्मिक कर्मों का मूल है। सभी जिज्ञासुओं को यथामति इस वेद का अध्ययन, अध्यापन, प्रचार-प्रसार अनिवार्य कर्तव्य है।

ॐ

अथर्व संहिता विधान शौनकीय शाखा

विषयानुक्रमणिका

अथर्वाङ्गिरषेभ्यो नमः

कैलिफोर्निया सानफ्रासिस्को से प्रयास पूर्वक उपलब्ध साहित्य पर आधारित

सन्दर्भ वैदिक ग्रन्थानुक्रमणि

[१] ऋग्वेद

मंडल

(१) १२— ६—१०८—२
९—१ १०७—७
९०—६-८-९०-२५;
११८ --१
९१-१२— ६८ ३१
९१-१६ ६८ —९
७१-१८ ६८ —९
९३- ३ ५ —१
९३-३० ५ —१
९३- ५ ५ —१
९३- ९ ५ —१

(२) १-१६ ४६-५४
४३- ३- ४६-५४

(३) १२- ९- ५- २
६२-१०— ८- २
६२-१०— १३९-१०
६२-१०— ९१- ६

(४) ६२-१०— ९१—७
६२-१०— ९१—८

(५) २४- १— ६८-३१
२४- २— ६८-३१
५३- ९— ९८- २
५४- १— ४३-१३

(६) १५-१९— ७०- ९
६०- १— ५- २

(७) ५५- १— ४३-१३
९४- ९— ५- २

(८) ४३-१४— १०८- २
६०- ९— १०८- २
१०१-१५— ९२-१४

(९) ३२- ५— ४७-१६

(१०) २ ३— ५-१२
५७- ३-६ ८९- १
९७-१४— ३३- ८
९७-२०— ३३- ९
१४५-२०— ३३—७
१८६-१-३ ११७- ४
१८६-१ — ११७- ४

(२) सामवेद

(१) ३६—१०८—२
१८४—१ ७—४
४४८- ६७—३१

(२) १९४—१०८— २
४५७ - ६८—३१
८९४—१०८— २

(३) ११९°—११७— ४
११९२—११७— ४

यजुर्वेद

(३) तैत्तिरीय संहिता

(१) १—२—१
१—४—१
१—४—२
१—५—१
१—५—२
१-११—१
१-१३—२—३
१-१४—३—४
३—७—१—२
३—७—१
३-४५—३
४-४६—३

(२) ५—३—१
५—६—२
५—६—४
३—८—४४—३८
१-३६— ३— ६०
२-१ -१३७—१८
२—५—२४
६६—६
२ —१७
६— ६
५ —१२
१०८— २
६६ —१७—२०
६ —१७
१०८— २
७०— ६
६८— ३१

७०— ६—१

(३) ४—१०—१—४३—१३
५—११ ५ १०८— २

(४) १— १—२ ५— ७
२— १—२ ७२—१३
२— १—३ ७३—१३
२— ५—१ १०८— २
२— ६—३ ३३— ८
२— ६— ५ ३३— ६
२— ७—४ ६८— ६
२— ६—३ ११८— १
२—११—१ ५— २

(४) मैत्रायणि संहिता

(१) १— २—३— ६
१— ४—१—३६—५८—५
१— ६ ६६—६
१— ६ २-१;—१३७—१८
१—१२ —२ १७
५—१० —३ ५३६
६— २ —१ ३१
६— २ —२ ६१
६— ६ —३ ५६— ७
६—१०—१ ३—१
८—५१— ८८—१८
८— ५—२ ८८—२१
८६— १

(२) ३—१४—१ ५१

मैत्रायणि

(३) १—४ —३ ४४—१७
१—४ —४ ४५—११

१—१०—१ ५७
२—४ —४ ३५—८
२—५ —३ १३७-३७-४४
२—७ —१ ६८-९
१०८—२

(४) ३—१३—५ ६८—३१
४— ४—८ ६८—३१
७—१२—२ ११५— २
७—१३—१ ६८—२६

(५) १—१ — ३ ५—७
२—८ —६ ११८—१
४—५ —१ ७३—१४
५—६ —१ १०८— २
५—१०—५ ७३—१४
७—२ —४ ४२-१४-७४-१९
३—५ —४ १०८— २

(६) ३—३९-—६ १३
४-—१ -—३ १
४—२ —७० ९
४—३ -—५ १३;—९७-४
४—६ —७३—१४
४—१० —२ ६

(५) मैत्रयाणि संहिता

(१) ५—१, ५—१
५— ३, ६८—३१
५—१०—६८—३१
६—१—७०—६
६—२—७०—६
७—१—७२—१३

८—१—१०८—-२
१०—३—८८—१८,२१,८-९१
१०—१९—८८—१८, २१
१५—१४—७०—९

(२) ७—८—७२—१३
७—११—१०८—२
७—१४—६८—९
७—६६—९०, २५, १११—१
१२—२—११५—२
१३—७—१३७—२५
१३—८—६८—३१

(३) २—३—१०८— २
९—५—१०८—२
१२—१९—६८—२

(४) ९—२४—५६—६
१०—१— ५—१
१०—२—१०८—२
१०—३—१०८—२
१०—४—६८—३१
१२—४—६८—३१

(६) कथ्थक संहिता

१२—१४—६८—३१
३—४—६९—२२, १०८—२
५—४— ५—१३, २७—४
७—१८—६८—३१
८—१३— ६—२६
९—६—२१—८९- १
१५—१२—१०८—२
१६—८—७२—१३

१६-११-१०८—२
१६-१४-- ६८—६
१८-१३-११५—२
१६-११-१०८—२
२०-१४—७२-१३
२२-१२—७२-१३
२६—७-१०८—१
३४-१६-१०८—२
३६—३-११८—१

(७) कपिस्थल संहिता

२-११-१०८—२
५—१—६८-३१
७ - ६-१०८—२
८—६ - ८८-२१, ८६—१
२५—२-१०८—१
४-६८— ६
४१-१५-१०८—२
४८—१-१०८—२

(८) वाजसनेयी संहिता

(१) ३—२—३४
५-५६— ६
६—१—३६, ५८—५
७-४४—३८
७—३— ६
१० - २-- १, १३८—१८
१२—१— ३, ३२—३३
१५-६६ - ६
१५—२— ६
२७-६८ २
२६—६-- ०

(२) ८—२-१०७
५—२—१७
१८—६— ६
२७-७०— ६
२८-५६— ६
२६-८७—१६
३०-८८— १
३१-८८—१८
३१-८८—२१
३२-८३—३०, ८८—१५
३३-८६— ६

(३) ५-७०— ६
२५-६८—३१
२६-६८ -- ३१
४१-८६—१२
५८-५८, ८६—१

(४) १-४४— ३०

(५) २ - ६८— १
२—६६—१७
२—६६—२०
२—६६—२८
३-१०८— २
२६—८२--१७
४२—४०—३०

(६) १५-४८, २८-२८
१६—४४—४८
११— ८— ५—७
१२— ७—१०-७२-१३
६०-१०८— २
८८—८३— ८

९५—३२— ९
११२—६८— ९
११३—६८— ९
१३३—१७—११८—१२—६०-५
११५—४८—६८—३१
११८—३६, ११५— २
११९—४६—८९— १
१२०—२३— ६—१९
१२३— ८—६८— २
१२३—५७— ३—१०
१२५—४७—६८—३१, ४
१२७—४३—१०८— २
१३५—२०, ४५—१४,-८४-१
१३८—२५— ६—१३

(९) तैत्तिरीय ब्राह्मण

(१) १—११—१
४—१—८
४—१—९
४—८—७
५—८—८
६—२—५

(२) ७—१२— ३

(३) २— २— २
२— ४— १
३— ४, ६—२०
११७— ४
७४—१९
४—१३
८९— १
१०८— २
३— ९
१— ३— ६
५८— ४
३— ६— ७
३— ९— ७
५— ७— २
५— ७— ३
५—१२— १
६— ६— ४
७—१३— ४
२—१७
६— ९
५— १
५— २
६८— ९
६९— ६
६९— ९

(१०) गोपथ ब्राह्मण

(१) ४— १—२१
५— १—२३
९— ३—१९
३— ४— १—२१
४— १—२२
४— १—२३
३—५— ९
३— ६—१३७, ३८
७०— ९
६९—१७
६९—२०

६६-२२
११—५—४—३
५—४—५
११—६—३—११
६—४—२३
१—१—१
२—१८
५६—१२
५६—१३

६६-२५
८६-१३
१- ३-१ -६
८-१६

(२) १-१ -१ -२-६
१-२ ६१ - २०
१-६ ७३ - १४
१-१०-१ - २६

(११) ऐतरेय—ब्राह्मण

(२) ७ - ६६—६,—७,—१६, ७३—१४, ८—२७, ६०—११, ७—६, १११—१

(१२) ताण्ड्य—ब्राह्मण

(१) २—१, ३—१, ५—८, ६-८-६, १२—५—२३, ३३—६, २१—३, १०७—२

(१३) तैत्तिरीय आरण्यक

(४) ४१—३—६
४२—२
५६—६
११७—४
(६)—२ —१—८१—३०
४ —१—८१—३०
(६) ६—३ ६८— ६
(७) ३—३ ५६—१७

२—१५
२—१७
३—२०
४—१
४—४

(२) ६—१८
७—१६
१३७—३८
३—५
१३७—३७
३—६
१२५—२
२— १५
१२७—११
६१—२
६१—४
६५—१५

(१४) कात्यायन-गृह्य-सूत्र

(१) १—२१
१—२२
१—२३
२— ८
२—११
२—१२

२—६
६—९
५—१

(३) १—८
१—९
१—१३
१—१४
१—१६
१—३२
१४—७

(४) १—२८
१—२९
१—३०
२—१५
८७—१६
८८—१
८८—१८
८८—२१
८८—१५
८९—६
३—९
३९—२२
६९—१७
६९—२०
४४—३०

(५) ४—१७

(६) ७—६
२१—३—१३
३—२७
२५—१—११
४—३५

५—२९
८—१५
९—२१
१३—४
४५—३
१०—७२
८६—१४
५—१३—९७
१११—४—८
१३६—२—११
८३—२४
४४—१७

(१५) साङ्ख्यायन-गृह्य-सूत्र

(१) ६—६— ३—६
१३७—३८
६ —९ —३—७
१३७—३९

(२) ६ —१०—३—४
६—११—३—४०—२०
१२—११— —८९—११
१६—१ — ४३—१३
१७—७ — ४०—१३
१७—८ — ७०—१

(३) ४ —११४—१११—११
१०—४ —१११—११
१९—३ — ५—१३

(४) ४ —२ — ८७—१६
४ —५ — ८८—१
४ —११ — ८८—१८
४—१४ — ८८—२१

५– २ – ८८–१५
५– ८ – ८९– ६
७– ६ – ९१– ४

(५) ८– ६ – ५६– ६
१२– ८ – ५६– ६
१२–१४ – ७ – ९
१५– ९ – ८३–२४
१७–१० – ४१–१७

(६) २ – २ – ३ – ४
८ – ६ –१०८– २
८ – २ – १३– ८८–१८

(१६) आश्वलायन–गृह्यसूत्र

(१) ४ – ७ – ३ –७
१३७–३९

(२) ३ –१ – ६९–६
५ –१७ – ८९–१२
६ –२ – ८८–१
६ –९ – ८७–१६
६ –१४ – ८८–२४
७ –१ – ८८–१८
७ –२ – ८८–२१
७ –६ – ८८–१५
७ –८ – ८९–१
७ –१३ – ८९–६
९ –१० – ७४–१९, २०

(३) १३–१११– ११
५ –२ – १४, १०८–२

(१७) आपस्तम्भ–गृह्यसूत्र

(१) ७ –१८ – ८७–१६
८ –७ – ८८– १
१९–८ – २ – ६
६ –५–४ – ३ – ४

[१८] लाट्यायन–गृह्यसूत्र

(१) २ –१२ – ९२–१७
२ –१३ – ९१–१४
९ –११ — ३—१

(२) ४ —५ — ३ – ६
७—१३७
३८— ३९
१० –४ —८८— १८
१०—५ —८८— २१
१२—१७ —९०— २१

(३) २ —१० —८९— १
१ —१ —८९— १२
६९—२२
५ – ११— ७२—१३

(४) ९ —१६— ३—६
१३७—३८
११—१०— ९१—२
११—१२— ७२—४२
९१—४

(५) २ —११— ८९—१

(१९) वैतान सूत्र

(१) १— ३
१—१८
१—४६
१—१९
१—२०

२— २
२— ५
२— ८
३—१०
४— ७
४—२२
१— ४
१— ६
५९—१८
२—१८
३— ४
९०—२२
३— ५
१३७—३७
२— ६
१३७—११
९१— २
९१— ४
६— ९
६—१९
४२—१७
५—१०
७— ४
७— ६
११—११
११—२४
१६—१७
१७— ४
२०— ९
२४— ७
३८— १
३८— ४

८— ८
१—६६
३— ४
३— ९
८२—११
७—१९
६— १
१०८— २
८९— १
६—११
९७— ८
११७— ४
८८—२९

---

(२०) आश्वलायन गृह्य-सूत्र

(१) २— १
३—१०
१६— ५
१७— ३
१७— ९
१७—१७
७४— ३
६—३४
१०६— ७
५८— २
४४—३०
५४— १
२०— ७

---

(२) २२— २
२२—२१
२४—३१
२४—३२

(३) २– ४
४–१३
५६–१३
५६–१२
५६– ३
६२–१७
६२–१४
७४–१५
४५–१४
८४– १
६– ६

(४) ३– ३
३–१८
३–२६
३–२७
४– ८
४:–१३
८१–६५
८१–१६
८१–३१
८१–३०
४०– ५
५२– ७

(२१) साङ्ख्यायन गृह्यसूत्र

(१) ६– ३
२७– ७
२८–१२

(२) ४– ५
१४– ४
१४– ५

१५– ३
३–१०
१०६– ७
४४–३०
५६–१२
७४– ३
४३–१३
६२–१७

(३) ४—७
४—८
७—२
७—३
८—२
८—३
८—४
४३–१३
४३–२३
८६–१३
७४–१८
७४–१६
७४–२०
१३—३

(४) १८—२

(५) १—७
६—४
४५–१४
८४—१
५६–१२
४०–१३
८६—१

(२२) गोभिल गृह्यसूत्र

(१) ४—४—७४—३
४—६—७४—३
६–१४—७४—३–६
७–२३–१३७–३८
७–५— ८–३२–२–३३

(२) ६—६–३३—७
६–१४–१४–३०
१०–३४–५६–१२
१०–४१–५६ — ३

(३) ८–१६–७४–१८
१०–२८–४४–१७

(४) १—६— ३–११
३—२–४७–१६
३–१०–८७–८
३–११–८८—८
३–१२–८८–२१
३–२७–८६—६
४— ३–८७—१
४–२२–४५–१४–८४–१
५—७— ३—४
७–३२–४३–१३
१०–६ ६२–१४
१०–२२–२२–१७

(२३) पारस्कर गृह्यसूत्र

(१) ३–२७–६२–१४
३–३०–६२–१७
१२ ३–७४—३

(२) १–१०–४४–३०
१–२१–५४—१
३—२–५४–१२
४—२–५६—३
६—२—७४–३

(३) १—८–७४–१६
३— ६–४५–१४–८४–१
४—७–४३–१३
१५–२२–१३५–६

(२४) मित्र ब्राह्मण

(१) ६ – ५–४४–३०
(२) २ –८–४४–१७
३–१६–४५–१४–८४–१
६—१ – ४३—१२

[२५] निरुक्त यास्काचाय

५—१
६ — २३
६६—६
४६ - ३
१ —१७
१ —३५
४३ —१३
११७ ४

[२६] अथर्व परिशिष्ट

१६—१
११– ३
२२ — ३
३४—१
३४—२
३१४—४
१४०—११
—१४–१५

—१६
१०—१९—२०—२१
१३७—१७
९—७
८—२५
८—२४
५४—११
९४—१५
९५—४
९६—४
११४—३
३४— ७
३४— ८
३४—१०
३४—११
३४—१२
३४—१३
३४—१६
३४—१७
३४— १९
३४—२०
२६—१
४६—९
१३—१
८—२
२५—३६
१६ —८
१७ — ७
५० १३
१४ —२५
५९—१८
९ —७

३४—२१
३४—२२
३४—२४
३४—२५
३४—२६
३४—२७
३४—२९
४७—८
१८—२५
२६—३३
४१—८
८२—३१
९१—२
९ —४
१०— २४
१२—१०
१६—८
२५—३५
१०४— ३
१०५—१
३४ — ३०
३९—९
७३—१२
७४—४
२३—१७
७९—२८
१०५— १
१०५— २

२७. कौशिक गृह्यसूत्र
२८. कर्मप्रदीप १८-१-५
२९. कथ्यक गृह्यसूत्र
३०. गृह्य संग्रह १९६-३-४
३१ ऐतरेय उपनिषद १-४-३-५६-१७
३२. गोभिल गृह्यकल्प २-९-८२-१७
३३. नक्षत्र कल्प ३६-४६-५१
३४. मानव गृह्यसूत्र २-११-७३-३
३५ मानवधर्मशास्त्र ५-११२-१४१-४०
३६. याज्ञवल्क्य स्मृति १-२३००-
८२-१७
३७. वाशिष्ठ्य धर्मशास्त्र ३-११४-
८३-२
३८. विष्णुस्मृति १३-४०-१४१-२९
४०. शान्तिकल्प २१-२५-२३
२२-७६-२
४१. महार्णव कौस्तुभम्
४२. मन्त्रमहार्णव
४३. मन्त्र महोदधि
४४. दत्तात्रेय तन्त्र
४५. कपिल स्मृति
४६. वाधूल स्मृति
४७. विश्वामित्र स्मृति
४८. लोहित स्मृति
४९. नारायण स्मृति
५०. शाण्डिल्य स्मृति
५१. कण्ड स्मृति
५२. दाल्भ्य स्मृति
५३. आङ्गिरस स्मृति
५४. भारद्वाज स्मृति
५५. मनुस्मृति
५६. चरक संहिता
५७. वाग्भट्ट
५८. सुश्रुत संहित
५९. माधव निदान
६०. चक्रदत्त
६१. वनौषधि संग्रह
६२. वनस्पति संग्रह

तथा शौनकीय शाखा की वैदिक-सहितायैं — गृह्यसूत्र — कल्प — ब्राह्मण ग्रन्थ, स्मृतियां ॥

अथर्वाङ्गिरषेभ्योनमः



गणकर्म विधि

"अनुष्ठान्यऋचः" से आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक कामनाओं की सिद्धि के लिए मन्त्रोक्त देवता का जप उपस्थान, अनुष्ठान करें। ":अभयगण" से सभी प्रकार के भय को दूर करने तथा आत्मरक्षा अथवा (यजमानादि जो भी हो) उनकी रक्षा गण में दी हुई विधि से करें। "अपराजितगण" इस गण के सूक्तमन्त्रों से "आग्नेयास्त्र", "सम्मोहनास्त्र", "तमसाग्न", शत्रुस्तम्भन, उच्चाटन सम्मोहन कर्म करें, कवच धारण करायें, अस्त्र-शस्त्रों और कवचों को अभिमन्त्रित करें, वाहनों, यानों, नौकाओं को अभिमन्त्रित करें, वीरों पर शक्तिसम्पात कर बल बढ़ायें, विपक्षी दल के ऊपर क्रूर दृष्टिपात करे, तो शत्रु अपना कर्तव्य भूलकर भ्रम में (अन्धकार व्यामोह में) पड़कर भाग खड़े होते हैं। अपने वीरों पर उनके अस्त्र-शस्त्रों का असर नहीं होता, इन्हीं से वीरों की तथा अपने नायक की जय-पराजय, जीवन-मृत्यु का 'आथर्वणिक विज्ञानविधि से ज्ञान करें और अपाय का उपाय करें।"

आसनादि जप :—आध्यात्मिक शक्ति स्रोत की वृद्धि अभ्युदय के लिए नित्य निरन्तर, नियमित, जप, स्वाध्यात, उपस्थान करे।

"अप्रजनन" इससे परिवार अर्थात् वन्ध्याकरण कर्म करें। "आयुष्यगण" से किसी भी प्रकार की १०१ मृत्युओं, कच्चा मांस खाने वाली प्रेताग्नि के तथा(नैर्ऋति) दुर्गति के पाशों एवं आनुवंशिक व्याधिग्रस्त जो मरणासन्न हो, मर भी चुकी हो, प्रबलतम विविध आवृत्तियों के साथ गणविधि से व्याधि निराकरण करें और स्थायी नीरोगता, दीर्घायु, अमितायु, पूर्णस्वस्थता के लिए यज्ञ, उपस्थानादि करें। इसी से रोगी के रोगो को शिर से नीचे की ओर उतारने को झाड़ा दें, जैसी व्याधि हो, उसी विधि से कर्म करे। "अपनोदनानि" सभी प्रकार के पाप, शाप आदि में मन्त्रों से स्नान करायें।

"अंहोलिंगगण" अहं नाम पाप का है, कैसा भी क्यों न हो। उनके सभी अपने उसके मातृकुल, पितृकुल, स्त्री, पुत्र, पौत्रादि या अन्य कारणों से उस पर जन्मान्तरों के भी क्यों न हों सभी से मुक्त कर स्थायी पवित्रता की सार्वभौमशुद्धि करे। "लघुशान्तिगण" अंहोलिंगगण में कुछ अन्य कल्याणकारी सूक्तों को साथ में मिलाकर उनकी विहित विधि से शान्ति करें।

वृहच्छान्तिगण :—इस गण में लघुशान्तिगणों के साथ अंहोलिंगगण, "आयुष्यगण मन्त्रों" के तथा "पिप्लादिगण" को मिलाकर वृहच्छान्तिगण होता है। यह सभी वेदों, धर्मग्रन्थों की विहित शान्ति विधियों में सर्वोपरि वेदसम्मत विधि है। इसे आधुनिक सर्वोच्च न्यायपालिका, विधायिका की सर्वोच्च रक्षा जहाँ कोई चारा

शेष न रह जावे, उस अवस्था में "रिटपिटीशन" ही "पिटीशन" का अनुकूल समाधान विहित है। भले ही दैविक, भौतिक, आध्यात्मिक हो या अभिचार, शाप, कृत्या, वास्तु अद्भुतदर्शनजनित कैसी भी संकटापन्न व्याधि हो, उसके निराकरण का प्राविधान है।

अर्थोत्थापन (अलक्ष्मीनाशनगण) :—इस गण से सोये हुए भाग्य जगाना, पठन-पाठन, अध्यापनादि कार्य से, विविध व्यवसायों, व्यापारों, वाणिज्य, कृषि, उद्योग आदि में हानि, अनायास धन सम्पत्ति नाश, कलह आदि से धन नाश होकर, चहुँओर से हानि ही हानि का होना, आय से अधिक व्यय का होना, ऋण भार बढ़ते जाना, अभियोग, लांच्छनों का अकारण होना, चोरों, बधिकों द्वारा धनापहरण का होना, भाग्य का "प्रेतस्वरूप" हो जाना, पूर्वजों का या स्वयं का धन गाढ़कर भूल जाना, धन पर सर्परूप "प्रेत" का होना, इन सबको दूर करने तथा वासना देहों में पड़े पितरों द्वारा धन को लुप्त कर देना उस धन तथा देहों को वासना देहों से मुक्त कराकर आर्थिक विघ्नों की जड़ का निराकरण तथा भाग्योदय की विधि है। इसी गण से अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदि का निराकरण तथा शान्ति होती है।

कृषिसम्बर्द्धन :—कृषि और पशुओं के रोग, उनकी वंशवृद्धि, तनुवृद्धि, फलवृद्धि की बाधायें, टिड्डी, चैंपा, रतुआ, सुराई, गेरुई, कट्टा आदि सूखे फलों का असमय में कच्चे ही का झड़ना, फल न लगना, ओला, तुषार आदि से हानि, पशु हानि, पशुक्षय आदि का निराकरण और कृषि, पशुओं की सम्पुष्टि तथा शान्ति विधि है।

कल्पजाऋच :—जो मन्त्र ब्राह्मीवाणी न होकर ऋषियों, अन्य देवों, तपोधनों, श्रुतिः स्मृतिः धर्मशास्त्रों के होते हैं वे कल्पजा ऋचायें हैं, जहाँ वैदिक मन्त्र का अभाव हो या विधिवत पारस्परिक मन्त्र न हो, वहाँ कल्पजा ऋचायें भी उतनी उन कर्मों में मान्य होती हैं। महाव्याहृतियाँ कल्पजा ऋचायें हैं।

कामसूक्त :— मन, इन्द्रियों, बुद्धि, इच्छा, संकल्प, प्राण, वीर्य और सांसारिक कामनाओं भोगों द्वारा मनुष्य के ब्राह्म बल, तेज, ओज प्राण वीर्य के क्षय के कारणों का निराकरण और शान्ति पुष्टि की विधि है।

कुष्ठलिंगा :—शरीर चर्म, रक्त, रस, मज्जा, वसा, अस्ति के सभी प्रकार रक्त दोषों, सभी प्रकार के व्रणों, स्राव, दुष्टगण्ड, अदृष्ट, उल्टे फोड़ों, गञ्ज आदि के मूलकारणों के निराकरण की औषधियाँ और भैषज्य कर्म विधियाँ हैं।

गोष्ठकर्मस्वस्त्ययन—पशुशाला में सभी प्रकार के पशुओं के रोगों, वंशवृद्धि अथवा विपरीत प्रजनन दोष वन्ध्यापनादि को दूर कर उनकी वृद्धि, पुष्टि और स्वस्थता की विधियों में प्रयुक्त है।

गृहिणी ऋचायें—ये स्थावर, जंगम विषों के विषैले कीटों, सर्पों, अन्य विषैले जीव जन्तुओं के विषों के निराकरण की औषधि और भैषज्य विधि है।

चातनगण—सभी प्रकार के उन्मादों, राक्षस, यातुधान, भूत-प्रेतादि जनित व्याधियों की सबल निराकरण विधि है। यही राक्षघ्नेष्टि है।

कृत्यागण—तन्त्र-तन्त्रों द्वारा मारण, उच्चाटन, स्तम्भन, सम्मोहन, विद्वेषण आदि को कर्त्ता के पास वापिस करने और व्याधि ग्रहीत की निरोगता, स्वस्थता तथा पुष्टि की विधि है।

वास्तुगण—पाताल सम्बन्धी भूमि के दोषों, खनिजों, पाताललोकों की दुष्टप्रकृतिक आत्माओं के द्वारा होने वाले भूमि सम्बन्धी विघ्नों के कारणों की शान्ति विधि।

यक्ष्मनाशनगण—दीर्घकालीन, असाध्य, रक्तशोषक, रक्तक्षीणकर्त्ता बहने वाले, तपाने वाले, सुखाने वाले, बल, ओज, शक्ति, वीर्य, धन, आदि के शोषण करने वाले शरीरों घरों, कुटुम्बों के रोगों के कारणों के निराकरण की विधियाँ, औषधियाँ और भैषज्य हैं।

रौद्रगण—आङ्गिरस, मारण, उच्चाटन, सम्मोहन विधियाँ और उनसे उत्पन्न अचिन्त्य, अकल्प्य विविध बहुभाँति के विघ्नों और उनके कारणों के निराकरण की विधि है।

कापिजंलस्वस्त्ययान—काक, उलूक, गृद्ध, वाज, आदि वन्य जीवों के ग्राम, घरों, नगरों के प्रवेश से होने वाले उत्पातों की शान्ति विधि है।

सरम्भाणि सूक्तानि—समस्त कार्यों के प्रारम्भ में प्रयोजनीय मन्त्र है।

शर्म-वर्मगण—कल्याण और रक्षा करने वाली विधि है।

सम्प्रोक्षण-आचमनी—प्रत्येक कार्य प्रारम्भ और समाप्ति में आचमन और शुद्धि के मन्त्र हैं।

शान्तिजल—अनेकों दिव्यस्रोतों, सागर, तीर्थों के जलों को अभिमन्त्रण की विधि है।

स्वस्त्ययनगण—कार्य प्रारम्भ और पूर्णता में शान्ति पाठ के मन्त्र हैं। यह गणों के विनियोगों का सूक्ष्म दिग्दर्शन है, विशेष उनके प्रयोगों के साथ विहित है पढ़ें, समझें, करें।

दुस्वप्ननाशनगण—खोटे, हानिकारक, भयावह, मृत्यु या दुर्गति पाशों के सूचक, स्वप्नों की शान्ति और निराकरण विधि है।

पवित्रगण—पवित्रता, ओज ब्रह्म बल प्राप्ति की विधि है।



❀ अथर्व वेद विधान (भाषा) ❀

काण्ड १

अथर्ववेद ऐहिक, आमुस्मिक समस्त पुरुषार्थ परिज्ञान के उपायों का अभूत कारण है। इसके ९ भेद हैं। १. पैप्पलाद, २. तौदा, ३. मौदा, ४. शौनकीय ५. जाजला, ६. जलदा, ७. ब्रह्मवदा, ८. देवदर्श, तथा ९. भिषसवेद। शौनकीय शाखाओं के ५ भेद हैं। १. कौशिक, २. वैतान, ३. नक्षत्र कल्प, ४. आङ्गिर कल्पः, ५. शान्ति कल्प।

शान्तिक-पौष्टिकादि कर्मों में संहिता के मंत्रों से होम, जपादि का विनियोग होने से संहिता विधान का नाम कौशिक सूत्र है। कौशिक सूत्र में क्रमशः स्थालीपाक विधान से दर्शपूर्णमास विधि आदि का सविस्तर विधान है। ये ३ प्रकार के कहे गये हैं। १. नित्य, २. नैमित्तिक, ३. काम्य। उनमें (i) जातकर्मादि नित्य, (ii) दुर्दिनअशनि निवारण, अश्वादिशान्ति तथा अद्भुत कर्म ये नैमित्तिक, तथा (iii) मेधाजनन ग्रामसांपदादीनि काम्यकर्म हैं। उनमें नित्य एवं नैमित्तिक आवश्यक अनुष्ठित होने से न करने में पाप भी हैं। काम्य की इच्छानुसार करना कहा है। इनको अमावस्या; पौर्णमासी, पुण्य नक्षत्र, तिथि ये तीन काल कहे हैं। अद्भुत कर्म में काल की प्रतीक्षा नहीं करें। अभिचारिक कर्म ग्राम से दक्षिण दिशा, कृष्ण पक्ष, कृत्तिका नक्षत्र में विशेप फलदायी है। पाक यज्ञ से समस्त आथर्व कर्म समझें। ये दो प्रकार के हैं। आज्यतन्त्र व पाकतन्त्र। जिसमें प्रधान हवि आज्य हो वह आज्यतन्त्र, जिसमें चरुपुरोडाशादि हों वह पाक तन्त्र है।

आज्य तन्त्र विधि

प्रथम "अव्यसश्च" (१९,६५) कर्ता जपे, वर्हिर्लवनम, वेदि, उत्तरवेदिः, अग्नि प्रणयन; अग्नि स्थापन, व्रत ग्रहण, पवित्रीकरण, पवित्री से इध्म प्रोक्षण, इध्मोपसमाधन, वर्हिः प्रोक्षण, ब्रह्मासन, ब्रह्मा स्थापन, स्तरण, स्तीर्ण प्रोक्षण, आत्मासन, उदपात्र स्थापन, आज्य संस्कार, स्रुवग्रहण, ग्रहग्रहण, पुरस्ताद्धोम आज्यभाग्य "सविताप्रसवानाम्" (५।२४) में अभिहित, आभ्यातान से आज्य होमः यहां तक आज्य तन्त्र है। तदनन्तर प्रधान होम (यथा संकल्प)। तदनन्तर उत्तर तन्त्र।

उत्तर तन्त्र

अभ्यातान, पार्वणहोम, समृद्धिहोम, सेनाति होम, स्विष्टकृत होम, सर्वप्रायश्चित्त होम, स्कन्न होम "पुनर्मैत्विन्द्रियम" (७ ६६) इससे होम स्कन्नहोम, संस्थिति होम, चतुर्गृहीत होम, बर्हि होम संस्राव होम विष्णु क्रम व्रत विसर्जन, दक्षिणादान, ब्रह्मोत्थापन आदि। पाक तन्त्र में अभ्यातान का अभाव ही विशेष है। अन्य सब समान है।

शौनकीय शाखा के पूर्वोक्त कर्मों के विनियोगों का विधान

क्रमश.—प्रथम काण्ड के ६ अनुवाक है। प्रथम अनुवाक में ६ सूक्त हैं इनमें "येत्रिषप्ता" इस प्रथम सूक्त का विनियोग मेधाजनन कर्म में लिखा है। गूलर टांक, कर्कन्धु की समिधायें: तिल, जौ, चावल का होम, दूध चावल के पुरोडाश को अभिमन्त्रित कर सेवन, उपाध्याय को भिक्षादानादि सभी को अभिमन्त्रित कर कार्य सम्पादन करें।

इसी प्रथम (१:१) सूक्त से अभिमन्त्रित करे। कर्कन्धु (बड़ीबेर) से हाथ से होम करें। न दर्वि होमे न हस्त होमे न पूर्ण होमे तन्त्रक्रियेत" (कौ० १४।२) क्षीरोदन पुरोडाशरस भक्षण करें (रस–दधि–मधु–घृत) कौ० (१।६।) अभिमन्त्रण में विशेषकर अवलोकन करे।

मन्त्रमुच्चारयन्नेव मन्त्रार्थत्वेनसंस्मरेत् । शेषिणंतन्मनाभूत्वास्यादेतद्नुमन्त्रणम्
एतदेवाभिमन्त्रस्यलक्षणं चेक्षणाधिकम् ॥

इसी प्रकार ब्रह्मचारि संपत्कर्म में भी इसी सूक्त का विनियोग करें, कौ० (२।२)। वे कर्म गूलर ढ़ाक, बेर की समिधाओं में ब्रह्मचारी के गृह की उपचरण तृण से करें। वन की पिपीलिका के छिद्रों में मेद मधु श्यामाक वे.षीक तूलाज्य, ये पांच पृथक, होमकर, आज्य स्थाली में पिपीलिका वपन, ओप्य, गृह को अभ्यातानान्त, इसी सूक्त से स्थाली पाक विधि से हवन करें। इसी (१।१) से अन्न को अभिमन्त्रित कर ब्रह्मचारी को भोजन करा तिलयुक्त धान्य दान दें। इन कर्मों के करने में आचार्य की शिष्य सम्पत्ति होती है। कौ० (२।२)।

ग्राम सम्पत्काम और उसके साधने में गूलर, ढाक, बेर, तक्षणाधान सभोपस्तरण तृणाधान, अभिमन्त्रित अन्नादि दानकर्म में इस सूक्त का विनियोग कहा है। (कौ० २।२)

सर्वसंपत्कर्म में भी इसी सूक्त (१।१) का विनियोग का विधान है, पूर्वोक्त समिधायें व शाकल्य व पुरोडाश भक्षणं येमेधाजनन में वर्णित हैं। त्रिकाल होम,

उपस्थान दांये कर मध्य में दधि मधु घृत, जलमिश्रितभात अभिमन्त्रित कर, प्राशन, पृश्निपर्णीमन्थ प्राशन ये सभी इसी १।१ से करे। (कौ० २।२)।

इसी सूक्त १।१ से वर्चसकामी उपर्युक्त समिधा होम पुरोडाश करे होम वर्चस्कामिनी कन्या का दायें छाती का अभिमन्त्रण–क्रीतवराहोम, अग्नि उपस्थापन आदि इसी से करे। तेज की कामना में भी इसी का विनियोग करें। कौ० (२।३)।

संग्राम में विजयेच्छु शत्रु हस्ति त्रासन कर्म करे। संपात से युक्त रथ के चक्र को शत्रु के हाथी के अभिमुख घुमाये। (कौ० १।७)। अपने हाथी घोड़े सवारियों को शत्रु के गजादि के अभिमुख प्रेरित करने भेरी वादन बाण (प्रक्षेपास्त्र) अभिमन्त्रण कर बजाये। शर्करा अभिमन्त्रित कर रक्षार्थ चारों ओर छिड़क दें, दूत को भेजना, कवच धारण में शर्करा व बालू अभिमन्त्रित कर छिड़कें।

पांच नैऋति कर्म, शान्तिक, पौष्टिकादिमें अङ्गरूप से या पापक्षयार्थ स्वतन्त्र रूपेण विनियोग करे। कौ० ३।१॥

पौष्टिक में विशेष कर चित्रा कर्म में–सारूप बछड़े की गौ के दुग्ध व भात प्राशन, पलाशादि समिधादान में इसी का विनियोग करें (१।१)

तेज वृद्धि मेंपौष्टिक कर्म,

पौष्टिक मन्त्रों का जप उपधान

(आज्य, समिधा, पुरोडाश, पयः ओदन, खीर, पुआ खिचड़ी शाकल्य करम्भ, पूड़ी, ये १३) होम, उपस्थान में इसी १।१ का विनियोग करे। व्याधि दो प्रकार की हैं आहार निमित्त, व अन्य जन्म पाप निमित्त। प्रथम आहार जन्य की चिकित्सा वैद्यशास्त्रोक्त करें। पाप निमित्त की आथर्वण होम, बन्धन, पायनादि में उक्त या अनुक्त सभी में अहोलिंग गण (कौ० ४।६) अथर्व (४ २३-१ आदि पापनिवृत्ति कर मन्त्रों से भैषज्य कर्म विनियोग करें। समस्त व्याधियों में इसी सूक्त से आज्य होम कर प्रणीता व घट के जल से इसी सूक्त से व्याधित शरीर को सम्मार्जन करें। (कौ० ४।१) भैषज्य कर्म में इन्हीं सूक्तों से, होम, उपस्थान स्नान, पुरोडाश भक्षण, बलिदान, छाया दान, गोदान, ब्राह्मणभोजनः दक्षिणा दान आदि करें। इसी सूक्त से पुत्र कामिनी वन्ध्या मृत्वत्सादिका (कौ० ४।६) में वर्णित विधि से भैषज्य का विधान है यथा शान्ति सूक्त अम्बादिगण से जल अभिमन्त्रित करें अहोलिङ्ग से अवसेचन होम स्नान उपस्थानादि करें। (सू० २।४) अर्जुन या ढाक के पत्तों २।५ से सैमर की पटली, २।१४ मे गूलर की समिधा २।३ से पुरोडाश, २।१ से पूर्वद्वार, २।१० से पश्चिम द्वार तथा २।१० से ही हवि, २।७ से चरु पुनः २।३६ १ से पुरोडाश, २।३६–७ से गुग्गुल २।१२ से पुरोडाश पति को दे। वह २।१३ से स्त्री को

अभिमन्त्रित कर दें। ६।१० से पाशमोचन होम करें। विशेष वन्ध्याजनन में देख लें।

उपाकर्म में माणवक-वाचन में भी (१।१) का विनियोग कौ० (४।३) में है "राजा के पुष्पाभिषेक में" (१।१) इसी ऋचा से पयोहोम करे। परिशिष्ट में (५।३) वचन है।

सप्तरात्रं घृताशी वातनो होम प्रयोजयेत्।
गव्येनपयसा कुर्यात्सौवर्णेन स्रुवेण तु॥
वेदानामादिमं मन्त्रं महाव्याहृतिपूर्वकः॥ इति

सारांश—अथर्व मंत्र सिद्ध मंत्र होने से अपरिमित शक्ति प्रद हैं। इसी से प्रथम (१।१) को सूक्त को समस्त अभिलाषित कर्म में सूत्रकार ने विनियोग करने निर्देश किया है। विशेष मेधाजननादि कर्म को टिप्पणी में देखें।

ब्रह्मा सर्वप्रथम—ॐ नमो ब्रह्मवेदाय, ॐ नमो अर्थववेदाय. ॐ भूर्भुवः स्वर्जनदोउम् जप करें। ब्रह्मावरण के समय—ॐ भूपते भुवनपते भुवांपते महतोभूतस्यपते ब्रह्माणंत्वा वृणीमहे। तै० ब्रा० ३।७।६।१ वै० श्रौ० सू० १७। वरण होने के उपरान्त ब्रह्मा को जपना चाहिये "अहं भुवनपतिः, अहंभुवापतिः अहंमहतो भूतस्यपति, तद्दहं मनसे प्रब्रवीमिमनोवाचे वाग् गायत्र्यैगायत्र्युष्णिग् उष्णिगनुष्टुभे ईनुष्टुक् वृहत्यै वृहतीपङ्क्तयेपङ्क्तिस्त्रिष्टुभेत्रिष्टुक् जगत्यै जगती प्रजापतये प्रजपति विश्वेभ्यो देवेभ्यः ॐ भूर्भुवः स्वर्जनदोउम् (तै० ब्रा ३।६।७) वै० श्रौ० सू० १८। अथर्व (१६।१३) इन्द्रस्य बाहूये ११ ऋचायें जपें।

जब अध्वर्यु ब्रह्मा जी से यज्ञारम्भ की प्रार्थना करें तब ब्रह्मा कहैं "ॐ भूर्भुवःस्वर्जन दोउम्॥ और जप उपांशु करें। ॐ ब्रह्मन्नपः प्रणेष्यामि, तव प्रणय (आदेश) यज्ञं देवता वर्धयत्वम्। नाकस्य पृष्ठे स्वर्गेलोके यजमानोऽणु सप्त ऋषीणांसुकृता यत्र लोकस्त्वेमंयज्ञं यजमानं चेहि, ॐ भूर्भुवःस्वर्जनदोउम्। प्रणय वै० श्रौ० सू० कं० २ सू० १ (कौ० सू० १।१०)।

उत्तर वेदी को बुहार लीपकर, स्रुव से ३ रेखा दक्षिण से उत्तर खीचे। तथा उसकी मिट्टी अनामिका अंगुष्ठ से उल्लेखन क्रम से उठा, प्रणीता प्रोक्षणी के बीच डालें और वेदी को अ० वे (१४।१-४२) से अभिमन्त्रित करे। इसी से पति तथा पत्नी का ग्रन्थि बन्धन करें (अ० ७।८७ [८२], ६) से आज्य निरूपण, (७।१०४ [६६) से वेदी का परिस्तरण, (१२।१-२७) से हवनीय प्रदेश की परिधियों को अनुमन्त्रित करें। और (अ० १६।२-६) से प्रस्तर रखें। अभिचार

व शान्त्यादिकार्यों में (अ० २।१६–२३) प्रथम होम (६।७५–७७) से संस्थित होम करें। (अ० ८।२३) से समिधाओं को अभिमन्त्रित करें।

ॐ अग्ने वाजजित् वाजंत्वासरिष्यन्तं वाजजितं समार्ज्मि। तीन बार अग्नि प्रणीता स्रुवादि का सम्मार्जन करें। (वै० श्रौ० कं० २ सू० १२) और अर्वाञ्च अग्नि का आह्वान करें। ॐ वाजंत्वाऽग्ने जेष्यन्तंसनिष्यन्तं संमार्ज्मि वाजं जयः। ॐ अर्वाञ्चं प्रतीचीनं त्रिरुपवाजति (वै० श्रौ० कं० २ सू० १३। (अ० ६।५–२) इन्द्रेमम से आधार होम।

यजमान ऋत्विजों को अभिमन्त्रित कर, दक्षिणा वस्त्र पात्र गौ अलंकारादि। दे ॐ प्रजापतेर्भागो ऽसूर्जस्वान् पदस्वान् अक्षितो ऽस्यक्षित्यैत्वामानेक्षेश्चाः अमुत्रा ऽमुष्मिंल्लोक इह च, प्राणापानौ मे पाहि, समान, व्यानौमेपाहि उदान रूपे में पाहि। ऊर्ग असि उर्ज में धेहि: कुर्वतो मेमाक्षेष्टा ददतो मे मोपदसः प्रजापति रहंत्वया समक्षम् ऋध्यासम् (गौत्र) २।१) दक्षिणादि प्रतिगृहीता दक्षिणा नेते समय (अ० ३।२६-७-८ कइदं कस्मा अदात। काम स्तदग्ने (अ० १६।५२) यदन्नम् (अ० ६।७१) पुनर्मैत्वि न्द्रियम् (अ० ७।६६'६७) १ का जप करें।

इस अभिचार तथा शान्ति कर्म में उपर्युक्त वन की या वल्मीक वामी की मिट्टी की वेदी का प्रोक्षणादि करके दक्षिणाग्नि को स्थापित कर आचार्य पूजन करें।

पुरीष्योऽसिविश्वभराः। अथर्वोत्वाप्रथमोनिरमन्थदग्ने ॥१॥

त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वानिरमन्थत। मूर्ध्नोविश्वस्त वाघतः ॥२॥

तमुत्वा दध्यङ् ऋषिः पुत्रईधे अथर्वणः। वृत्रहणपुरन्दरम् ॥३॥

त्वमुत्वा पाथ्यो वृषा समीधें दस्युदन्तमम्। धनंजयेरणेरणे ॥४॥

वै० श्रौ० कं १ (५) सू १३ ॥ इससे ब्रह्मा अनुमन्त्रित करें। प्रार्थना करें।

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्राद् उतवापुरीषात्।
श्येनस्यपक्षा हरिणस्यबाहूव, उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥१॥

यदअक्रन्दः सलिले जातो अर्वन्सहस्वान् वाजिन वलवान्वलेन ॥
तं त्वा ऽऽदधुर्ब्रह्मणे भागम् अग्ने अथर्वाणः सामवेदो यजूंषि ॥२॥

ऋग्भिःपूतं प्रजापतिरथर्वणेऽश्वप्रथमंनिनाय।
तस्य पदे प्रथम ज्योतिरादधे समावहातिसुकृतां यत्र लोकः ॥३॥

अभितिष्ठप्रतन्यतो मह्यं प्रजाम् आयुश्च वाजिन् धेहि।
त्वयावधेयं द्विषतः सपत्नान् स्वर्गं मे लोकं यजमानाय धेहि ॥

अभितिष्ठ प्रतन्यतः सहाचपृतनायतः । यथाहम् अभिभूःसर्वाणि तानि धूर्वतो जनान् । ५।। ये पांच ऋचायें ब्रह्मा जपें ।

हुतशेष पुरीडाश को अभिमन्त्रित कर प्रथम होत्रादि कर परस्पर साथ ही प्राणों का आवाहन करें और भक्षण करें यजमान पुनः अप्रत्यक्ष में यजमान पत्नी । (वै श्रौ० अ० २, कं० ४ (८) सू० १५—१६)

ॐ यन्मे रेत प्रसिच्यते यद्वा मे अपगच्छति ।
यद्वा जायते पुनस्तेन मा शिवमाविश ।
तेन मा वाजिनं कृणु तेन सुप्रजसं कृणु ।
तस्य ते वाजि पीतस्योपद्भगस योपहूतो भक्षयामि ।।
वन्ध्या को ऋतुमती होने के उपरान्त तथा पुंसवन के समय खिलायें ।

ऋतुमती जायां सारूपवत्सं श्रपयित्वाऽभिधार्योद्वास्योद्धृत्याऽभि हिंकृत्यगर्भ वेद नपुंसवनैः संपातवन्तंपराम् एव प्राशयेत् । (वै० श्रौ० सू० अ० ६ कं० २ (१२) सूत्र १४)

दीक्षितस्य सारूपवत्सायाः गोः पयसि स्थालीपाकं गृह्याग्नौ श्रपयित्वाऽभि- धार्योदगुद्वास्य पात्रान्तरे उद्धृत्य अभिमुखयेनौदनस्योपरि हिंकारं कृत्वा येन वहेत् । (अ० ३।२३—५, २५ कौ० सू० ३५।?) इति (प्रार्थनादीन्) शमीमश्वत्थः । (अ० ६।११–१ कौ० सू० ३५।८) इत्येतैर्गर्भवेदन पुंसवननै संपातवन्तंकृत्वा जायाम् ऋतुमतीं परां स्नातां प्राशयेत् । एवशब्दान्ना ऽस्नाताम् । एवं दीक्षिता जाया पुत्रं लभतेति ब्राह्मणम् । (तु० गो० ब्रा० १।३।२३) ।।१४

(पुत्रेष्टि यज्ञ के उपरान्त बन्ध्या) तथा अन्य निर्दोष ऋतुस्नाता स्त्री को समान रूप के बछड़े की युवा गौ के दुग्ध में व्रीहि यव सत्तू डाले । विलोये दूसरे पात्र में डालें, अभिमन्त्रिम ५।२५ व ३।३३ से अभिमन्त्रित कर खिलाये तथा लूम ( ) व ढाक के रस या गोंद में घिसकर ५।२५ से अभिमन्त्रित कर प्रजनन इन्द्री (शिञ्ज) से लगाये तब मैथुन करें (कौ० ४।११) पुंसवनकाल में (३।२३) से वाण को अभिमन्त्रि कर स्त्री के शिर पर रक्खे इसी सूक्त से आज्य होम कर शर मणि को अभिमन्त्रित कर बांधे ।

इसी से ढाक के रस में व विदारी कन्द को पीसकर अभिमन्त्रित कर दायें हाथ के अंगूठे से स्त्री के दायें नथने में नस्य (हुलास) दें । ये दोनों गर्भाधान व पुंसवन परुष वाची नक्षत्रों में ही करें ।

इन्हीं तीनों (अ० ३।२३ व ५।२५) व ४।११–१) से उपर्युक्त के ऊपर हिंकार कर इसी में शमी वृक्ष रूपी पीपल की उत्तर पूर्व की शाखाओं की लाल कोपलें व दाड़ी मिला खिजायें।

यदि दुस्वप्न आते हों तो परोऽपेहि (अ० ६।४५) यो न जीवः (अ० ६।३६-१) सूक्तों से स्वप्नान्तमुख का मार्जन करे (वै० श्रौ० अ० ३ कं० २ (१२) सू ६ व कौ० सू० ४६।९ के अनुसार करे।

यदि कैसा भी विष दोष हो तो (अ० ६।१२२-१) व० श्रौ० सू० ७ कौ० सू० ४६।१ "पराचीनं दिवो नु माम्" विष बिन्दुओं को छाड़े।

लालस्रवण (लार टपकने पर) अपने को अनुमन्त्रित करे।

"यद् अन्नाऽपि मधोरहं निरष्ठविषम् अस्मृतम्।
अग्निश्च तत्साविता च पुनर्मे जठरे भत्ताम्॥

वीर्यपात होता हो तों अपने को अभिमन्त्रित करे। (मधुमेह)

तद्इहोपह्वयाम हे तन्म आप्यायतांपुनः। वै० श्रौ० अ० ३ कं० २ (१२) सू० ६। (गो० ब्रा० १।२-७) का० श्रौ० २५।११-२२) आप० श्रौ० १ ।१३।११

निन्दनीय की प्रशंसा करने या अनिन्दनीय के अप्रशंसा में वचन को अनुमन्त्रित करे। (परोऽपेहि (अ० ५।७-७) ॥१०

चौरादि दुष्टजनों के सताये जाने में अपने को अनुमन्त्रित करे (अ० १२। २-२६) ॥११

यदि बिना मेघ ही वर्षा हो तो अपने को अभिमन्त्रित (अ० ४।२७.४) ॥१२ से करे।

यदि क्रोध उत्पन्न होता हो तो अ० ६।४२-१) से अपने को अभिमन्त्रित करे।

अथर्व कां० १ सू० २ "विद्याशरस्य" इस सूक्त का उपाकर्म में जपार्थ विनियोग करे (कौ० सू० १४ ३) इस भूक्त से उसी उपाकर्म में आज्य होम करे। यह अपराजितगण में होने से अभय, अपराजितगण के साथ होम में भी विनियोग करें। इसी से सग्राम जय कर्म में होम आज्य या सक्तु होम, समिदाधान, शरसमिक्षधान में शर व दूध डालकर अभिमन्त्रित कर धनुष प्रदान करे। इन कर्मों के संग्राम में करने से शत्रु देखते ही भाग खड़े होते हैं। (अ० १।२) मानोविदन (१।१९) अदार सृत (१।२०) स्वस्तिदाः अवमन्युः (६।६५) निर्हस्तः (६६।६) परिवर्त्मानि (६.६७) अभिभू० (६।९७) इन्द्रो जयति (६।९८) अभित्वेन्द्र (६।९९) ये संग्रामिकगण हैं। कौ० सू० २।५ के अनुसार आज्य व सक्तुओं का होम करे ये ही अपराजितगण

हैं। इसी से प्रत्यञ्चासहित धनुष व बाण, बांधने का पाश, कवच आदि वैसे ही दूर्वातृण बाण प्रहार निवारणार्थ बांधे हैं।

ज्वरातिसार, अतिमूत्र, नाड़ीव्रणादि रोगों केशमनार्थ इसी सूक्त से मुञ्ज केसर पत्ते की रस्सी बांधे, जंगल की पावय मृद या बामी की मिट्टी गंगाजल में अभिमन्त्रित कर पिलादे। घी का लेप करे चर्म ये गुदा व शिश्न के व्रणों के मुखों को तपाये (कौ० ४।१) (अ० १।२) विद्मशरस्य, (२।३ अदोअदः) से रस्सी बांधे और धमन करे विजयकामो अपराजित नाम महाशान्ति कर्म में भी विनियोग होता है (नक्षत्र कल्प १६) पुष्याभिषेक में भी ग्राह्य है (प० ५।४) शर्मवर्मगणश्चै। तथा स्यात् अपराजित: अग्रुष्यश्चाभयश्चैव तथा स्वंययनोगण इन पांच गणों से होम करे।

विद्माशरस्य—इस ५ वीं ऋचा से प्रारम्भ होने वाले सूक्त (१।३) सूक्त से मूत्र व मल निरोध "प्रमेहणसाधन में हरीतकी व कपूर बांधे। मूषिका मत्तिका पृतीक तृण दधिमथित जरत्प्रमन्द दारु तक्षण शकल, आदि पिलाये। हाथी, घोड़े, जहाज आदि की सवारी कराये। शर (तकुये) से मूत्र नाल को फाड़े, लोह की नली मूत्र द्वार में प्रवेश करे ये (२।३) सूक्त के (कौ० ४।१) के अनुसार करे। 'र्भिपितं ते वस्तितिलम्" इन दो ऋचाओं से मूर्प के मिट्टी आदि उपरोक्त द्रव्य से रुके हुए मलसूत्र को आस्थापिपू करें "विद्माशरस्य" संप्रमेहण को बांधे "फाण्टंपाययति, उदावर्तिनम्" तक सूत्रानुसार करे।

प्रथम काण्ड के प्रथम अध्याय के ४ थे सूक्त से ६ सूक्त तक प्रातः होत्र में ब्रह्मा जपे। (वै० ३।६) ये वृहच्छान्तिगण में वर्णित हैं (कौ० १।६)। शातातीयगण से तिलों का होम करे (४।१३, ७।६८, ७।६६, ७।१७, ७ ७२) १।१।६ ये शततीय-गण हैं। (१।४, ५, ६, ३३) (३।१३) (६।१६) (६।२३) ये अपासूक्त हैं।

गौओं के रोगों की शान्ति, पुष्टि कर्म में इस सूक्त से अभिमन्त्रित नमक केवल अथवा जल पिलायें समस्त रोगों की चिकित्सा में इसी सूक्त से ढाका मूलरादि की समिदाओं में आज्य होम करे इसी से लाभालाभ, जय पराजय आदि काम्य कर्मों में सिद्धि, या असिद्धि ज्ञान में दूधभात का होम करे जो बोये अभिमन्त्रित करे इस कर्म के करने पर समसंख्या में विकास स्वकार्य सिद्धि का प्रतीक समझे अन्यथा नहीं।

सग्राम भूमि वेदी का परीक्षण भी इसी से करे।

इसी सूक्त १।४ से अर्थोपादन विघ्न शान्ति में मरुद्गण का खीर या आज्य होम करे। एक पात्र कांस श्वेत दूब' वेतस, अशोकादि की शाखा, कमलगट्ठा डाले,

अभिमन्त्रित कर उसे दूसरे जल में उडेले, उस कास आदि से अपने व मेष शिर को अभिमन्त्रित करें, छीटे दे, स्नान करें और अपने व मेष शिर पर रखी उपर्युक्त पोटली को जल में फेंक दे। मानव केश व पुरानी जूती का चर्म वंश के ऊपर बांधे, पत्तों सहित आम के पत्तों को अभिमन्त्रित जल से छीटे देकर तिपाई पर या छींके पर रखें और जल में डालें। ये अभिवर्षण कर्म में डाले अभिमन्त्रित घट के जल से छींटे दें, स्नान करे (कौ ४।४) वै० (३।६) का १ सू० ५

"आपो हिष्ठा" से ऐन्द्राग्नपशौ वपा होम,,

"शंभुमयोभून्यां चात्वा से मार्जयन्ति" (वै० २।६) के उपरान्त

इन दोनों से मार्जन करें। "आपो हिष्ठा" से हवनार्थ खोदकर लाई मृत्तिका को ढाक मिश्रित जल से छीटे दें और अभिमन्त्रित करें (गौ० ५।१) "आपो हिष्ठेति पलाशकाष्टेनाभिषिच्यमानम् "। इसको लघुगण तथा वृहद्गणों में माना है अतः सभी में विनियोग करें। सलिलगण में भी यह आया है (कौ० ३।१) इससे दूध भात अभिमन्त्रित कर खाये। "सलिलैः सर्वकामः" (३।७ कौ०) आदि में विनियोग करें काँ १ सू० ४ के गौओं के रोग, पुष्टि-प्रजनन, अर्थोत्थापन, विघ्न-शमन में भी विनियोग करे।

वास्तुसंस्कार में इससे गृह भूमि को कलश जल से छिड़कें। (कौ ५।७) तथा 'आदित्यां श्रीतेजोधनायुष्कामस्य" इति (न० क० १७) में वर्णित आदित्य नाम्नी महाशान्ति में इसका विनियोग करे (सलिल गण आदित्यायाम्" न० क० १८ कां १ सू ६ "शन्नोदेवीः" उपर्युक्त सूक्त ४ व ५ व लघुगण तथा वृहद्गणकर्मों में में विनियोग करे। 'इन्द्रमह' नाम्नी पूजा में इसका विनियोग करे। राजा के पुष्याभिषेक में कलश को अभिमन्त्रित करे (परिशिष्ट वचन)

हेमरत्नौषधी विल्वपुष्पगन्धाधिवासितानाम्।
आच्छादितान्सितैर्वस्त्रै रभिमन्त्र्य पुरोहितः।
सावित्र्युभयतः कुर्याच्छन्नोदेवी तथैव च। प. ५।२॥

प्रथम काण्ड के दूसरे अनुवाक में ५ सूक्त है, इनमें से १ व २ चातनगण हैं (१।७) ८) २।१४) अरायक्षयपम् २।१८, शंनोदेवी ३।५, पृश्निपर्णी २।२५ आपश्यति ४।२०, तान् सत्योजाः ४ ३६, त्वयापूर्वम ४।३७, पुरस्ताद्युक्त ५।२८ रक्षोहणम् ८।३,४ चातनानि। कौ० १।८॥ चातना नाम अपनोदनेनव्या- (कौ० ४।१)

चातन, मातृगण (अम्बादिगण) से होम करे (शा० क० १६ के सभी कर्मों में इस सूक्त का विनियोग करे ।।

"आविष्ट भूत पिशाचाद्युच्चाटनार्थं फलीकरण तुषाव तक्षण होमादीनि" आरे शी० (१,२६) इत्यदनोदन सूक्त कर्त्तव्यानि,, अपनोदनादि इसी से करे।

"इदंहृयि" का० १ अ० २ सूक्त पूर्वोक्त कार्यों में विनियोग उपर्युक्त ही है। "अस्मिनवसु" का १ अ० २ सू० ६ से समस्त सम्पद कर्म में, त्रयोदशी से ३ दिन दही, मधु, पूर्णपात्र में डाले और उसी में मणि या पुरुष गात्र बनाकर डाले। दूध समान बछड़े की गौ का हो। उसे चौथे दिन खाये।

इसी "अस्मिन वसु" १६ सूक्त से शत्रु भय से राष्ट्र से भागे हुए राजा का पुन: प्रवेश कराने में काम्पील काष्ठादि युक्त व्रीहि समानरूप वछड़े की गौ के दुग्ध में मिला अभिमन्त्रित कर खिलाने आदि में विनियोग है। कौ० २।७। उपर्युक्त गौ के दुग्ध दही व शहद को शान्तिघट में आयुष्कामी दही डाले, उसी में भात मिला होमकर प्राशन करे। मणिवन्धन करे। कौ० ७।२।। उपनयन में माणवक को पूर्वाभिमुख कर दायें हाथ से नाभि स्पर्श कर जपे "अस्मिन वसुवस वोधारयन्तु (१।६) विश्वे देवा वसव:" (१।३०) आयातु मित्र: (३।८) अमुत्रभूयात् (७ ५५) अन्तकाय मृत्यवे (८।१) आरभस्व (८।२) प्राणाय नम: (११।४) विषासहिम् १७।१ से अनुमन्त्रित करे (कौ० ७।६) इन सभी में आयुष्य व स्वस्त्ययन गणों से आज्यहोम करे। (कौ० १४।३) तथा "ऐरावती गजक्षये" इति न. क. १७ ऐरावत नामक महाशान्ति में इसी का विनियोग करे। ये दोनों गण वहे हैं। न. क. १८ पुष्याभिषेक में भी इस का विनियोग है।

शर्मवर्मगणश्चैव तथा स्याद् अपराजित:।
आयुष्यश्चाभयश्चैव तथा स्वस्त्ययनो गण:।
एतान् पञ्चगणानहुत्वा वाचयेत् द्विजोत्तमाम्। प० ५।३ ।।

"अयं देवानां" का० १ अ० १ सू० १० से जलोदर रोग निवृत्यर्थ घर का तृण, दाभ, अपामार्ग, श्वेत दूव आदि का मुट्ठा वना घड़े के जल से अभिषेक करे। अर्धशिर को २१ वार छिड़कें ।। कौ० ४।१।।

"वषट् ते पूषन" का १ अ० १ सू० ११ से गर्भवती के सुख से प्रसव कराने हेतु होम करे। अन्त में स्वाहा के स्थान में वषट् कहे! प्रणीता के जल से शिर पर छींटे दें। (कौ० ४।६)

कां १ अ० सू० २ "जरायुजः" का वात पित्त श्लेष्म विकार जन्य रोगों में यथोचितभेद, मधु. घी. तैलादि डालने में विनियोग करे (कौ० ४।२) इसी से दुर्दिन निवारण, अति वृष्टि निवारण में सूर्योत्स्थान जल का प्रक्षेप आदि इसी से करे। कौ० ५।२

इस को तीसरी ऋचा "मुञ्च शीर्षक्तया" से समस्त व्याधियों में अभिमन्त्रित घट के जल से व्याधित को छींटे दे। कौ० ४।३

"नमस्ते अस्तु विद्युते" कां० १ अ० ३ सू० १३ से दूब, दाभ, अपामार्ग, सहदेवी, शमीपत्र, शाल्मालिपत्र, ढाक, पीपल, प्लक्ष, गूलर, आम, अशोक, वट, जामुन बिल्व, अनार, तुलसी, कूठ, लोध, लाजवन्ति, के पुष्प, कन्नेर पुष्प घट में डाले इसी से अभिमन्त्रित कर हवनान्त घर, क्षेत्र, सीमा, ग्राम, राज्य में, गोशाला में गाड़ दे तो ओले विद्युतमय निवारण हो। होम इसी से करें (२।१३) व "स्तनयित्नु" ७.११ से पत्थर भी लेकर गाड़े। कौ० ५।२ उपाकम में १।१३ व २६ से हवन करें। कौ० १४.३।

"भगम् अस्या वर्चः" कां १ अ० ३ सू० १४ से स्त्री पुरुष दौर्भाग्य करने में उनकी उपमुक्त माला, दन्तधावन, केशादि को अभिमन्त्रित कर ईशान में गाड़े। कौ० ४।१२

"सं संस्रवन्तु" कां १ अ० ३ सू० १५ समस्त पुष्टि कर्मों में समान रूप के बछड़े की गौ का दूध, दही, मधु, घृतयुक्त सक्तू या खिचड़ी के चरु को अभिमन्त्रित कर खाये (कौ० ३।२) मिश्रधान्य (व्रीहिस्य) गेहूँ, कंगनी, तिल, प्रियंगु, श्यामाक आदि (कौ० १।६) लक्ष्मीकर्म में भी इसका विनियोग करें (कौ० ३।२)

"येमावास्यां रात्रिम्" कां १ अ० ३ सू० १६ द्वेष कर्त्ता के मारणार्थ नदी फेन, शमी पत्र, शालमली पत्र के चूर्ण युक्त पूर्वोक्त मिश्रित धान्य के चूर्ण से निर्मित शत्रु आकृति की प्राण प्रतिष्ठा कर अभिमन्त्रित करे। उसे वस्त्र आभूषणादि से सजाये, और अपने हाथ से काटी वांस की छड़ी से ताडना दे। अंगों को क्रोध से मूर्ति का स्पर्श करे। (कौ० १।६) व (६।१) यह रात्रि में तारागण युक्त निशा में करे। इनमें रक्ष पिशाचादि समस्त निशाचरगण द्वेष कर्त्ता माने गये हैं।

"अमूर्याः" कां १ अ० ४ सू० १७ से शस्त्रघातादि से प्रवाहित रक्त या स्त्री के रजस्रावः की अतिशयता की निवृत्ति में पाँच गाँठों की वांस की छड़ी से रुधिर बहने के स्थान, व्रण को अभिमन्त्रित करे। और मार्ग की रज, वालुका या

शुष्क कीचड़ की मिट्टी, केदार मिट्टी को अभिमन्त्रित कर बांध दे। कौ० ४।२ ॥

"मिलंक्ष्मम्" कां १ अ० ४ सू० १८ से सामुद्रिक शास्त्रोक्त मुख हस्तपाद आदि दुर्लक्षण वाली स्त्री के दोषनिवृत्यर्थं मुखमार्जन, स्नान व होम व अभिषेक करे। (कौ० ५'६) शान्ति कल्प में महाशान्ति में यह सूक्त वर्णित है।

"मानोविदन्" १।१९ अदारसृत (१।२०) स्वस्तिदा (१।२१) ये सूक्त अपराजितगण में हैं। इनका सू० १।२ की ही भाँति उनमें विनियोग है।

१।१९ का ब्राह्मण के शस्त्र ग्रहण करने में. देव प्रतिमा के नृत्यया रोने हँसने आदि अद्भुत कर्म में आज्य होम करे। (कौ० १३।१२) के अनुसार परिक्रमा कर ११९ व ६।१३ से होम करे।

यदि बिजार या बैल गौ के थन पिये तो इन उपरोक्त दोनों से होम करे। कौ० १३।२१

१।२० "अदारसृत" का पूर्वोक्त कर्मों में तथा दर्शपौर्णमास में प्रवृत्त हवि के निरीक्षण में विनियोग करे।

१।२१ "स्वस्तिदा" अपराजित गण कर्म में विनियोग करे तथा ग्रामगमन आदि स्वस्त्ययनकामी इससे प्रथम दाये पैर को रक्खे, शर्करा व दूव छिड़के तथा इन्द्र का जप करें। १।२१ व ७।५७-२ के विनियोग का विधान है। पिशाचादि निवारण में, उद्वेग विनाशन में इसी का जप करे। कौ० ४।१ वेदी निर्माण के प्रारम्भ में जपे। "विन इन्द्र" १।२१-२,) मृगोनभीम (७।८९-३) वैश्वानरो न ऊतये (६।३५) से वेदी को अनुमन्त्रित करे (वै० ५।२)

"अनुसूर्यम्" कां १ अ० ५ सू० २२ से हृद्रोग कामलादिरोग निवृत्यर्थ लाल बैल के रोमयुक्त जल को अभिमन्त्रित कर पिलाये। ऐसे ही लाल गौ के चर्म का छेद कर गौ के दूध में धोकर, अभिमन्त्रित कर, मणि को (चर्म को) बाँधे, दूध को पिये। तथा पीले भोजन (हल्दी युक्त भात) खिलाये, उच्छिष्ट गिरे या वमन हो जाय तो भूमि को लीपे। खाट पर बिठाये उसके नीचे शुक, काष्ठ शुक गोपीतन तीन पक्षियों की दायें जांघ को हरे सूत्र से बांधे। कौ० ४।२

" नक्तं जाता" "सपर्णो जाता" कां १ अ० ५ सू २३ व २४ से श्वेतकुष्ठ के दूर करने में—भाँगरा-हरिद्रा—इन्द्रवारुणि—नीलिका को पीस शुष्कगोमय से श्वेत स्थान को घिसकर लोहू-लुहान करके लेप करे। पलितकुष्ट के पले को

हटाकर दोनों सूक्तों से अभिमन्त्रित कर लेपे और इन्हीं दोनों से मारुत कर्म तथा वृष्टि कर्मोक्त विधि से आज्य होम करे। कौ० ४।२।

"यदग्निरापो" कां १।२५ से ऐकाह्निक शीतज्वर, संततज्वर, वेला ज्वर आदि की शान्ति में जपे। लोह की कुठार को अग्नि में तपा उष्णजल में रख उससे रोगी को भाप दे, छींटे दे। कौ० ४।२

अथ अग्निष्टोम—विधि

सोमेन यक्ष्यमाण: "ऐन्द्राग्नम् उस्रम् अनुसृष्टम्" आलभेत। यस्यपिता पितामहः सोमं न पिबेत्। (गो० ब्रा० २।१।१६) वै० श्री० अ० ३ कं १ (११ सू० १ ऋत्विजोवृणीते ॥२॥ सोमेन "यक्ष्यमाण ऋत्विज: "ब्रह्माऽऽद्यान्वृणीते यज्ञ कर्म कर्तृतया स्वीकुर्वते। वृणीते ऋत्विज: गृहीत मधुपर्कान्। येनसोम (अ० वै ६।७—१) इति याजयिष्यन् सारूपवत्सम अश्नाति (कौ सू० ४६।४) इति कर्मकुरुते, तथा निधने यजते (कौ० सू० ४६।५) इति (क) अथर्वाङ्गिरोविदं ब्रह्माणम्। सामविदम्। उद्गातारम्। ऋग्विदं होतारं। यजुर्विदम् अध्वर्युम् ॥ वै० (ख)

ध्रौवस्यपूर्णाहुतिम् यस्योरुष (अ० ७।२७ [२६] ३) इति ॥४॥ वै० श्री० सू० इससे पूर्णाहुति दे। द्वितीय मण्डप में स्नानकर पूर्व द्वार से ही वापिस हो और उपस्थान करें।

धर्मंतपास्यमृतस्य धारया देवेभ्योहव्यंपरिदांसवित्रे।
शुक्रं देवा: शृतम अदन्तु हव्यम् आसज्जुह्वानम् अमृतस्य योनौ
देवानाम् अधिपाभएति धर्म ऋतेनभ्राजन्नमृतंविचष्टे।
हिरण्यवर्णो नमसो देव सूर्यो धर्मो भ्राजन् दिवो अन्तान्पर्येषि विद्युता ॥
वैश्वानरः समुद्रं पर्येति शुक्रो धर्मो भ्राजन् तेजसा रोचमानः।
नुदञ्छत्रून् प्रदहन् मेसपत्नान् आदित्योद्याम् अध्यरुक्षद् विपश्चित् ॥
विद्योततेद्योतत् आ च द्योतत् अन्तरिक्षन्तर अनृतोधर्म उद्यन्।
हन्ता वृत्रस्य हरिताम् अनीकम् अनाधृष्टास्तन्वः सूर्यस्य ॥

धर्मपश्चाद् उत धर्म पुरस्ताद् अयोदंष्ट्राय द्विषतो ऽविदध्म; ॥

वैश्वानरः शीतरूरे वसान सपत्नानमेद्विषतोहन्तु सर्वान् ।

ऋतून ऋतुभिः श्रपयति ब्रह्मणैकवीरो धर्मः शुचान समिधासमिद्धः ।

ब्रह्म त्वा तपति ब्रह्मणा तेजसा च धर्मः साहस्रः समिधा समिद्धः ।

असपत्नाः प्रदिशोमे भवन्तु (अ. वै० १९।१४-१)

सपत्नान् सर्वान् मेसूर्योहन्तु वैश्वानरो हरिः ।

धर्मस्तप्त ! प्रदहतुभ्रातृव्यान द्विषतोवृषा ।

उद्यन्मेशुक्र आदित्योविमृधा हन्तु सूर्यः ॥

ब्रह्मजज्ञान (अ० ४।१-१) इयपित्र्या (अ० ४।१-२) इति शस्त्रवत् अर्धर्चश आहावप्रतिगरा वर्जम् ॥

तदनन्तर गूलर की समिधाओं से वन्ध्यात्वदोष निवृत्ति हेतु होम करायें । देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा । पितृकृतस्य, मनुष्यकृतस्य, आत्मकृतस्याऽनाज्ञाता ज्ञातकृतस्य । यद्वो देवाश्चकृम जिह्वायागुरु मनसोवाप्रयुती देवहेडनम् । अरावायोनो अभिदुच्छुनायते । तस्मिस्तदेनो वसवो निधेतन । (ऋ० १०।३७।१२) इति देव हेडनस्य सूक्ताभ्यां च (अ० ६।११४—११५)

उभाकवी युवाना सत्यादांधर्मणस्परि । सत्यत्य धर्मणा विसख्यानि सृजामहे ।

(वै० श्रौ० ३ क १३।२३।१४)

शरवो निरङ्गुष्ठो हस्तः । निरङ्गुष्ठः शरावः स्यातं

माङ्गुष्ठः प्रसृतः स्मृतः इति वचनात् ।

(वै० श्रौ० अ० ६ कं १।३१।सू० ४)

अथर्व विधान काण्ड २

द्वितीय काण्ड में ६ अनुवाक् हैं । प्रथम अनुवाक् में ५ सूक्त हैं ।

सू० —१—"वेनस्तत्"—इस सूक्त से अभीष्ट फल सिद्धि या असिद्धि के ज्ञान के लिये प्रयोग करे । ५ गांठ का वेंतका दण्ड तथा काम्पील वृक्ष की टहनी

एक या दोनों ही को अभिमन्त्रित कर, अभीष्ट कार्य का चिन्तवन कर समतल भूमि में गाड़ दे। यदि दण्ड चिन्तित दिशा की ओर गिरे तो कार्य सिद्धि, विपरीत दिशा में गिरे तो असिद्धि समझे।

इसी प्रकार बाण को अभिमन्त्रित कर निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर फैंके, यदि लक्ष्य पर लगे तो अर्थ सिद्धि समझें।

इसी से दर्भ समूह को अभिमन्त्रित करे, कार्य का चिन्त वन कर गिने। सम संख्या हो तो अभीष्ट फल दायक समझें।

इसी प्रकार जलपूर्ण घट या लोटा में अभिमन्त्रित कर कार्य का चिन्तवन कर दूध डाले यदि ऊपर होकर निकलने लगे तो कार्य सिद्धि समझे।

इसी प्रकार ईंधन (समिध) अभिमन्त्रित कर अग्नि में प्रदक्षिण क्रम से फैंके, प्रदक्षिण समय जल उठें तो कार्य सिद्ध समझें।

इसी प्रकार सीधे दाहिने हाथ की दो अंगुलियों को अभिमन्त्रित कर अलग अलग सिद्धि, असिद्धि का चिन्तवनकर उनमें अन्य शिशु से स्पर्श कराये। सिद्धि वाली को छूने पर सिद्धि। असिद्धि वाली को छूने से असिद्धि। इसी प्रकार २१ बार शक्कर अभिमन्त्रित कर कार्य का चिन्तवन कर उठाकर ७ भागों में बांट दे अभीष्ट सम से सिद्धि, विषम से असिद्धि। तथा नष्ट धन के ज्ञानार्थ, पानी से पूर्ण पात्र, या हल या पातों को नवीन वस्त्र से ढक कर इस सूक्त से अभिमन्त्रित कर कर " अरजो वित्ते कुमार्यो हरतम्" ऐसा कहे—विना रजवाली कुमारी जिस दिशा को लेकर चले उस दिशा में नष्ट वस्तु को समझे।

इसी से वाग्दान से पूर्व कन्या के सौभाग्यादि लक्षण ज्ञानार्थ खेत की, सांप की वामी की, चौराहे की तथा श्मशान की मिट्टियाँ लेकर अभिमन्त्रित करे और कन्या से उन ४ में से एक के उठाने को कहे। खेत व वामी की उठाये तो कल्याण-कारी, चौरास्ता या श्मशान की उठाये तो मृत्यु।

कन्या की अन्जलि में जल भर कर अभिमन्त्रित कर किसी भी दशा में उडेलने को कहे। यदि पूर्व को डाले तो कल्याण कर हो। (कौ० ५।१)

ऋचा (२।१—३) " रु न, पिता जानेता "वैश्वदेव होम में अग्नि चयन में विनियोग है। (वै० ५।२) यो विश्वचर्षणिः (१३।२—२६) औपसथ्य-षोडश गृहीतार्थ का (२।१।३) स नः पिताजनिता से उत्तरार्ध होम करे।

अथर्व विधान काण्ड २

सू० २ "दिव्यो गन्धर्वः" यह मातृ नाम गण में होने में तद्विहित कर्मों, गन्धर्व, राक्षस, अप्सरा, भूत ग्रहादिशन्ति में घी युक्त सर्वोषधियों से ग्रह गृहीत के शिर पर दाभ की ईडुनी पर मिट्टी का कपाल रख अग्नि में चौराहे पर होम करे। कपाल को मूंज की तिलाई बना जंगल के वृक्ष पर जहाँ पक्षी बैठते हों लटका दे। (कौ· ४।२)

तथा जहाँ घी, मांस, मधु, हिरण्य, धूल आदि की घोर वर्षा (अद्भुत बात हों) बन्दर, श्वान आदि रूप में यक्ष के अद्भुत दर्शन हों तो कर्म शान्ति में मेंढ़क श्रृंगाल आदि के वदन आदि के दीखने पर शान्ति हेतु इसी से घी से होमकरे।

तथा ग्रह यज्ञ में प्रधान होम के उपरान्त शान्ति हेतु इसी से होम करे। (शान्ति कल्प १६)—यथा शान्ति—कृत्यादूषणैः (२—११, ४, ४०, ४।१७ (४।१८, ४।१६, ५।१४, ५।३१, ८।५, १०।१॥ चातन (१।७, १।८, २।१४, २।१८ ३।५, २।२५, ४।२७, ४।३६, ४।३७, ५।२६, ८।३) ४॥ मातृनामा (२।२ ६।१२१, ८।६,) वास्तोष्पत्यैः (३।१२, ६।३, ६।६३, १२।१) से घी का होम करे। तथा पूर्वोक्त शान्तियों के तन्त्र भूत महा शान्ति में इससे घृत होम कर शाति घट के जल से छींटे दे। यथा

"चातनो मातृनामा च वास्तोष्पत्योथराष्महा । न० क० २३,

तथा अश्वमेध याग में ब्रह्मा संवत्सरान्त में प्रयुज्यमान अश्व को अनुमन्त्रित करे। वै० ७ १—तथा वृहदारण्यक (१।१।१) उषा वा अश्वस्य मेध्यस्य" आदि में विस्तार देखें।

सू० ३ "अदोयद्" इससे ज्वरातीसार, अति मूत्र नाडी स्थान, व्रणादि की शान्ति में मूंज की रस्सी से बांधे, खेत की मिट्टी मिलाये, लेपे, या घी मले, गुदा या पेशाब इन्द्रियों के घावों को लपेट कर बांधे। "विद्माशरस्य" (१।२) अदोयत्" (२।३)। कौ० ४।१ देखें।

सू० ४ "दीर्घायुत्वाय" इससे कृत्या दूषण से आत्म-रक्षार्थ विघ्नशमनार्थ अर्जुन (जङ्गिड़) की मणि, सन् के धागे में पुरोकर अभिमन्त्रित कर बांधे। कौं। ५६ देखें।

सू० ५- "इन्द्रजपस्व" बलप्राप्त्यर्थं इन्द्र का होम उपस्थान करे। कौ· ७ १०

तथा विजय, बल, पुष्टि, पशु आदि की प्राप्ति के हेतु तथा दूसरे के चक्र-कुचक्र के आने पर ऐन्द्री नाम्नी महा शान्ति इसी से करे। न० क० १७

अथर्व विधान कां—२

सू० ६—द्वितीय अनुवाक में ५ सूक्त हैं—"समास्त्वाग्ने" से सम्पत्कामी अग्नि का होम व उपस्थान करे। "समास्त्वाग्ने" (२।६) अभ्यर्वत (७।८२) कौ० ७।१० तथा भूतरोग, चोर-भय, भयङ्कर, संवत्सर की शान्ति में इससे घृत होम करे। (कौ० १३)

अग्नि चयन में प्राजापत्य व्रत में, पशुयाग में, समिधादान में ब्रह्मा इसका जप करे। (वै० ५ १)। तथा इसी से अग्नि भय में तथा समस्त कामनाओं में आग्नेयी—इष्टि करे (न० क० १७)

रात्रि में राजा आर्ती के निमित्त "अतिनिहः (२।६—५) से दीप प्रज्वलित करे। परिशिष्ट वचन।

"कृत्वा पिष्टमयं दीपं सुवर्तिस्नेह संलवम्।
अति निहः प्रान्यान् इति द्वाभ्यामनं प्रदीपयेत्॥ प० ७।२

सू० ७—अघद्विष्टाः—इस सूक्त से लौकिक, वैदिक आक्रोश, ब्राह्मण दिशा र कुदृष्टि दोष, पिशाच, यक्ष आदि से उत्पन्न, भय-क्लेश निवारणार्थ यवकी (इन्द्र० जौ की, मणि को अभिमन्त्रित कर बांधे। यथा "अघद्विष्टा (२।७) शनोदेवी (२।८५) वरण: (६।८५) (कौ० ४।८।। नक्षत्र कल्प १७—भार्गवी दृष्टि नक्षत्र, ग्रह आदि जनित भय, रोग निवारणार्थ और महाशान्ति हेतु उपरोक्त विधि से मणि-बन्धन करे।

सू० ८—"उदगातां भगवती" इस सूक्त से कुल में चले आ रहे कुष्ठ, क्षय, ग्रहणी आदि रोगों की शान्ति हेतु घट में शान्ति औषधियां डाल अभिमन्त्रित करे। घर से बाहर रोगी को छींटे दे। "जपेयग्" इस ऋचा से रात्रि में बफारा दें। "बभ्रोः" इस तीसरी ऋचा से अर्जुन की छाल, इन्द्र जौ, जौ का भूसा, तिलों का तिल कुटा (फली) मिलाकर अभिमन्त्रित करे बांधे। इसी ऋचा से खेत की मिट्टी, बांमी की मिट्टी चाम से लपेट कर बांधे। तथा "नमस्ते लाङ्गलेभ्य" इस चौथी ऋचा से अभिमन्त्रित घट के जल से बैलों से युक्त हल के नीचे रोगी को बिठाकर छींटे दें। "नमः सनिस्रसाक्षेभ्यो:" इस पांचवी ऋचा से खाली (शून्य) घर

में खड्ड बनाये उसमें छान का फूस बिछाये उस पर रोगी को विठाये और उस घट के जल से छींटे दे, पिलाये स्नान कराये। यथा "उदगाताम्" (२।८) से स्नान कराये। "अपेय" से बफारा दे।

अथर्व विधान काण्ड–२

सू० ९ "दश वृक्ष" इस सूक्त से ब्रह्म ग्रह शान्ति हेतु ढाक, गूलर, जामुन, काम्पील आदि १० वृक्षों की छाल उनमें लाख मिला अभिमन्त्रित कर बांधें। तथा (१०) ब्राह्मण ब्रह्मग्रह गृहीत रोगी को स्पर्श कर जप करें

सू० १० "क्षेत्रियात्वा" इस सूक्त से पूर्वोक्त कुलोत्पन्न रोग के निवारणार्थ रोगी को चौरास्ता पर अभिमन्त्रित जल से दश वृक्षों की छालादि गाठों से बाँधकर दर्भ कूर्च से छींटे दे. स्नान कराये। की॰ ४।३।

सू० ११—दूष्या दूषिरसि" इस सूक्त से स्त्री, शूद्र, राजा, ब्राह्मण, अघोरी (कापालिक) अन्त्यज, शाकिनी आदि द्वारा किये गये अभिचार दोष से आत्म-रक्षार्थ, तथा कृत्या के निवारणार्थ इस सूक्त से तिलकमणि अभिमन्त्रित कर बाँधे। इसी कृत्या निवारणार्थ शान्ति जल प्रयोग करे। यथा "दूष्या षिरसि" (२।११) ये पुरस्तात " (४।४०) "ईशानां त्वा" "(४।१७)" समं ज्योति (उतो अस्य वन्धु कृत" (४।२९) "सुपर्णस्त्वा" (५।१४) " यां ते चक्रु: " (५।३१) अयं प्रति-सर:" (८ ५) ये सब कृत्यापरिहरण गण है। कौ० (५।३) न. क. २३। कृत्यादूषण-चातन मातृनामा–ये ३ से युक्त कर्म का विधान है। इनका राज्य श्री, ब्रह्मवर्चकामी वार्हस्पत्य नाम्नी महाशान्ति करे और स्नात्तय मणि अभिमन्त्रित कर वाँधे। न. क. ०९ तथा कृत्या प्रतिहरणार्थ प्रथम ऋचा से कृत्या की गुल्फों को छींटे दे। कौ० ५।३

सू० १२—"द्यावा पृथिवी उसर" इस सूक्त से अभिचार कर्म की दीक्षार्थ वेणुवांस का दण्ड स्थापित करे। कौ० ६।१। तथा इसी सूक्त से द्वेषी को अपमा-नित करने के लिये दक्षिण मुख दौड़ते हुए शत्रु के पैरों में वृक्षों के पत्ते फेंके। उन्हें परशु (फरसा) से काटे कटे हुओं को पात्र में डाले, उठाकर भाड़ पर भूने। (६।?)

सू० १३—"आयुर्दा" इस सूक्त से गोदानादिकर्म में शान्ति—जल प्रयोग करे उसी कर्म में इसी सूक्त से हवन कर ब्रह्मचारी के शिर पर छींटे दे। कौ० ७।४।

"परिधत्त" २।३ ऋचाओं मे आचार्य प्रातः वस्त्रों को अभिमन्त्रित कर राजा को दे। अ० प० ४।१। तथा आर्ती में ४ बार शककर प्रत्येक दिशाओं में फैंके पाँचवी से " एह्यश्मानम्" से राजा को बिठाये। अ. प. ४।४

सू० १४—"निः सालाम्" इस सूक्त से जिस स्त्री के बच्चे मर जाते हों या गर्भपात हो जाता हो उस दोष के निवारणार्थ पूर्वोक्त ३ मण्डप बनाये और एक-एक में ढाक के पत्ते तथा सैंमर (शाल्मलि) या (शमी) वृक्ष की टहनियां अभिमन्त्रित कर बिठाये और शान्ति जल से छींटे दे उप स्नान कराये पुनः तीसरे मण्डप में औदुम्बर की समिधाओं से हवन करे। पुरोडाश अभिमन्त्रित कर दे। सू० ४।१० कौशिक। जिस घर में गौ घोड़ी आदि भी वन्ध्या हों वह दैवहत माना है उसके निवारणार्थ "य आत्मदा" से वशायाग करे "निःसालाम्" (२।१४) से उल्मुक से ३ बार फिरा कर दोष को भगाये . " ऊर्जविभ्रति" (१।६२) से ३ बार छींटे दे। कौ० ६।४।

अथर्व विधान काण्ड। २।

सू० १५ " यथाद्यौ" इस सूक्त से दीर्घायु की कामना वाले, चावल बनाकर शान्ति जल से छिड़ककर अभिमन्त्रित कर खायें। "यथा द्यौः" (२।१५) "मनसे चेतसे धिये" (६।४१) कौ० ७।५।

सू० १६ "प्राणापानौ" इस सूक्त से दीर्घ जीवन कामी—इससे तथा "ओजोसि" (२।१७) से होम करे।

आग्रदायणा हायणी इष्ट में ब्रह्मा "यद् विद्वान्सः" (६ ११५) द्यावा पृथिवी (२।१६—२) "सोमो वीरुधाम् " ५।४—७) से वैश्वदेव होम करे। वै० २।४।

सू० १७ " ओजोसि " इसमे भी सू० १६ की भांति होम करे।

ओज—शरीर की अष्टमी धातु का नाम हैं। यथा—

क्षे व्रजस्य तद् ओजस्तू केवलाश्रय इष्यते।

यथा स्नेहः प्रदीपस्य यथा ऽभ्रम् अशनित्विषः। इति।

सू० १८ "भ्रातृव्यक्षयणमसि" इस सूक्त से अभिचार कर्म में सरपत (मुंज) की समिधा, में काले जौ, तिल, धान से होम करे (कौ ६।२)

यह चातन गण में होने से तीनों ही का उसी के साथ प्रयोग भी है।

सू० १९ भी अग्नेयत् ते" इस का प्रयोग भी पूर्ववत् है।

सू० २० " वायो पूतः।" सूर्यंयत् (२।२१) "चन्द्रयत्" (२।२२) "आपोयत्" (२।२३) ये चारों (२।१९) के साथ ही विनियोगार्थ कही है।

सू० २४ "शेरभक् "इससे अलक्ष्मीनाशनार्थ समुद्र के मध्य (वडवा) होमकर अभिमन्त्रित कर चरु को खाये। तथा इसी कर्म में इसी सूक्त से कुटे जौ के सत्तू लाल वर्ण की बकरी के दही में डालकर हवन करे, चरु को अभिमन्त्रित कर खाये।

इसी कर्म में इसी सूक्त से तृण की गाँठें लगावे। प्रत्येक को घट के जल में खोले, उस जल से छींटे व स्नान पान करे मुखधोये। कौ० (३।२)

सू० २५॥ "शंनो देवी पृश्निपर्णि" यह चातन गण में उसी भाँति विनियोगार्थ है। तथा कुष्ठादि समस्तरोग निवारणार्थपृश्नि पर्णि अभिमन्त्रितकर पीसकर लेपे "अधद्विष्ठा" (२।७) शंनो देवी (२।२५) वरणः (६।८५) पिप्पली (६।१०९) कौ० (४।२) को देखें।

सू० "२६ "एहयन्तु पशवः" इससे गौ की पुष्टि के हेतु ताजे दूध को बछड़े की लाला (लार) में मिला अभिमन्त्रित कर खिलाये, खाये और इसी से अभिमन्त्रित कर गौ को दे। इसी से घर के अभिमन्त्रित जल को गौशाला में ढारे (उडेले) तथा दाने आदि में गुग्गुल, लवण मिला ३ रात्रि अग्नि में तप्त कर चौथे दिन निकाल कर अभिमन्त्रित कर खिलाये। "एहयन्तुपशवः" (२।२६) संवोगोष्ठेन (३।१४) कौ० ३।२।

अथर्व विधान। काण्ड २

सू० २७—"नेच्छत्रु" इस सूक्त से विवाद में जय प्राप्ति हेतु, पाठाग्निवाल (पाठा) की जड़ अभिमन्त्रित कर खोदे और अपराजित स्थान से सभा मण्डल में प्रवेश करे। तथा इसीसे अभिमन्त्रित पाठा को खोद कर प्रतिवादी से बोले। तथा

पाठामूल अभिमन्त्रित कर बाँधे। इसी से अभिमन्त्रित पाठा के पत्रों से बनी माला शिर पर धारण करे। कौ० ५।२। न. क. १६

सू० २८ :'तुभ्यमेव जारिमन्" इस सूक्त से गोदान, चौल-कर्म में माता पिता परस्पर ३ बार पुत्र को प्रत्यर्पित करें। और ३ मक्खन के पिण्ड अभिमन्त्रित कर पुत्र को खिलावें। कौ० ७।५।

सू० २६ "पार्थिवस्य" इस सूक्त से प्यास की बहुलता वाले रोगी को सूर्योदय काल में रोगी को बिठाकर सत्तू का मांड (मिश्रित सत्तू) अभिमन्त्रित कर पिलाये। सूत्रकार मत से–रोगी को पूर्वाभिमुख, निरोगी को उत्तराभिमुख बिठाकर मन्थानी को प्यासे के शिर पर रख बेत की रई से सत्तू को मथकर बिना प्यासे को दें। उसमें तृष्णा को निहित भावना से करे, उससे निकले जल को प्यासे को दे। "पार्थिवस्य" (२।२६–१–२) शिवे तेस्ताम्" (८।२–१४–१५) "माप्रगाम्" (१३।१-५६-६०) इन चार से गोदान, चौल-कर्म में बच्चे के शिर पर धान, जौ, शमीपत्र मिला, अभिमन्त्रित कर रक्खे। (कौ० (७।५)

सू० ३१—"आशीर्ण ऊर्जम्" (३) से पुतभृन्त्याशिच्यमान के शिर को अनुमन्त्रित करे। वै० ३।१२।

सू० ३२ "यथेदं भूम्याम्" इससे स्त्री के वशीकरणार्थ वृक्ष की छाल शरकण्डा, तगर, अञ्जन, कुष्ठ (घासें) पीसकर घी में मिला अभिमन्त्रित कर स्त्री के शरीर में मल दे। "यथेदं भूम्याम्" (२।३०) यथा वृक्षम् (६।८)। कौ० ४।११

सू० ३३ "इन्द्रस्य या मही" इस सूक्त से शरीर में विविध प्रकार के कीटाणु जनित रोग निवारणार्थ काले चनों को घी में मिलाकर हवन करे। तथा गौ के बाल को शरकण्डे में पुरोकर अग्नि में तपा उस पर रक्खे, सेकदे।

इसी प्रकार मार्ग की धूल बायें हाथ से ले, सीधे हाथ से मलकर दक्षिण को मुख कर इस सूक्त को जपे तथा उसे रोगी पर गिराये।

इसी सूक्त के जप के साथ रोगी के हाथ में मार्ग की धूल को मले।

इसी से ढाक, गूलर की समिधाओं से होम करे। कौ० ४।३।

सू० ३४ "उद्यन्नादित्य:" इस सूक्त से पशुओं के कीड़ों से युक्त घावों को तीनों सन्ध्या कालों में दाभ से छारे और पूर्व सूक्त की भांति होमादिस भी कर्म करे।

सू० ३५ "अक्षीभ्याम्" इस सूक्त से आंख, नाक कान, शिर, जिह्वा, गर्दन आदि अवयवों के रोगी की चिकित्सा में बांह आदि की गाँठों को बांधे और अभिमन्त्रित जल छोड़े, गाँठों को छोड़कर छीटे दे। (की० ४।३)

अहोलिङ्गगण में होने से उसके समस्त कार्यों में विनियोग करे (की० ४·६) "अक्षीभ्यां ते" (२।३३) मुञ्चामित्वा (३।११) उत देवाः (४।१३) आवतस्ते (५।३०) "शीर्षक्ति" (६।८) इन ५ का गण है।

इसी से अश्वमेध आदि में दीक्षावान यजमान को चिकित्सा का विधान है (वै० ७।३)

अथर्व विधान--कां २

सू० ३६—"य ईशे पशुपति" इससे वशादोष निवारणार्थं होम करे। इसी से समस्त लोकों पर आधिपत्य की कामना से इन्द्राग्नि देवता का होम तथा उपस्थान करें। इसीसे अन्न अभिमन्त्रित कर ब्राह्मण को दान दे। य ईशे (२।३४) ये भक्षयन्तः" (२।३५) की० ७।१०

इसी से पशुयाग (इन्द्रिय याग) करे। "अथ पशुर्वैष्णवं पूर्णं होमम् उरुविष्णो वै० (२।६)

सू० ३६ "येभक्षयन्तो" इस सूक्त से जन समुदाय के बीच भोजन कर्म में दृष्टि दोष निवारणार्थ अन्न को अभिमन्त्रित कर खाये। (५।२)

सू० ३७ "आनो अग्ने" इस सूक्त से पति प्राप्ति कामना वाली कन्या को चावल, तिल की खिचड़ी अभिमन्त्रित कर खिलाये।

तथा उसी कर्म में स्वर्ण गुग्गुल, गौ के दूध व घी तथा शहद में डालकर बाँधे। धूप दे, लेप करे। इसी से रात्रि में धान से होमकर कन्या से अग्नि की परिक्रमा कराये। इसी से नाव को अभिमन्त्रित कर कन्या को बिठाये और उतारे। तथा पति प्राप्ति विज्ञान कर्मार्थ सात तानों की रस्सी से ७ वच्चों को बाँधे और कन्या से मुक्त कराये। यदि प्रदक्षिणा में ही मुक्त करे तो शीघ्र पति लाभ हो। इसी सूक्त से नवीन श्वेत वस्त्र से वृषभ को ढाके और अभिमन्त्रित कर छोड़ दे। सूत्रकार को० १०।१

"अथ विवाहः" इससे परिक्रमा करे "पूर्वपरम्" (७।८६) से उपस्थान करे "पतिवेदनं" (२।३६) से कामना करे। ऋग्वेद १०।८५–४०

सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः।
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ॥

तथा अर्यमणं नु देवं कन्या अग्निम् अयक्षत ॥ इति (आश्वला०गृ:१।७-१३) धाता गर्भं दधातु, (धातु,) ऋ० वे० १०।१८४–१

ॐ

❀ अथर्व विधान काण्ड–३ ❀

तृतीय काण्ड में ६ अनुवाक हैं। प्रथम अनुवाक में ५ सूक्त हैं :

सू० १ व २ "अग्निर्नःशत्रून्" अग्निर्नोदूतः " (३।२) इनसे परसेना मोहन कार्य में फली करण मिला, या कणिकिका युक्त ओदन (चावल-भात) का पिण्ड, दक्षिणाग्नि में सांग्रामिकाग्निः) उलूखल से होम करे। और २१ बार शक्कर अभिमन्त्रित कर सूप में रख कर पर सेना की ओर उड़ाये। और अप्वाख्या देवता के लिये चरु होम करे। कौ० २।५।

सू० ३ "अचिक्रदत्" इससे शत्रु के द्वारा भगाये राजा के पुनः अपने राज्य में प्रवेशार्थ शत्रु सेनाकार पुरोडाश को पानी में दाभ विछाकर उस पर उडेल दे। और स्नानार्थ उस पुरोडाश को मिट्टी के ढेलों से पूर्ण कर दे। और दूध-भात मिला अभिमन्त्रित कर राजा को खिलाये। साथ में "आत्वागम" (३।४) कौ० २।७ हैं

इस (३।३) सूक्त से साकमेधाख्य पर्व पर प्रथम दिन स्थापित अग्नि इष्टि में प्रधान होम करे। वै० २।५

सू० ४ "आत्वागन्" सूक्त ३ के साथ देखें। ३।४–७ वीं "पथ्यरेवती" इस ऋचा तथा "वेदः स्वस्ति" (७।२६–१) से प्रायणीष्टी में पथ्या स्वस्ति याग करे। वै० ३।३

सू० ५ "आयमगन् पर्णमणि" इस सूक्त से तेज-वल, आयु धन समृद्धि में ढाक वृक्ष की मणि की प्रतिष्ठा पूजा कर अभिमन्त्रित कर बांधे। यथा (३।५)

"अयंप्रतिसरः" (८ ५) अयं मे वरणः (१०।३) अरातीयोः (१०।६) । कौ ३।२ सम्पत्कामी आङ्गिरसी महाशान्ति कर उपर्युक्त भांति मणि धारण करे। न० क० १९

सू० ६ "तत्र पुमान पुसः" यह दूसरे अनुवाक के ५ सूक्तों मे से प्रथम है। अभिचार कर्म में खदिर (कत्था) के वृक्ष में उत्पन्न प्राप्य पुरुपवाची पीपल की मणिकी प्राण प्रतिष्ठा, पूजन कर इससे अभिमंत्रित कर बांधें। इसी से पाशों को इङ्गिड़ से सुशोभित प्रतिष्ठादि के साथ अभिमन्त्रित कर शत्रु के क्षेत्र में गाड़ दे। इसी मे पाशों की उपर्युक्त क्रिया कर उन्हें " तेधराञ्चः " (३।६–७) ऋचा से नदी के प्रवाह में फेंक दे। इसी प्रकार पूर्वोक्त पाशों को "प्रैणान्नुदे" (३।६–८) ऋचा से पीपल की शाखा से बांध दे। जितने शत्रु हों उतने पाशे ले और उपर्युक्त कर्म "नुदस्व काम" (६।२–४) इस मन्त्र में वर्णित शाखा से लटकायें। कौ० ६।२ अभिचार करने या किये जाने वाले अभिचार में उपर्युक्त सभी कर्मों को करे। न. १ पणुद, उच्चाटन का नाम है।

सू० ७ "हरिणस्य" इस सूक्त से पितृ परम्परागत क्षेत्रिय व्याधि विनाश कर्म में काले बारहसींगों के हरिण के सींग को अभिमन्त्रित कर बांधे, तथा कस्तूरी को घिस कर जल में पिये। मृग चर्म में कील से छेदकर उस भाग को जला जल में डाले, उससे प्रातः उषःकाल, कौए न बोलें उससे पूर्व रोगी को छींटे दे, यवों का होम करे, अभिमन्त्रित कर भात खिलाये। कौ ४।३ ! सभी उपर्युक्त कौमारी नाम की महाशान्ति के कर्म नक्षत्र कल्प में बताये हैं। (न. क. १७—१९) (क्षेत्रीय-व्याधि-दिक, कुष्ठ मृगी, गर्भस्राव, मृतापत्यत्व, वन्ध्यात्व स्वासादि हैं) ऋग्वेद संहिता (१।२३—२०) " अप्सु मे सोम अब्रवीद अन्तर्विश्वानि मेषजा ।।

सू० ८ " आयातु मित्रः " अस्मिन वसुवसवों धारयन्तु" (१।९) विश्वे देवा वसवः" (१।३०) "अमुत्रभूयात्" (७।५५) से उपनयन कर्म में वटुक की नाभि को स्पर्श कर जपे। कौ० ७।६ ।। तथा आयुष्य गण कर्म में इसकी गणना के कारण मेधाजनन में इस गण से होम करे। कौ० ७।८ ऐरावती महाशान्ति इसी से करे (न. क. १८ । परिशिष्ट ५।३ (आयुष्यश्चाभयश्चैव तथा स्वस्त्ययनोगणः प० ५।३ ।

" इहेदसाथ" (३।८–४) ऋचा से विवाह में शुल्क द्रव्य को पृथक् करके 'इदं द्रव्यं तव इदं ममेति द्वाभ्या निवर्तयेत् ।। कौ० १०।५

अथर्व विधान । काण्ड ३

सू० ८ ऋचा ५, ६ "संवोमनांसि" इनसे सामनस्य कर्म में ग्राम के मध्य अभिमन्त्रित घट के जल की धार दे, ३ वर्ष की गौ की बच्ची के पेशाव में भीगे अन्न को सुखा, व्यञ्जन बना अभिमन्त्रित कर खाये, भात में दही, घृत, मधु मिलाकर अभिमन्त्रित कर पिये, और चरणोदक, पञ्चामृत आदि को पिये। कौ० २।३ यथा "संवोमनांसि" (३।८-५) संज्ञानं नः कौ (७।५४) । से उपर्युक्त कर्म करे।

सू० ९ "कर्शफस्य" इस सूक्त से स्पर्धारूप—समस्त विघ्न निवारणार्थ अर्थात् नाखूनों वाले, सींगों वाले, दाँतों वाले, विना दाँतों वाले, सर्प, भृङ्गी, गोह गोधाँ, श्रृगाल, घूंस, व्याघ्रादि, रीछादि, गौ, भैंस आदि बहु प्रकार के विघ्न करने वालों के विघ्न शान्ति के लिये अरलू वृक्ष की बनी मणि की प्राण-प्रतिष्ठा कर उपर्युक्त सूक्त से अभिमन्त्रित कर बाँधे। बाँस का दण्ड धारण करे। युद्ध में शत्रु द्वारा की गई माया को दूर करने के लिये अभिमन्त्रित कर हथियारों को धारण करे, समस्त कार्यों के प्रारम्भ में अनायास आनुसङ्गिक विघ्न निवारणार्थ सूखे चर्म की रस्सी बाँधे। मणि को पिशङ्ग वर्ण के सूत्र में पिरोकर बाँधे। दीपदान दे, धूप दे। इस से शपथ, शाप, ताप, माया, स्पर्धा, छलादि सभी शमन होते हैं । ऐसी विघ्नकर्त्ताओं की स्तुति श्रुतियों में भी है।

द्यौ र्वः पिता पृथिवी माता सोमोभ्राता दितिः स्वसा ॥ ऋ. वे १।१९६।६

"नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीम् अनु"। तै० सं० ४।२।८।३

इस अरलुमणि को ऋग्वेद भाष्य में भरत स्वामी ने कवच के तुल्य विघ्न निवारक माना है। खृगलेव विस्त्रसः पातम् अस्मान् ॥ ऋ २।३९।४ खृगल तनुत्राण (कवच)। यह आलु धूप देने से वात पित्त जन्य दोष तथा इसके पत्तों को और गेहूँ या जौ को साथ-साथ उबालकर सुखाकर आटे को घी में भूनकर मोदक १।१ तोले प्रातः सायं गौ दुग्ध में सेवन करने से समस्त वात रोग शमन होते है वल वीर्य वृद्धि होती है।

सू० १० "प्रथमाह मुवास" इस सूक्त से समस्त पुष्टि कर्मों में घी शाकल्य, वलिदान वस्तुयें तीन वार होम करें। यह अष्टका कर्म के लिये है। ऐसे नव वार सूक्ति पढ़ें। माघकृष्ण अष्टमी को अष्टका कहते हैं। यथा "या माघ्याः पौर्णमास्या उपरिष्टा द्व्यष्टका तस्याम् अष्टमी ज्येष्टया सम्पद्यते ताम् एकाष्टके त्यय चक्षते।

(आप० गृ० २१) उसमें उपर्युक्त कर्म करे। उसमें पंजीरी, पूरी, अपूप, दही, क्षीर, आदि का पूजन केसर भोग लगाये होमकरे घी, मधु, दही (मधुपंक) प्रदान करे। उपर्युक्त पदार्थों के २२१ पिण्ड बनाये और गौ के दांये ओर के रोगों से नीचे के खुर को धोये धोकर रखदे और इस सूक्त की प्रत्येक ऋचासे २१ आहुति दे। क्रम इस प्रकार है—"आयमगंन्त्संवत्सर:" (८।६) ये दो "इडया जुह्वतो वयम्" (११।१२) ये २ "प्रथमा ह व्युवास:' (३) (६-११-५) से ५ इस प्रकार नौ से ६ पिण्डों की आहुति दे "ऋतुभ्यस्त्वा" (३।१०-१०) इस ऋचा से ऋतुभ्यष्ट्टा यजे स्वाहा, आर्तवेभ्यस्त्वा यजे स्वाहा" इस प्रकार सानुचर आठ स्थानों में विभाजित मन्त्रों से ८ पिण्डों का होमकरे "इन्द्रपुत्रे सोमपुत्रे" (३।१०-१३) इस अन्तिम ऋचा से १८ वीं का होम करे। "अहोरात्राभ्यां त्वा यजे स्वहा" (कौ० १४।२) इस सौत्रमन्त्र से १६ वीं का होम करे। "इडायास्पदम्। (३।१०-६) इससे एक, "आमापुष्टे च" (३।१ -७) इससे दूसरी इनसे पशु की दक्षिण बाहु बीसवी का होमकरे। "पूर्णादर्वि" (३।१०-७) इसकी प्रथम को छोड़ दे। इससे २१ वीं पिण्डी को होम करे। तथा पूरी आदि भक्ष्य पदार्थों को भोग लगा बलिवेश्यदेवकर "प्रथमाह व्युवास:" इस सम्पूर्ण सूक्त से ३ आहुतियाँ दे। इस प्रकार पुष्टयर्थ अष्टका पूजन की विधि हैं। कौ० २।२ यह विशेष पूजा क्रम है नित्य अष्टका कर्म में आदि अन्त के सूक्त होम को छोड़ पूर्वोक्त ऋचाओं से २१ आहुति दे। कौ० १४।२ सोमयाग में सोमक्रयणी पद होम "इडायास्पदम्" (३।१०-६) से करे वै० ३।२ कार्तिकीपर साकमेघयाग में "पूर्णा-र्वि" (३।१०।७ से होमकरे (वै २।५

अथर्व विधान—काण्ड ३

सू० १० रात्रि में राजा "यां देवा: प्रतिनन्दन्ति" (३।१०-२) से रात्रि अभिमानिनो देवता का आवाहन करे। पिष्टरात्री कर्म में इसी से रात्रि आवाहन करे "संवत्सरस्य प्रतिमाम्' (३।१०-३) से पिष्टमयी प्रतिमाना उत्तराभिमुखी बिठाये (प० ६।१) इसी में रात्रि को "आमापुष्टे च पोपेच" उपस्थान करे।

सू० ११ "मुञ्चामि त्वा" इस तृतीय अनुवाक के पाँच सूक्तों में प्रथम से बालग्रह तथा निरन्तर स्त्री सम्भोग से उत्पन्न यक्ष्मा के निवारण हेतु पवित्र गन्ध वाली मछली के साथ भात को अभिमन्त्रित कर रोगी को भोजन के समय खिलाये। इसी सूक्त से जंगल में उत्पन्न तिलों के ईधन से तपाये (गर्म) जल से उषाकाल में जंगल या एकान्तघर में रोगी को छीटे, स्नान, पान कराये। तथा जंगली सन, जंगली

शुष्कगोमय से शान्ति औषधियों की पोटली पड़े" जल को गर्मकर उषा काल में रोगी को छींटे स्नान पान कराये। तथा अन्य समस्त व्याधियों के निवारणार्थ रोगी को स्पर्श कर इसी सूक्त से अभिमन्त्रित करे।

यह सूक्त अंहोलिंग, गण में है उसके समस्त कर्मो में उसी भाँति विनियोग करे। कौ०४:८ उसके बीच यजमान के रोगी हो जाने पर भी "मुञ्चामित्वा" (३।११) अश्नीभ्यां ते (२।३३) उतदेवा: (४।१३) से उपर्युक्त समस्त कर्म करे (वै६७।३)

सूत्र० १२ "इहैवध्रुवाम्" यह वास्तोष्पातिगण 'एह यातु (६।७३) यमोमृत्युः' (६।९३) "सत्यं बृहत्" १२।१) यह अनुवाक् सब गण है। इस गण से नूतन भवन निर्माण वाली भूमि को हल से जोते। यह चतुर्गणी महाशान्ती के कर्ममि विहित है। उपरोक्त नूतन भवन निर्माण के खात (नीव) ऊँचा स्थाई पत्थरादि निशान इससे ही अभिमन्त्रित कर बनाये गाड़े। "इहैव ध्रुवां" (३।१२+१,२) से शाला भी भूमि को दृढ़ करे इकसार करे। "ऋतेनस्थूणाम्" (३।१२-६ से घी से चुपड़कर ऊँचावास (खम्भ) गाड़ दे। "पूर्णं नारि" (३।१२-८) इस ऋचा से नूतन गृह प्रवेश के समय नवीन स्वास्तिक, मौलि, पल्लव, दूर्वा, तिल, सरसों, पुष्पमाला आदि युक्त २ घट सौभाग्यवती स्त्री (पत्नी) प्रथम लेकर प्रवेश करे। हवन पूजन परिक्रमा प्रार्थनादि कर्म करे। कौ०५।७

सू० १३ "यदद: सम्प्रयती:" यह सूक्त अपनी सुविधा व इच्छा के अनुकूल व नदी के प्रवाह कराने के कर्म के लिये निहित है। जिस मार्ग से प्रवाहित करना है उस क्षेत्र को प्रथम खोदकर उस प्रदेश में इसी सूक्त से जल छिड़कता हुआ प्रस्थान करे। और इसी सूक्त से कांस, शैवालघास, पटेर, वेंत आदि की शाखा प्रत्येक को अभिमन्त्रित कर उस खोदी भूमि में डालें गाड़ दे। "इदं व आप:" (३।१३-१) इस ऋचा के प्रथम पाद से खाद (गड्ढे) में स्वर्ण रख दे। "अयं-वतन:" (३।१३-१) के द्वितीय पाद से चित्रित मण्डूक, प्रतिमा नीले, लाल सूत्रों से बाँधकर अभिमन्त्रित कर खात में रक्खे। उस मण्डूक पर "इहेत्थम्" ३।१३-७) के तृतीय पाद छाया की (छान) अभिमन्त्रित कर ढाक दे। "यत्रेदम्" (३।१३-७) के चौथे पाद से मण्डूक पर पानी छोड़े।

ग्राम, नगरादि के नवीनतम जल के प्रवाह के भय में नदी नाले के प्रवाहित करने के हेतु काले धानों से संयुक्त चरु, काली गौ के दूध व घी से पक्व वेत के स्रुवासे वरुण देवता के निमित्त ३ वार होम कर। और वैतस (वेत) के कटोरे

में वेतस की मथनी से दही सक्तू के मन्थ को मथकर इससे बलिदान दे। तत्पश्चात् इसी सूक्त से वेतस की शाखा को अभिमन्त्रित कर उससे या हाथ से मन्त्रित जल से नदी प्रवाह को छिड़कता हुआ आगे-आगे चढ़े।

अथर्व विधान काण्ड ३

सू० १३—नियत प्रवाह स्थान को छोड़कर नदी के दूर प्रवाहित स्थान से पुनः पूर्व स्थान को वापिस जाने के लिये इसी सूक्त को जपकर नदी के प्रवेश मार्ग में छोड़े। दारिल भाष्यकार ने "प्रसेचनकर्म, हिरण्यकर्म, मण्डूककर्म, पाणिकर्म, ये एक साथ सभी क्रमशः करने का मतव्यक्त किया है जो समुचित ही है।

इसीका रेखाङ्कित का नाम है जो पीछे वर्णित है। कौ० ५।४ तथा इसी ३।१३ सूक्त से मरुद्गण तथा मन्त्र में वर्णित देवताओं के निमित्त होम कर, काश, दिवि, धुत्रक, वेतस आदि औषधि विशेष एक जल पात्र में डालकर अभिमन्त्रित कर जल के बीच नीचे मुख कर उडेलते हुए, उन काश आदि की प्रतिष्ठा दीप, धूप, गन्धादि से पूजा कर अभिमन्त्रित कर जल में बहाये अपने तथा मेघ के शिरस को अभिमन्त्रित देने जल में फेंक दे। मनुष्य के बाल और पुरानी जूती बांस पर बांध, तुष्पादि से युक्त अभिमन्त्रित जल से छीटे दे तीन पाद के छींके पर रख जल के बीच फेंक दे। यह दृष्टि भी कामना वाले अभिवर्षण कर्म करें।

तथा इसी सूक्त से अर्थोत्थापन विघ्न शमनार्थ होम पूजित अभिमन्त्रित घर के जल से स्नान व अभिषेक करे। यथा "अर्थम् उत्थास्यन्नुपधीत्" यह प्रार्थना व सङ्कल्पकर "अम्बयो यन्ति" (१।४) शंम्भुमयोमुः। (१ ५,-६) हिरण्यवर्णाः (१।३३) यददः (३।१३) से कर्म करे। कौ ५.५

सूत्र० १४ "संवोगोष्ठेन" इस सूक्त से गोपुष्टि प्रजनन कर्म में प्रथम बार की ब्याई गौ के दूध में नवीन गौ के बच्चे का फेन मिला पूजा व अभिमन्त्रित कर खायें।

गोपुष्टिकामी - अभिमन्त्रित कर गौ को दे। पात्र में जल अभिमन्त्रित कर मार्ग में धार दे। तथा करीया पर बायें हाथ से आक्रमण कर दायें से आधे को गौ मार्ग में डालें इसी सूक्त से बछड़े के तुल्य चावल भात के पिण्डों को गुग्गुल

लवण से युक्त कर तीन रात्रि अग्नि (भूभर) में गाढ़दें। चौथे दिन प्रातः पूजा व अभिमन्त्रित कर खिलायें। यदि उस ओदन में विकार न हुआ तो खिलाये। विकार हो गया हो तो अनशन करायें न खाने परभी फल पूर्ण होगा ऐसा समझले। कौ० ३।२

सू० १५ "इन्द्रम् अहं वणिजम्" यह सूक्त वाणिज्य कर्म से लाभकारी कर्म में विहित है। विक्री की वस्तु दुकान को ले जाते समय विक्री से लाभार्थ कर्म करे। इससे जल युक्त घर में वज्र, वस्त्र, सुपाड़ी, रत्नादि, गौ, घोड़ा, हाथी आदि को पूजकर अभिमन्त्रित कर उठाये। कौ० ७।१ और इसी से वाणिज्य लाभार्थ इन्द्रदेव की पूजा होमादि। उपस्थान स्तुति करें। कौ० ७।१०

तथा क्रव्याशमन में "विश्चवहाते (३।१५-८) इस ऋचा से पूर्णाहुति दे। कौ० ६।२

सू० १६–चतुर्थ अनुवाक के पाँच सूक्तों में प्रथम "प्रातरग्निम्" है इससे मेधा ब्रह्मवर्च आध्यात्मिक दैवी शक्ति प्राप्ति हेतु प्रातः उठते ही हाथ मुँह धोकर प्रणाम कर (३।१६) मीरावरगराटेपु (६।६६) दिवस्टार्यव्याः (६।१) से स्तुतिकर पुनः मुँह धोये। कौं० २।१

इसी से वर्चस्कामी ब्राह्मण को दधि, मधु, मिला धूप दीप कर अभिमन्त्रित करके खिलाये। क्षत्रिय को मधुपर्कमिश्रित अन्न; वैश्य को केवल भात खिलायें। "ममाग्ने वर्चः" (५।३) प्रार्थना संकल्प कर उपर्युक्त सूक्तों से अभिमन्त्रित करे कौ० २।३ उपर्युक्त कामना में सिंह व्याघ्रादि मन्त्रोक्त' में से किसी के भी नाभि के बालों में लाख लपेट, अभिमन्त्रित कर बाँधें ब्राह्मणेतर क्षतिय वैश्य उपर्युक्त कर्म में उपरोक्त ७ में से कोई भी या सातों ही के मर्म मृतचर्म छेद भात अदि स्थाली में मिलाकर दें

अथर्व विधान काण्ड–३

सू० १६—स्थाली पाक की पूजा वाले वैश्वदेव करो अभिमन्त्रित को उसके साथ खायें। जल में मिला अभिमन्त्रित कर छींटे, स्नान, पान करे। यह गार्ग्य का मत है। (कौ० २।४)

सू० १७—"सीरायुज्जन्ति" इस सूक्त से कृषि उत्पादन वृद्धि कर्म में खेत में दोनों ओर जुए के गातों को ठीक करे बाँधे। इसी से सीधे (दायें) बैल को जुए में

लगाये। तदनन्तर कर्त्ता इसी सूक्त से पुराने को जोतते हुए सूक्त समाप्त होने पर हल हलवाहक को हल सौंपे। यह ३ कूँड खींचे तीसरे के अन्त में अग्नि स्थापनकर इसी सूक्त से इन्द्र देव को होमकर बैलों की पूजा कर अन्तिम कूड़ पर गन्ध, अक्षत, पुष्प पुष्प, धूप कर हल को ले आये यह शुभचन्द्र व नक्षत्र में रवि. सोमवार को छोड़ अन्य दिनों में करे। पशुओं की पुष्टता के हेतु पूर्वोक्त भाँति से तय्यार लवण गुग्गुल दाने, चारे, पानी में से किसी में भी डालकर अभिमन्त्रित कर खिलाये। "सीता-वन्दामहे" (३।१७-८) इस ऋचा को तीन कूड़ (उपर्युक्त) खींचने वाला हलवाहक प्रत्येक केन्द्र को अनुमन्त्रित करे। कौ० ३।३।

यह वोने योग्य भूमि में बीज बोते समय अनिवार्य रूप से कृषक जन करें। अद्भुत शान्ति कर्म में जब कूड़ में जुआ या हल या पनिहारी आदि फटे में इसी से शान्ति जल से छींटे स्नान, पान कर्त्ता स्वयं बैलों व भूमि पूजन करे। कौ १३।१।

यज्ञ वास्तु पूजनादि "इन्द्रः सीतां निगृह्णातु" (३।१७-४) से नवीन अग्नि स्थापन काल में (अग्नियंत्र) वनाये। "देवस्य त्वासवितुः" (१९।५१-२) से समिधादान (विमान काष्ठ) गृहण करे। उल्लेखन् दक्षिण से उत्तर को रेखायें खींचे। ये ३।३ मध्य व वाह्य में खींचें। कौ० १४।१।

अग्नि चयन कर्म में खेत जोतने-वोने में अग्नि "सीरायुञ्जन्ति" (३।१७-१) से ब्रह्मा अनुमन्त्रित करें। "लाङ्गलं पवीरवत" (३।१७-३) हल जोतने बोने से पूर्व रार व जूआ-कुश को अनुमन्त्रित करे। "कृते योनौ" (३।१७-२) से जुते हुए वोने योग्य खेत में बीज बोते समय बोने वाले को अनुमन्त्रित करे। वै० ५।१ "अन्नं वै विराट" तै क्रा० ३।८।१०।४ "यदा अन्नं पच्यतेथ तत्सृण्योपचरन्ति" श० क्रा० ७।२।२।५।

सू० १८—"इमां खनामि" इस सूक्त से सौत (पुंश्चली स्त्री) पर विजय प्राप्ति कर्म में वाणापर्णी के पत्तों को लाल बकरी के दही के जल में मिला अभिमन्त्रित करे। सौत के सोने के मकान स्थान, चारपाई, विस्तर पर छिड़कें। "अभितेधाम्" (३।१८-६) इस पाद से उन वाणापर्णी के पत्तों को अभिमन्त्रित कर सोती हुई सौत के ऊपर डाले। (कौ० ४।१२)

वाद विवाद में जय प्राप्ति के लिये "अहम् अस्मि सहमाना" (३।१८-५ से अन्तिम सूक्त पर्यन्त जपता हुआ ईशान दिशा से सभास्थल को प्रस्थान करे। कौ० ५।२ "पाटाम् इन्द्रो व्याश्नाद् असुरेभ्यस्तरीतवे" (२।२७-४) निगमः।

सू० १६ "सशितं मे" से शत्रुदल को उद्वेग कराने के लिये आज्य होम करके बकरी या भेढ़ की पूजा प्रतिष्ठा कर अभिमन्त्रित कर शत्रु सेना की ओर छोड़ दे। संग्राम में जयकामी इस सूक्त से घी, सक्तु होम, धनुष की लकड़ी की समिधायें तथा राजा को अभिमन्त्रित कर आयुध प्रदान करें। कौं० २।५।

अग्नि चयन में लाई गई अग्नि को इसी सूक्त से ब्रह्मा अनुमन्त्रित करे। वैं० ५।१ महायुद्ध काल में "अवसृष्टा परापत" (२।१८-८) ऋचा से छोड़े जाने वाले प्रक्षेयणारन्त्रों को अनुमान्त्रित करे। (वैं० ६।४)

सू० २० "अयं ते योनिः', से नैर्ऋतिकर्म में धान मिलीशर्करा से होम करे। कौ०३।१ अर्थोत्थपन विघ्न शमनार्थ इस सूक्त से पूर्वोक्त १३ वस्तुओं से होम करे। और इन सूक्तों को जपा करे। "अयं ते योनिः" (३।२०) आनोभर (५।७) धीती वा (७।१) इनका अर्थोत्थापन कर्म कर निरन्तर जपकरे। कौ०५।५। इसीसे अरणी का या अपनी ही अग्निहोत्र की अग्नि से समारोपण करे। कौ०५।४ तथा सत्रयज्ञ में होम राजानम्' (३।२०–४) से भृगु अङ्गिरा, सोम, सूर्य,मित्र, वरुण, अग्नि, ब्रह्मादिक का आवाहन पूजन वंदनादि करें।

अर्थव विधान काण्ड—३

सू० २० अग्नि चयन में इसी से गार्हपत्येष्टि को अनुमन्त्रित करे। वै० ५।१ इसी कर्म में गूलर की समिधार्पिस करके "उदएनम् उत्तरं नय (६।५) से समिधाधान पूजा संकल्प स्तुति "चत्वारिश्शृङ्गा (ऋ. सं: ४।५८-३) अभ्यर्चत (७।८७) जपे "अग्ने अच्छ" इन ३ (३+२०–२ से ४) अर्यमणं बृहस्पतिम्" (७।८) ये २ "वाजस्य नु प्रसवे" (३.२०-८) से वाज प्रसवींय होम करे (वै० ।५।२ वाज=अन्न) "अन्नाभद्रतानि जायन्ते। जातान्यन्नेन वर्धन्ते" (वै० आ०८।२) इतिश्रुतेः। "षण्मोर्वीरंहस्यान्तु द्यौश्च पृथिवी चाहश्च रात्रिश्चापश्चौषधिश्च" (आश्च० १-२) ये ६ तथा पाँचों पूर्वादि ४ व मध्य दिशायें परन्तु "द्रुहांमे पञ्ज" (३।२०-६) में वर्णित उपर्युक्त कर्म फल प्राप्ति के साधन भूत (मानस संकल्प विकल्प हेतु भूतया अन्तः करण वृत्या हृदयेन, हृदयोपलक्षितरन्तः करणेन च। यद्यत फल जातं सकलपयामि तत् सर्वं फल जातं संकल्पयामि तत सर्व फलं मनोव्यापार मात्रेण प्राप्तुयाम इत्याशासे"

सू० २१—"ये अग्नयः "यह पांचवे अनुवाक् के पाँच सूक्तों में प्रथम है। इन प्रथम ३ कौ० ७ ऋचाओं से क्रव्यात्-दोष से नष्ट गृह, गोष्ठ, क्षेत्र, धन, धान्यादि की शान्ति हेतु मणिधारण, होम, जप, उपस्थान, शान्ति जल सेचन, स्नान, पानादि करें। ये सब कर्म ढाक वृक्ष की बनी मणि कटोरे में समिधा पत्तों सहित जौ से होमादि होंगे तथा इन १० ऋचाओं के सम्पूर्ण सूक्त से क्रव्यात्-शमनार्थ सक्तू जल मिश्र काम्पील की २ टहनियों से मथकर उस में घी आदि मिला पलाश के सुवा से प्रत्येक ऋचा से होम करे। तथा इसी सूक्त से वन्ध्या गौ को अभिमन्त्रित कर ब्राह्मण को दान करे इससे वशा (वन्ध्या गौ) उत्पन्न पारवारिक दोष शान्त होगा। कौ०५।७ तथा यदि वपा या हव्य पदार्थ को कौआ, कुत्ता, उलूक, चौपाये पतितमनुष्यादि लेजावें तो उसके प्रायश्चित्तार्थ इन १० ऋचाओं से घृत होम करे। 'ये अग्नय." (३।२१) नमो देववधेभ्यः (६।१३)। कौ० १६।३१।। ये आदि की ऋचायें वृहच्चान्ति गण में है। गण विहित कर्म भी करें।

सोमस्कन्दन में भी "ये अग्नयः" इन ७ मे ब्रह्मा होम करें। व०३।६

आवसथ्याधरन (मांसभक्षी अग्नि:) में क्रव्यात् दोष शान्त कर घर आकर इन्ही ७ से होम करे। "अन्तर्धिः" (१२।२-४४) प्रत्यञ्चम् अर्कम् (१२।२-५५) अग्नयः (३।२१) नमो देव वधेभ्यः (६।१३) कौ० ६।४

वही क्रव्यात् से अग्नि के शमनार्थ "हिरव्यपाणिम्" इन (३।२१-८।९।१६) से सक्तु मन्थ का होम करे। व्याकरोमि (१२।२-३२) से गार्हपत्यक्रव्यादि (कौ ६।२) का संकल्पित पूजनादिकर "अन्येभ्यस्त्वा" (१२।२-१६) हिरण्यपाणिम् (३।२१-८-१०) से शान्ति करे। कौ० ६।३।।

चतुर्मास (शरद) के साक मेध पर्व पर आतिथ्येष्टि के उपरान्त "दिवपृथिवीम्" (३।२१-७) से अग्नि का उपस्थान करे। "उदस्त केतवः" (१३।२) से आदित्य का उपस्थान करे। वै० २।५

सू० २२ "हस्तिवर्च्चसम्" इस सूक्त से तेज की कामना वाले व्यक्ति हाथी दाँत को स्पर्श कर उस्थान करें और हाथी दाँत की बनी मणि की प्रतिष्ठादि कर अभिमान्त्रिव कर बाँधें।

"ममाग्नेः वर्चः" (५।३) ये वर्च प्रदायक है (कौ० २।३) से प्रार्थनादिकर उपर्युक्त मणि धारण करे (कौ० २।४) इसी से पुरोहित हाथी को अभिमन्त्रित कर

प्रातः राजा को दे यथा "वातरंहाः" (६।९२ से अश्वः। हास्तिवर्चसम् (३।२२) से हाथी को दे (प० ४।१

ब्रह्मवर्चस् कामना वाले, वस्त्र धारण, शयन तथा अग्नि स्थापनादि में ब्राह्मी नाम की महाशान्ति करें तथा हस्ति दन्तमणि धारण में भी यही करें। न० का०१६

अथर्व विधान काण्ड—३

सू० २३ "येन वेहद् वभूविथः" इस ३।२३ वे सूक्त से पुंसवन कर्म (गर्भाधान से ६६ दिन पर्यन्त ही संस्कार में वाण को अभिमन्त्रित कर स्त्री के शिर पर रक्खें।

इसी कर्म में, इसी सूक्त से शरमणि की प्रतिष्ठा–पूजा, होमादि कर अभिमन्त्रित कर बाँधें। इसी से (चमस) पात्रों में गौ के दूध में फल-जौ का सत्तू-धान डालकर मथकर होम करें तथा स्त्री को खिलायें। और ढाक के फूल विदारी कन्द रात्रि में भिगोकर पुसंवन के समय पीसकर अभिमन्त्रित कर दायें हाथ के अंगूठे से स्त्री के दायें नथने में सुधायें। (कौ० ४।११

सू० २४ "पयस्वतीः" इसे धन्य सम्वृद्धि कर्म के लिये समझें। कौ० ३।४

"पयस्वतीः" इस प्रथम ऋचासे पितृमेध कर्म में शव दाह कर स्नान करें।

सू० २५ "उत्तुदस्त्वा" इस सूक्त को जपता हुआ स्त्री वशीकरणार्थ अङ्गुलि से स्त्री को अङ्गुलि से निर्देश कर। और घी से युक्त २१ वेर के कांठे एकत्रित कर उनके सिरों को धागे से ढककर इसीसे एक साथ होम करे।

इसी से कुष्ठ के घाव को (मक्खन) से चुपड़ कर तीनों काल अग्नि से सेक करे। इसी से खाट के नीचे पाटी को पकड़कर ३ रात्रि सोये। इसी से तीन पाद के छींके पर गर्मजल रखकर टारे और अंगूठों से मचलता हुआ सोये। प्रतिकृति वना प्रतिष्ठा कर उसके हृदय में वाण (शूल) छेदे। कौ० ४।११

सू० २६ "येस्यां स्थ" यह छटवें अनुवाक के ६ सूक्तों में प्रथम हैं। इससे अपनी सेना के मनोवल को प्रवल वनाने हेतु प्रत्येक ऋचा से प्रत्येक दिशा में उपस्थान करे। "दिग्युक्ताभ्यां (३।२६-२७) नमो देववधेभ्यः" (६।१३)। कौ०२।५

स्वस्त्ययन कर्म में इन्हीं सूक्तों से ढाक आदि शान्ति समिधाओं से आज्यादि १३ पदार्थों के भोग (पुरोडाश) से होम करे। "दिग्युक्ताभ्याम्" (३।२६,२७) दोघोगाय (६।१) "पातंन" (६।३-७) ये पाँच, अनुडुद्भयः (६।५९) यमोमृत्युः (६।९३) विश्वजित् (६।१०७) शकधूमम् (६।१२८) कौ० ७।१

इन्हीं २ सूक्तों से इसी कर्म में होमान्त प्रत्येक दशा में दिक्पालों को वलिदान दे और उपस्थान करे। (चारों दिशा पाँचवी मध्य में) कौ० ७।२

इन्हीं से साँप, बिच्छू आदि के भय निवारणार्थ वालू अभिमन्त्रित कर चारों ओर फैंके। और शान्ति वृक्ष अपामार्गादि के तिनकों की माला अभिमन्त्रित कर घर खेत, गोष्ठ आदि के द्वारों में अभिमन्त्रित कर बाँधें। इन्हीं से शुष्क गोमय को अभिमन्त्रित कर उस में डालें। छार में गाडें उसी को अग्नि में होमे। और अपामार्ग की वालि (मञ्जरी) या गुडूची को अभिमन्त्रित कर उपर्युक्त सभी कर्म करे।

"युक्तयोः" (२६-२७) "मानो देवाः" (६।५६) "यस्ते सर्पः" (१२।१+४६) यह शयन घर में पृथ्वी पर लिखें। कौ० ७।१। तथा तीस महा शान्तियों में "येस्यां" सूक्त से प्रत्येक दिशा में होम करे। "प्राचीदिक" (६।२७) से प्रत्येक दिशा में उत्थान करें। न० क० २२।। सू० ३।२७ भी (३।२६) के कर्मो में विहित है।

सू० २८ "एकैकयैषा सृष्ट्या" इस सूक्त से गौ, गदही, भैंस, स्त्री-के एक साथ एक से अधिक बच्चे होने पर अद्भुत कर्म जनित दोष निवारणार्थ आज्य होम करें। माता व बच्चे के शिरों पर शान्ति औषधियों को रखकर अभिमन्त्रित कर शान्ति जल से छींटे दें स्नान पान कराये। (कौ० १३।१७ व १९)

अर्थव विधान काण्ड—३

सू० २९ "यद् राजानः" इन ५ ऋचाओं से ही ओदन सर्व कर्म में अर्थात् इष्टा पूर्त कर्म में-षोड़शकर्मों में ५ वलि (अपूप) आदि होम आदि करें। (कौ०६।१) अर्थात् पशु के चारों पैर एक नाभि (विश्वदेव) कर्म (इष्टम्—श्रुति विहितंयागादि कर्म, आपूर्तम्—स्मृतिविहितं वापी कूप तड़ाग आदि धर्मार्थ निर्माण कर्म)

"क इदं कस्मै" इन दो से ग्राह्य, अग्राह्य, दुष्टादुष्ट दान के दोष के निवारणार्थ प्रतिग्राह्य दान पदार्थ को अभिमन्त्रित कर गृहीता लें। "क इदं कस्मा अदात्

(३।२९–७८) "कामस्तदात्रे" (१९।५२) यद् अन्नम्" (६।७१) पुनर्मैत्विन्द्रेयम् (७।६६) से अभिमन्त्रित कर ग्रहण करे। कौ ५।६

"भूमिष्ट्वा" (३।२९-८) से भूमि को प्रति ग्रहण करें।

ग्रह याग में "यद् राजनः" से बध का आज्य होम, समिधा दान, बलिदान उपस्थान करे। शां० क० यद् राजनः (३।२९) सोमस्यांशो युधांपते (७।८६-त) बध के लिये कर्म करे। शां० क० १५ स्वर्ग की परिभाषा

दुःखेन यन्न सभिन्नं न च ग्रस्तम् अनन्तरम्
अभिलाषोपनीतं च सुखं स्वर्गपदास्पदम् ।

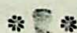
सू० ३० "सहृदयं सांमनुष्यम्" इस सूक्त से सांमनस्य कर्म से ग्राम के मध्य अभिमन्त्रित पूजा प्रतिष्ठान्त घर के जल को अर्घ्यवत ढारे। उसी प्रकार सुरा पात्रों को ढारे। ३ वर्प की गौ की बच्ची के पेशाव में मिगाकर सुखाकर अन्न के बने पदार्थ को खाये तथा अभिमन्त्रित जल से छीटे स्नान, पान करें।

"सहृदयम्" (३।३०) तद्पुते (५।१-५) सं जानीध्वम् (६।६४) कौ० २।३ उपाकर्म में आज्य होम इसी सें करें। विश्वकर्मगण, आयुष्यगण तथा स्वस्त्ययन गण से होम का विधान है। कौ० १४।३

सू० १३ "विदेवाजरसा" इस सूक्त से यज्ञोपवीत संस्कार के उपरान्त दीर्घायु की कामना से छात्र के शरीर को आचार्य अभिमन्त्रित करें। "उतदेवाः" (४.१३) विपासहिम् (१७।१) कौ० ७ ६

पितृमेघ में दाह संस्कार कर जल के पास ब्रह्मा जपें।

आग्रहायणी कर्म में "उदायुषा" (१०।११) इन २ ऋचाओं से उत्थापन करे। कौ० ३.७ सोमक्रयणानन्तर "उदायुषा (१०) से हीब्रह्मा उठें। वै० (३।३)





अथर्व विधान काण्ड–४

चतुर्थ काण्ड में ८ अनुवाक हैं। प्रथम अनुवाक में ५ सूक्त हैं।

सू० १ "ब्रह्मजज्ञानम्" इस सूक्त को वेद-कल्प आदि के पठन-पाठन सम्बन्धी विघ्नों के निराकरणार्थ, तथा शास्त्रों के वाद विवाद में प्रतिवादी जयार्थ जप करे। कौ० ५।२

इसी से गौपष्टि कर्म में, गौओं के रोग निवारण में, नमक को अभिमन्त्रित कर गौओं को पिलाये। बावड़ी, तडाग आदि के जल को अभिमन्त्रित कर पिलाये। यथा "ब्रह्मजज्ञानम्" (४।१) "आगाव:" एकाचमें" (४।१५) कौ० ३.२ को देखें।

यह वृहच्छान्तिगण में है, उस गण के समस्त कार्यों में विहित है। विवाह में चतुर्थी कर्म में वर इसी सूक्त से अंगूठे से प्रजनन स्थान का स्पर्श करे। कौ० १०।५ तथा उपाकर्म में उपाध्याय इसी को जपे। सूत्रकार—"अव्यसश्च" ' ' ६।६=) इसे जपे पुनः सावित्री पुनः "ब्रह्मजज्ञानम्" इस एक ऋचा को जपे। कौ. ७।३

प्रवार्य कर्म में इसी ४।१ को निधीय मान महावीर को अनुमन्त्रित करे (४।१) इयं पित्र्या (४ २) अस्त्र शास्त्र के तुल्य आधी ऋचा से (वै० ३।४) तथा अग्नि चयन में हिरणमय स्तम्भ निधीयमान को अनुमन्त्रित करे। वै० ५।१ तथा

ब्रह्मवर्चस्कामी वस्त्र, शयन, अग्नि-ज्वलन में, ब्राह्मी महा शान्ति में इसी ४।१ को जपे (न. क. १७,)

सुत्न पुरुष विधि में इसी ४।१ से होम करे। महाव्याहृति, सावित्री, शंनो देवी, शान्ती तथा ब्रह्मजज्ञानम् से होम करे (प. ११।१)

सू० २ "य आत्मदा" इससे वशा (वन्ध्या गौ,) के दोष निवारणार्थ शान्ति जल से छींटे दे। यदि उसे गर्भ रह जाय तो अञ्जलि में लेकर स्वर्ण सहित ३ बार इसी से परिक्रमा कर होम करे।

चतुर्मास व्रत में 'वरुण प्रचास' नामक पर्व पर इसी से वरुण व मरुद्गणों को

एक कपाल चरु अभिमन्त्रित कर होम करे। वै० २।४ तथा प्राजापत्य व्रत के अवदान में इसी से होम करे। वै० ५.१। और उसी में "हिरण्यगर्भः (४।१—७) से स्वर्णमय पुरुष दान में इससे अनुमन्त्रण करे। वै० ५।१)

सू० ३—"उदितस्त्रयो अक्रमन्" इस सूक्त से गौ आदि को व्याघ्र, चोर आदि के भय निवारणार्थ खदिर (कत्था) की लकड़ी की मेखें अभिमन्त्रित कर उनसे गोचर भूमि को कीले। शान्ति जल अभिमन्त्रित कर उस भूमि को छिड़के तथा जल डाल दे। मार्ग की रज ले, इसी से अभिमन्त्रित कर उसी भूमि में आधी सीधे हाथ से बुरकी दें। इन्द्रदेव को होम करे। कौ० ७।२

सू०—४ "यां त्वा गन्धर्व" इस सूक्त से पुरुष के वीर्य-वृद्धि के लिये कहत वृक्ष की जड़, पूजन कर खोदे, गौ के दूध में मिला अभिमन्त्रित करे। धनुष पर बाण चढ़ा, गोद में रखकर तथा प्रजनन इन्द्रिय को ऊपर तानते हुए पुरुषपीये तो वीर्य दोष दूर हों, वीर्य स्तम्भन हो, वीर्य वृद्धि हो। कौ० ५.४ अथवा कील या मूसल पर बैठ कर पूर्ववत् अभिमन्त्रित कर पिये।

सू० ५ —"सहस्रशृङ्ग" इससे स्त्री-गमन-काल में, उसको तथा समीपवर्ति जनों के सुलाने के लिये मिट्टी के पात्र में जल अभिमन्त्रित कर सोने के स्थान पर छिड़के शेष द्वार के अन्दर डाल दे और नग्न होकर इसी से ओखली अभिमन्त्रित करे और उत्तर की ओर के सींकचे पे स्त्री की चारपाई के सीधे पाये व रस्सी को अभिमन्त्रित करे। कौ० ४'१२

सू०—६ "ब्राह्मणो यज्ञे" "वारिदम्" इन दो सूक्तों से कन्दाविष निराकणार्थ जल अभिमन्त्रित कर छींटे रोगी को दें, उसे पिलायें। तथा क्रमुक वृक्ष की छाल को जल में डालकर अभिमन्त्रित कर छींटे दे, पिलाये। तथा पुराने मृग-चर्म तथा स्वतः गिरी सीकों को जल में डाल कर, अभिमन्त्रित कर, रोगी को छींटे दे, पिलाये। और विष के रोगी को स्नान कराये।

तथा ऊर्ध्वफली (विषैली) के चूर्ण को अभिमन्त्रित कर पिलाये। मदनफल (मैनफल) को प्रति ऋचा से अभिमन्त्रित करे और जैसे वमन हो खिलाये। घी में हल्दी मिला, अभिमन्त्रित कर रोगी को पिलाये। तक्षक का जप, उपस्थान करे।

सू—७ "भूतोभूतस्य" इससे छोटा, या बड़ा राज्याभिषेक तथा जप पुरोहित करें। तथा स्थालीपाक से अंग को अभिमन्त्रित करे और अभिमन्त्रित घोड़े पर चढ़, अपराजित दिशा को गमन राजा करे।

राजसूय-यज्ञ में आसनों पर बैठे राजा का राज्याभिषेक करे। वै० ७।१

सू० ९—"एहिजीवस्य" इससे यज्ञोपवीत के उपरान्त शिशु को दीर्घायु के लिये अभिमन्त्रित कर अञ्जनमणि बांधे। इससे ही गण विनाश दूर करने को ऐरावती नाम्नी महाशान्ति कर बांधे। न. क. १९

सू० १०—"त्राताज्जातः" इससे जलभय में, तथा उपर्युक्त सू० ९ के कर्मों में शस्त्रमणि बांधे। न. क. १९ कौ० ७६

सू० ११—"अनड्वान दाधार" "सूर्यस्य रश्मिम्" ४।३=, ५—७) से ऋषभ को छोड़ने में पूजन, दाता के वचनादि करे। "आशानाम्" (१।३१) से सर्वत्र अभिमर्शन करे। कौ० ८।७

सू० १२—"रोहिण्यसि" इससे शास्त्रादि की चोट से निकले खून प्रवाह, या हड्डी टूटने से उत्पन्न व्यथा के निवारणार्थ, लाख के जल का क्वाथ कर, अभिमंत्रित कर उषा काल में चोट के स्थान को धोये। और दूध में घी डाल अभिमन्त्रित कर चोट वाले पुरुष को पिलाये। उपर्युक्त वस्तुयें चोट से बांधें। कौ० ४।४

सू० १३—"उतदेवाः" इससे यज्ञोपवीतान्त छात्र की दीर्घायु हेतु अभिमर्शन करे "वि देवाजरसा" (३।३१) (४।१३) आवतस्ते" (५।३०) "विषांसहिम् (१७।१) तथा ऋषि के हाथ से छात्र के शरीर के अनुमन्त्रण में भी येही मन्त्र हैं। तथा लघुगण "हिरण्य वर्णाः (१।६३) शंतातीयम् (४।१३) यद्यन्तरिक्षे (७।६८) इनको शंतातीय गण (लघुगण कार्यों के साथ विनियोग विधान है। कौ० ११।९। यह अहोलिङ्गगण में होने से उस गण के कार्यों में विनियोग करे।

यज्ञ काल में यजमान के रोगोपशमनार्थ भी (४।१३) अक्षीभ्यांतते (२।३३) मुञ्चामि त्वा (३।११) से होम स्नान, छींटे अभिमर्शनादिका विधान है। वै० ७।

सू० १४—"अजोह्यग्ने" इस सूक्त से अजौदन-सव (मेषावलि) में हवि

का अभिमर्शनादि ऋचा २ ३, ४ से समस्त कार्य करे। दाता से कहे, स्नान करे। अभिमर्शन कर अर्पित करे। ये तीनों समस्त सब यज्ञों (वलि) में विनियोग करें। वै० ५।२ ऋचा ३ "आनेप्रेहि" इससे समस्त भागों में आज्या होम करे। (४।१४–५ समाविनुष्व (११।१ –३६) कौ० ८।५। "पञ्चौदनम्" (७।८) इन दो से सब यज्ञों में भोजन के ५ भाग कर शिर पार्श्वादिभाग पूर्वादि दिशाओं में विभक्त कर स्थापित करे। मध्य में पांचवां रखे कौ० ८।५।

ऋचा ९—" शृतम् अगम्" से शिर पाद आदि से युक्त अज (मेष) का होम करे। कौ० ८।५। वाजपेय यज्ञ में " पृष्टा पृथिव्याः" इससे यूप ऋचा को चढ़ा यजमान जपे। वै० ४।३ वरुण प्रघास काल में (४।१४—५) अग्नेप्रेहि" का ब्रह्मा जप करे। यह आषाढा नक्षत्र की पूर्णिमा में करे। वै० २४।

सोमयाग में उत्तर वेदि प्रणयन (हवन काल में) में भी इसे जपे। वै० ३।५

सू० १५—"समुत्पतन्तु" इससे वृष्टि के निमित्त मरुद्गण तथा मन्त्र में वर्णित देवता को आज्य होम करे। एक घट में काश, बिल्व, वेतस, वक्र आदि औषधियां एकत्र में करके अभिमन्त्रित कर, जल के बीच मुख औंधाकर उडेल दे। कासादि को जल में प्रवाहित कर दे। अपने शिर तथा मेष के शिर के बाल अभिमन्त्रित कर जल में फेंक दे। मानव केश, पुरानी जूती, वांस के आगे बांधे, तुषादि से युक्त पात्र के अभिमन्त्रित जल से छींटे दे, तीन पाद के छींके पर रखकर जल में फेंक दे। (४।२५) "प्रनभस्व" (७।१९) यह वर्षा के लिये कर्म हैं। कौ० ५ ५

इसी समुत्पतन्तु (४।१५) सूक्त से उल्कादि उपताराओं को अनहोने दर्शन-दोष-निवारणार्थ होम करे। कौ० १३।११। तथा चातुर्मास अन्वारमणि इष्टि में "अभिक्रन्दः" (४।१५–६) से पर्जन्य चरुयाग में अभिमन्त्रण करें। (२।१६–४) (२।१६—६) वै० २।४। धूम्रकेतु आदि उत्पात दीखने पर पञ्च पशुयागों के बीच प्राजापत्य पशु, पुरोडाश के स्थान में क्षीरौदन "प्रजापति" सलिलात (४।१४।) (५–११) से अनुमन्त्रित करे। कौ० १३—३५। न० क० १७।१८।

सू० १६—"बृहन्नेषाम्" इस प्रथम सूक्त से अभिचार कर्म में शत्रु को डाटता

हुआ बोले कौ ०६।२। तथा सू० (४।१५) के धूम्रकेतु आदि दर्शन दोष निवारणार्थ उत्तेय भूमि: (४।१६—३) वारुण अस्त्र प्रयोग करे। कौ० १३—३५।

सू० १७—"ईशानां त्वा" (४।१७) दूष्या दूषिरसि (२।११) ये पुरस्तात् (४।४०) समंज्योति: (४।१८) "उतो अस्यवन्धुकृत्" (४।१६) सुपर्णस्त्वा (५।१४) यां ते चक्रु: (५।३१) "अयं पतिसर:" (८।५) यांकल्पयन्ति (१० १) से स्त्री-पुरुष-कापालिक आदि के द्वारा किये गये अभिचार कर्म की शान्ति हेतु महाशान्ति कर्म करे। कौ० ५।३ ये सूक्त समुदाय कृत्याप्रतिहरण गण में होने से उन्ही हित कर्मों में विनियोग है कलश में दाभ, अपामार्ग, सहदेवी पृश्निपार्णी आदि डाले, जल अभिमन्त्रित कर छींटे, स्नान, पान, होमादि कर्म करे।

सू० १८—"सर्म ज्योति" का उपर्युक्त सूक्त से सम्बन्ध है।

सू० १९—"उतो असि" पूर्वोक्त विनियोग है।

सू० २०—"आपश्यति" से ब्रह्मा ग्रहादि से उत्पन्न भय निवारणार्थं त्रिसंध्यामणि धारण करे। कौ० (४।४) यह चातन गण में भी है। शन्नोदेवी पृश्निपर्णि।" २।२५ आपश्यति (४।२०) तान्त्सत्योजा: (४।३६) (कौ० १।८) कौ० ४।१ से कर्म करे।

२१ —"आगाव:" से १० सूक्त २९ तक भृगार सूक्त है। इससे छींटे होम स्नानादि कराये (४.२१) से गौओं के रोग निवारण, पुष्टिकर्म में केवल नमक या जलयुक्त नमक अभिमन्त्रित कर पिलाये। (४.१) (४।२१) एकाच में (५।१५)। को ३।२।

इसी से पुष्टि हेतु गोष्ठ में आती हुई गौ के पीछे चलता हुआ जपे और इन्द्रदेव को चरु होम करे। "प्रजावती" (४।२१–७) इस ऋचा से वन को जाती गौ को अनुमन्त्रित करे। तथा ऋचा (७।८) से नवीन बच्चे की लार (लाला) दूध में मिला अभिमन्त्रित कर खाये। और गौ को भी अभिमन्त्रित कर दें। पात्र में जल अभिमन्त्रित कर गोष्ठ में ढारे। तथा दाने, चारे आदि में गुग्गुल, लवण का पिण्ड बनाकर अग्नि में ३ रात्रि तक गाड़ दे चौथे दिन निकाल कर इन दो से अभिमन्त्रित कर खिलाये। "प्रजावती (४।२१-७,८) प्रजापति: (९।७) कौ० ३।२

सोमयाग में माध्यन्दिनसवन नें दक्षिणा के लिये आई गौ को मय स्वर्णवस्त्रादि यजमान उपस्थान करे (वै० ३।११)

सू०—२२ "इमम् इन्द्र" सूक्त से युद्ध में विजयार्थ, आज्या, सक्तु होम, धनु; इध्मदान, बाणादि दान करे राजा को अभिमन्त्रित कर। धनुष दे। कौ० २।५

सू २२ इसी से अभिषेकान्त राजा को प्रातः अभिमन्त्रित पात्र से छींटे दें। तथा कृत्या दोष शमनार्थ इसी से वृषभ को अभिमन्त्रित करें।

सू०२३ से २९ पर्यन्त ७ सूक्तों का वृद्दगण में शान्ति कर्मों में विनियोग करें। यथा "उतदेवा:" (४।१३) से १० मृगर सूक्त हैं उनमें में 'उत्तम वजीयंत्वा" उत्तम आगाव: (४।२१) इमम इन्द्र (२२ अहरुद्रेभिः (४।३०) को छोड़ओदा (२३ से २९) अंहोलिंगगण में हैं। इनका समस्त रोग दोष निवारण में विनियोग है। (कौ० ४।८। "आनेर्मन्वे" से सामिधेनी अनुमन्त्रित करे। वै० १।२

इन्हीं से पाञ्चयज्ञ (देवयज्ञः, पितृयज्ञः, भूतयज्ञः, मनुष्ययज्ञः, ब्रह्मयज्ञः) को नित्यप्रति करें। ये गन्धर्व,अप्सरा, देव, असुर, राक्षस उनमें होने वाले पाञ्चयज्ञ: हैं।

सू० २५ "वायोः सवितुः" से वायव्य नाम्नी शान्ति करें (न० क० १।८ 'वायोसावित्र आगोमुग्भ्यां चरुः" वै० सं० ७।५।२२। (१) से वायु सविता देवता को हविदान दें।

सू० २६ "मन्वेवाम्" से सोमयाग में गूलर समिधाओ से आज्य होम करें। वै० ३ ५

सू० २७ "मरुतांमन्वे" से बल प्राप्ति हेतु मरुद्गणी शान्ति होम करें। (४।२७) प्रजापते नत्वद् एतान्यन्यः (७ ८५-३) (न० क० २८) (४।२७ ७) से साक मेध पर्वपर गृहामेध याग करें (वै० २।५)

सू० २८ "भवाशर्वैर्मन्वेवाम्" से सर्व व्याधि–निवारक कर्म में जल से युक्त ७ काम्पील आदि की शाखाओं से अभिमान्त्रित जल से रोगी को छीटे दें। कौ० ४।४

सू० "अहंरुद्रेभि." इससे जात कर्म में शंखपुष्पी, गन्धपुष्पी, पीसकर अभिमन्त्रित कर स्वर्ण शालाका से शिशु कों चटाये। शंखनाभि और पीपली पीसकर अभि-

मन्त्रित कर स्वर्णशलाका से चटाये। इसी सूक्त से मेधा जननार्थ प्रथम बोलते समय बालक को माँ की गोद में बिठा होमकरे और तालु पर ये चटाये।

दही–शहद मिला अभिमंत्रित कर वालक को भी पिलायें। चटाये।

यज्ञोपवती कर्म में दण्ड देकर वालक से उच्चारण करायें। दीर्घायु कामी उपरोक्त शंखपुष्पी, गन्धपुष्पी ५ कर्मो को करे। सूत्रकार—शुक्लपुष्पी, हरितपुष्पी, कस्तूरी, पिप्पली, मिला स्तन पान से पूर्व वालक को चटाये। कौ० २।१। उपनयन में इसी से होम करे।

इसी से अध्याय समाप्ति कर्म में होम करे। 'विश्वदेवा: (१।३०) (४ ३०) सिंहे व्याघ्रे (६।३८) यशोहवि: (६।३६) कौ० १४।३। देखैं।

सू० ३०।३१ "त्वयामन्यो" यस्तेमन्यो" इन दो से अपनी व शत्रु सेना के बीच बैठ सेना को देखकर जप करे। इन्हीं से भङ्गराश मूंजपास, कच्चे पात्र अभिमन्त्रित कर शत्रु सेना की ओर फेंके। और जय पराजय के ज्ञान के लिये वाण के तिनके सेना के बीच गाड़कर इनसे अभिमन्त्रित तथा दक्षिणाग्नि (अङ्गिरस) (अग्नि:, चाण्डाल अग्नि) से जलाये, जिस सेना में धुँआ छाजावे वह हारेगी। कौ० २।५

सू० ३१-३२ इन से ग्रहयाग में भौम का उपस्थान होमादि करे। शान्ति कल्प १५। "त्वया मन्यो यस्ते मन्यो इत्यङ्गारकाय।

सू० ३३ "अपनः शोशुचद् अघम्" पुनन्तु मा (६।२६) सस्त्रुषी: (६।१३) वृहद्गण में होने से समस्ततद्विहित कर्म करे। तथा स्त्री पुरुष से पुरुष स्त्री से प्रति सम्भोगादिक निवारणार्थ इससे अगणित शर्करा फैंकते चलें। कौ० ४।१२ तथा अपशकुन होने या या काकमैथुन आदि विरुद्ध अभद्रदर्शन दोष निवारण में इसका जप करे (१।२६।४।३३) अन्तिम दाह संस्कार के पश्चात वान्धव शव को पीठ देकर न देखते हुए जव चलैं, दाह कर्त्ता तव जपे। उसी कर्म में स्नान के समय व्रह्मा इसको जपे।

सू० ३४ "व्रह्मास्यशीर्षम्" व्रह्मा के अर्पण भोजन करते हुए अभिमर्श न करे इसी सूक्त से वहीं चारों दिशाओं में हृदकरण, कुल्याकरण, उनके रस से पूरण हृदों में आण्डीकादि मन्त्रोक्त कर्म करे (कौ० ८।७

सू०३५ "यमऔदनम्" इससे अतिमृत्युयाग में हविभोजन का अभिमर्शन करे। (कौ० ८।७) तथा इसी से गौ के दो या एक से अधिक बच्चे एक साथ होने आदि में अद्भुत शान्ति में गौ को शान्ति जल से छीटे दें होम करे। उसे दुहकर उसी गौ दूध से स्थालीपाक, होम करे। कौ० १३।७

सू० ३७ ३६ "तान्सत्यौजाः (४।३६) त्वयापूर्वम् (४।३७) ये चातन गण में हैं उन्हीं समस्त कर्मों में विनियोग होगा।

सू० ३८ "उद्भिन्दतीं संजयन्तीम्" इससे द्यूत में पाशों को अभिमन्त्रित कर फैंके। इनके साथ "यथा वृक्ष अशनिः (७।५२) इदम् उगाय (७।११।८) से पाशों को फैंके। तथा "सूर्यस्य रश्मीन्" इससे "कर्वीन् वत्सान् इह रक्ष वाजिन्' पर्यन्त इन ३ ऋचाओं से गौ पुष्टि कर्म में १२ सूत्रों की रस्सी को आज्य से चुपड़े। "अयं घासः" इस पाद से गौओं को घास दे। "इह वत्सान्" इस पाद से दे। द्वादशदाम की रस्सी से बछड़ों को बाँधे। कौ ०३।४

सू ३९ "पृथिव्यामग्नये" से सर्व सम्पत्कामी मन्त्रोक्त देवताओं का होम उपस्थान जपादि करे। साथ में "समास्त्वाग्ने" (२।६) अभ्यर्चत् (७।८७) से अग्नि देव को "पृथिव्या इति (४ ३९) मन्त्रोक्त देवों को कौ ७।१० पाक-यज्ञ-तन्त्र में इन आठो से प्रधान होमान्त संनति होम करे। इसी में "अग्ना वाग्ने (९) हुता-पूतम् (१०) पुरुस्ताद्युक्तः (५।२९-१) यज्ञस्यचक्षुः (२।३५।५ से होमकर पीछे अग्नि के मध्य होम करे। कौ० १।३

चातुर्मास में वैश्व देव पर्व पर (४।३९-९) से अग्निमन्थन कर होम करे।

सू० "य पुरस्तात्" दूष्या दूषिरसि (२।११) से पुरस्तात् (४।४०) ईशानां त्वा (४।१) कृत्या प्रतिहरण गण में होने से तद्विहित कर्म करे।



ॐ

अथर्व विधान काण्ड ५

पञ्चम काण्ड में ६ अनुवाक हैं। प्रथम अनुवाक में ५ सूक्त हैं। उनमें से

सू० १ "ऋधङ्मन्त्रः" "तदिद् आस" इन सूक्तों से हस्ति की पीठ या पुरुष के सिर पर रक्खी पीपल की पात्री को, गोमय से उत्पन्न अग्नि प्रज्वलित कर होम कर शत्रुओं पर विजयाभिलाषी आक्रमण करे। शूकर के बैठने की खड्डी की मिट्टी की राजा वेदी बनाये। उस पर इन दो सूक्तों से आज्य और सत्तू का होम करे।

धनुष धारण में धनुष की लकड़ी की, इषु धारण में शर की समिधायें लें और धनुष पर प्रत्यञ्चाचढ़ा मयशर के पुरोहित राजा को दे। इसी कर्म में एक बाण से मृतक पुरुष की चिता से अवशिष्ट समिधा लेकर ऊपर चक्र (चाक) रखकर लम्बे दण्ड के स्रुवा से इन २ सूक्तों से चाक के छेदों में होकर आज्य होम करे। और "उत्तिष्ठ ? संनह्य ? प्रहरा युद्यस्व" आदि से प्रोत्साहित कर युद्ध में प्रेरित करे। ५।२-४।i यदिचिन्नुत्वा" इसे शत्रु सैनिकों के प्रति कहे।

परन्तु इन कर्मों में विकल्प यह है कि:—इनके करने से अवश्य विजय होगी। यदि राजा वैश्य है तो उक्त कर्म "यदि चिन्नुत्वा" से करे।

यदि जयकामी सेनापति हो तो उपर्युक्त कर्म "त्वयावयम्" (५।२-५) से करे। युद्ध योग्य परीक्षा कर्म में "नितद् दधिष" (५।२-६) से जल पात्र अभिमन्त्रित कर उनमें से ८-२ योद्धाओं को राजा देखे। उस जल में जो न दिखाई पड़े उसे युद्ध में न भेजें। इसी (५।२।६) वीं ऋचा से नये वाहन को मय सारथी के अभिमन्त्रित कर राजा को बिठाये। (५।२-४) तथा "नमोदेववधेभ्यः" (६।१३ से कर्म करे। कौ० २.६

सूत्रकार—इन्हीं २ सूक्तों से पुष्टि कर्म में मिश्रित धान्य (कई अन्न) भूनकर लेही बनाये। लाल बकरी के दूध में मिलाये, अभिमन्त्रित कर खाये। अथवा इसी कर्म में इन्हीं सूक्तों से गूलर व पिलवन (प्लक्ष) के कटोरों में मिश्रित धान्यों को डाले उनमें रस मिला, अभिमन्त्रित कर सूक्त में कहे मन्त्रो से प्रात सायं, मध्याह्न में एक एक चमस

खाये। इसी कर्म में ऋतुमती स्त्री को लाल रस मिलाकर, अभिमन्त्रित कर बीच की तथा अंगूठे के पास वाली इन्हीं दो अंगुलियों से खाये। कौ०३५

तथा खेत (क्षेत्र) की कामना वाले उसी क्षेत्र में भात में दही, शहद मिलाकर खाये। तथा सप्तग्राम लाभार्थ एक वर्ष लगातार ब्रह्मचर्य से रहे। पश्चात वीर्य को शुक्ति में करके चावल मिला अभिमन्त्रित कर खाये। क० ३।५
समृद्धि कर्म में भी इस ५/1 सूक्त का विनियोग है। शरद ऋतु में व्रीहि-चावलों को शहद में मिला चर्म के पात्र में रखे और जब तक जौ न पकें गठ्ढे में गाड़े दें। ऐसे ही जब यवपक जावें उस ऋतु से व्रीहि-धान- के पकने के समय पर्यन्त गाढ़ दें। पश्चात् दोनों को निकाल कर मिला के तिगुना अन्न गोमय के काण्ड में पका अभिमन्त्रित कर खाये। य सूक्त ५।१ "ऋघङ्" यथेयं पृथ्वी मही (६।१७) के साथ गर्भ वृंहण गर्भ की पुष्टि कर्म में भी वाञ्छनीय है।

सू० २ "तदिद आस" इसका ५।१ सूक्त के साथ विनियोग हैं। तथा इससे समस्त फल प्राप्ति हेतु "धीतिवा" (७।१) से इन्द्राग्नि देवों का होम करे। उपस्थान जप करे। कौ० ७।१०

सू० ३ "ममाग्ने" इसका दर्शपूर्णमास योग में होम का विधान है। कौ०१।१ इसका वर्चस कर्म में सू २।1 के साथ विनियोग भी है। पुष्टि कर्म में भी है। कौ० ३।५। तथा पिता-कलह भाव के निराकरण में विभाग कर्म में कुम्भकार की या तेली की रस्सी अभिमन्त्रित कर धारण करे कौ० ५।२

अभिचारिक कर्म में वृहस्पति के शिर चावल को पीत पदार्थ से छींटे दे। कौ० ६।३ धन के नाश होने पर धन प्राप्ति हेतु कौ बैरी की शान्ति (न० क० १७-१८) इसी ५।३ से करे। इसी से हाथी, घोड़ा, आदि की दीक्षा के समय होम करे। अन्यत्र भी व्रत ग्रहण में इसी का विनियोग करे।

सू० "ये गिरिधजायथ" इससे राजयक्ष्मा कुष्ठादि रोग निवारणार्थ कुष्ठ औषधि को मक्खन में मिला अभिमन्त्रित कर रोगी के उलटी मालिश करे। कौ० ४।४

सू० ५ "रात्रीमाता" इससे शस्त्र से चोट के घाव हड्डी टूटने आदि की स्वस्थता के (कौ० ४.४) हेतु गौ के दूध में लाक्षा (लाख) मिला, क्वाथ करके अभिमन्त्रित कर पिलाये।

सू० ६ "ब्रह्म जज्ञानम्" इस सूक्त से रोगी की व्यवस्था जानने हेतु रोगी के शिर से पैर पर्यन्त ३ बार रस्सी नाप कर अभिमन्त्रित कर अङ्गारों पर रखदे। यदि वह अङ्गार पर रक्खी ऊपर को जायें (उठें) तो रोगी जीवित रहेगा ऐसा समझे। कौ० ०।६

इसी से संग्राम में जय होगी या नहीं ? इसके ज्ञान के लिये तीन रस्सा वर-ज्जुओं को पृथक् २ कर एक अपने दल की रज्जु, दूसरी मध्य में मृत्यु की, तीसरी रज्जु पर सेना की संङ्कल्पित अभिमन्त्रित कर अङ्गारों पर रखदे। उन अङ्गारों पर रक्खी मृत्यु वाली रज्जु जिस पर आवे उसकी पराजय, जो मृत्यु के ऊपर चली जाय उसकी विजय, जो सामने जाकर पड़े उसकी भी जय समझे।

इसी कर्म में इसी सूक्त से एक रस्सी को अभिमन्त्रित कर अङ्गार पर रखदे। तो पूर्ववत् सैनिकों की जय, पराजय, समझे। कौ० २।६ यह सू० १।५ के साथ सलिल गण-में हैं वे सभी कार्य इससे करे। कौ० ३।१

स्त्री के प्रसव दोष में या सूतिका रोग में इसी से भात अभिमन्त्रित कर खिलाये तथा सक्तू पिलाये। इसी से सूर्य का उपस्थान करे। कौ० ४।४

सू० ७ "आ नोभर" इस सूक्त से नैर्ऋति कर्म में शक्कर मिला धानों का होम करे। कौ० ३।१ तथा अर्थोत्थापन विघ्न शमनार्थ "अयं ते योनि" (३ २०) में वर्णित कर्म करे। तथा अग्नि चयन करते समय ऋत्विजयजमान के प्रति बोले–पढ़ें। वै० ५।१

सू० ८ "वैकङ्कतेन" इससे अभिचार कर्म में होम करे। (कौ० ६।२)

सू० ९ "दिवेस्वाहा" इससे समस्त रोग निवारणार्थ आज्य होम कर जौ के या केवल जल के ४ पात्र ले ४ स्थानों की मिट्टी खेत, वामी, श्मशान, चौरास्ता की डालें, अभिमन्त्रित करे, उनमें से २ को पृथ्वी पर डाल दे। दो से स्नान करा दे।

सू० ५ ९) तथा इमं यवम्" (६'९१) से ४ पात्र लाये। कौ० ४।४

सू० १० "अश्म वर्म मेसि" घर ग्राम शहर राष्ट्र के स्वस्त्ययनार्थ ६ पत्थरों को अभिमन्त्रित कर प्राण प्रतिष्ठादि करके, ग्राम, शहर आदि के ४ कोनों में गाड़ दे। एक मध्य में एक छठवाँ मगर आदि के ऊपर रख दे। कौ० ७।२

इसकी ७ वीं ऋचा "योमां दिशाम्" से पूर्व दशा से प्रत्येक दूसरी गाडें।

सू० ११ "कथं महे" सूक्त से मादानक काष्ठ के कटोरे में दूध, धान, यव मिलाकर कूटे, पकाकर शहद मिला अभिमन्त्रित खिलाये। खाये। कौ० २।३

सू० १२ "समिद्धोअद्य" इस सूक्त से बशा दोष शमनार्थ एक भाग का होम करे। ५।२७ "ऊर्ध्वाअस्य" से दूसरे खण्ड को होमे। दोनों सूक्तों से तीसरे खण्ड को "अनुमतयेस्वाहा" से चौथे खण्ड का होम करे। कौ० ५।९

सू० १३ "दर्दिर्हि" यह सूक्त विष दूर करने में विहित है। और "दर्दिर्हि" इस प्रथम ऋचा का समस्त विषदोष निवारण कर्मों में विनियोग है। यह तक्षक के निमित्त है। इसका विस्तृत विवरण "ब्राह्मणों यज्ञे" (४।६) सूक्त में देखें।

द्वितीय आदि से प्रत्येक से पृथक्-पृथक् विष निवारण कर्म करे। यथा "प्रहृणी" (५।१३।२) से कटक बन्धः। मृत्तिका आदि से उल्टा वामरेखा खींच बन्ध लगाये। उससे विष स्तम्भन करे अर्थात् विष आगे पीछे न बढ़ें, जहाँ का तहाँ ठहर जावे। काटे हुए रोगी की तुरन्त चोटी बाँध दे गाँठें लगाये। उससे भी विष स्तम्भन करे। श्वेत वस्त्र या सन के मूँज से गाँठों के जोड़ों पर बन्ध लगाये। विष को रोक दे, चलने न दे। तीसरी ऋचा से काटे हुए स्थान को तेज धारदार वस्तु से चीर दे जिससे विष निकल जावे उसे ताड़ित भी करे जिससे विष दूसरे स्थान को चला जावे। चौथी ऋचा से आचार्य उसकी (तक्षक) का ध्यान कर, परिक्रमा करे। "अपेहि" (७.९३) इस ऋचा को जपकर तिनके जलाकर सर्प के सम्मुख या काटे हुए स्थान में फैंक दे (सर्प न देख पाये ऐसे फैंके)। "वली के" इससे घर के तिनकों से जलाये जल को अभिमन्त्रित कर काटे हुए रोगी को पिलाये, छींटे दे। ६वीं ऋचा से बकरी की ताँत को अभिमन्त्रित कर बाँधे। ७ वीं ८ वीं दोनों से मधुमक्खी तथा मधु (धत्तूर) वृक्ष के नीचे की मिट्टी अभिमन्त्रित कर पिलाये। शेष से मक्खी की विष्टा अभिमन्त्रित कर पिलाये।

(त्रिः शुक्लया श्वाविच्छलाकया। मां संश्वावित्सम्बन्धि। अलाबुना अलाबुन्युदकं कृत्वा अभिमन्त्र्य विष के रोगी को आचमन कराये।+) अलावुवृन्तं (भुने बैंगन) को अभिमन्त्रित कर बाँध दे।

(१) नवमी ऋचा से कुत्ते की विष्टा, पेशाब खिलाये, पिलाये। दसवी ऋचा अलाबुना से आचमन कराये। ११ वीं से नाभि को बांध दे। तथा अभिचार कर्म में "दर्दहि" से सर्प के छत्र (केंचलीयुक्त) फैंककर डाल दे। को. ६।२

सू० १४ 'सुवर्णस्त्वा" यह सूक्त कृत्याप्रतिहरण गण में है। इसको "दूष्या-दूषिरसि" (२।११) में देखें।

सू० १५/१६ "एकाच मे" "यद्येक वृषोसि" इनसे शाप या अभद्रभाषी के मुखस्तम्भनार्थ खलतुलपर्णी (औषधि) कूटकर मधु में मिला अभिमन्त्रित कर पिला दे। (५/१६) "यद्येक वृषो" से अन्न अभिमन्त्रित कर खाये तो शाप से मुक्त हो। इसी कर्म में, इसी सूक्त से घर के द्वार को अभिमन्त्रित कर बन्द करे । को. ४।५। सू १५ से गौओं के रोग निवारण, पुष्टि तथा प्रजनन कर्म में अभिमन्त्रित कर नमक व जल या केवल नमक पिलाये। को. ३।२।

सू० १७ "तेवदन्" इससे गौ चुराने के अभिचार में ले जाने वाले के पैर (पदचिह्न) अभिमन्त्रित करे। इसीसे चोरों का आवाहन करे। को. ६।२

सू० १८ "नैतां ते देवा" इससे गौ हरण, मारण, विशसन, बाधने, पाचन, भक्षणादि किये गये अभिचार कर्मों में ब्रह्मचारी (५।१८) अतिमात्रम् अवर्धन्त" दोनों सूक्त तथा "श्रमेणतपसा" इस पूरे अनुवाक (१२।५) को शत्रुओं को सम्बोधित करे और मन में द्वेषी भावना उनके प्रति रखकर जपे। को. ६।२ यह सूर्योदय से द्वितीया से १२ रात्रि से ऊपर तक करे अभिद्वितीया के सूर्योदय तक शत्रु नष्ट हुए समझे।

सू० १९ अग्र (उन्नत दण्ड) से पत्थर को नवाये या गिराये।

सू० २० "उच्चैर्घोषः" इस सूक्त से शत्रु दल के त्रास और उनमें परस्पर विद्वेषण कराने के हेतु भेरी आदि बाजों को धोकर या छींटे देकर, अगर तगर आदि लेपकर ३ बार ताड़ित कर बजाने वाले को सौंप दे "सूक्त—(५।२०) उपश्वासय (६।१२६)। को. २।७ प्रस्थान कालिक (महाव्रत) में भूमि, दुन्दुभि को पौष्टिक द्रव्य से धोकर; लेपकर, धूप, गन्धादि कर-ताड़ित-कर आगे बढ़ता हुआ, बाजों को बजाने वालों को दे। को. ६।४।

सू० २१ "विहृदय" उपर्युक्त सूक्त के साथ सम्बद्ध कार्यों के लिए विहित है। इनमें उच्चस्वर का प्रयोग करना अनिवार्य है।

इस (५।२१) सूक्त से सोमाङ्कुर मणि को मृग चर्म में लपेट कर अभिमन्त्रित कर बांधे। कौ. २७।

सू० २२ "अग्निस्तत्रमानन्" इस सूक्त से काले धान की खील का मांड बना अभिमन्त्रित कर ज्वर निवारणार्थ पिलाये। तथा दावाग्नि का आह्वान, उपस्थान करके गर्म ताम्बों के धुवे को पानी में बुझाकर रोगी के शिर को ढक कर वाष्प दे।

सू० २३ "ओते मे द्यावापृथिवी" इस सूक्त से करीर वृक्ष की जड़ अभिमन्त्रित कर कृमि विनाशकर्म में बांधे। इसीसे गौ के बालों से करीर काष्ठ को ढककर सूक्त का जप कर पत्थर से चूर्ण करे और सूक्त से अग्नि में तपाये तदनन्तर सूक्त से निकाले। इसी सूक्त से ग्राम की रज अभिमन्त्रित कर सीधे हाथ से दक्षणाभिमुख हो रज को छिड़के। इसीसे अभिमन्त्रित रज को हाथ से मले और कृमियों के ऊपर डाल दे। इसी सूक्त से शान्ति वृक्षों की समिधाओं से होम करे, कृमि नष्ट हों। तत्पश्चाद बालक को माँ की गोद में बिठाकर, घी चुपड़ कर शलाका से तालु को तपाये। तीन बार सूक्त से प्रयोग करे। इसी सूक्त से शिग्रु बीज घी में मिलाकर अभिमन्त्रित कर रुग्ण-स्थान से चुपड़ दे। इसीसे २१ उशीर अभिमन्त्रित कर रोगी को दे। कौ० ४।१५। इसी से जल के घड़े में उशीर की पोटली डालकर अभिमन्त्रित कर रोगी को स्नान कराये।

सू० २४ "सविताप्रसवानाम्" इससे पौरोहित्य करने के हेतु शूद्र की लाई समिधाओं से जो अमावस्या को ली गई हों (कुश-ग्रहणी अमा) में कौ० २।८ होम करें।

इसीसे विवाह में आज्य होम करे। कौ० १०।१४॥ चातुर्मास व्रत में वैश्व देव पर सावित्रयाग करे। वै० २।४।

सू० २५ "पर्वताद्दिवो" गर्भाधान कर्म में तिल-चावल की खिचड़ी के २ चरु अर्पण करे अभिमन्त्रित कर दूसरे चरु को ओझल होकर (अभिमन्त्रित को) स्त्री खाये।

इसी कर्म में ढाक के रस या गोंद को शिश्नेन्द्रिय के अग्र भाग में चुपड़ कर मैथुन कर्म (गर्भाधान) कराये।

सू० २६ "यजूंषि यज्ञे" इस सूक्त से पुष्टि कामना वाले नूतन ग्रह में घी मधु होम करे (५।२६) तथा—"दोषोगाय:" (६।१) इन दोनो से पुनः एक साथ होम करे, तीन आहुतियाँ दे (कौ० ३।६)। इसीसे ज्योतिष्टोमयाग में आज्य होम करे। वै० ३।६।

सू० २७ "ऊर्ध्वा य" इस सूक्त से पुष्टिकामो अग्नि में गूलर का मन्थ बना घृत मिलाकर होम करे और बिना गिनी पूड़ी अर्पित कर इससे ७ पूड़ी अग्नि के अर्पण कर सेवाकर्त्ता को दे। दान से प्राप्त द्रव्य से बनी पूड़ी (आगम शष्कुलि) कहलाती हैं।

इसका यशा शमन में भी विनियोग है। "समिद्धोअद्य" (५।१२) देखें।

सू० २८ "नवप्राणान्" इसका समस्त समात्कर्मों में विनियोग है। तथा आयुष्कामी हिरण्यमणिवन्धन में, उपनयन कर्म में, आज्य होम में तथा आयुष्यगणकर्मों में इसका विनियोग करे तथा सोना, चाँदी, लोहा की तीन नई शलाकाओं को मिला कर एक मणि त्रिगुण (त्रिवट) कर अभिमन्त्रित कर बांधे। (केशव)। कौ० ७।६ तथा अन्न के विनाश निवारण में, अन्न की वृद्धि में वैष्णवी इष्टि के साथ त्रिवट मणिबन्धन इसी से करे। न. क. १६।

सू० २९ "पुरस्ताद्युक्तो" यह "स्तुवानमग्ने" (१।७) के सन्दर्भ में चातनगण में विस्तृत विवरण है।

सू० ३० "आवतस्ते" इसका "अक्षीभ्याम्" (२।३३) के साथ अंहोलिङ्गगण के साथ विस्तृत विवरण है तथा इसीसे उपनयन कर्म के उपरान्त छात्र की दीर्घायु, ओज, बल, वर्च के लिए स्पर्श कर अभिमन्त्रित करे। साथ ही "उतदेवाः" (४।१३) से भी ब्राह्मण अभिमन्त्रित करे। कौ० ७६।

इसी पिष्टरात्री कल्प में सरसों अभिमन्त्रित कर उससे रक्षा कर जप करे। (प० ६)।

सू० ३१ "यां ते चक्रुः" इसका दूष्याद्दूषिरसि (२।११) में कृत्याप्रतिहरणगण में विस्तृत विवरण देखें।



ॐ

❀ अथर्व विधान काण्ड– ६ ❀

छठे अध्याय में १३ अनुवाक् है। प्रथम अनुवाक् में ५ सूक्त हैं।

इसके प्रथम सूक्त "दोषोंगाय" की ३ ऋचाओं से पुष्टि कामार्थ नवशाल में घृत मधु से होमकरें। कौ० सू० ५।२६ "यजूंषि यज्ञे" इति नवशालायां सर्पिर्मधुमिश्रं जुहोति दोषों गाय" इति (कौ० ३,६) इन्हीं ऋचाओं से स्वस्त्ययन कामी 'आज्यादि १३ पूर्व निर्दिष्ट पदार्थों से होम करे। (कौ० ६।१) (६।३) इन 'पञ्च' "इत्यादि "भवाशर्वौ" अ० ११।२) इत्युपदधान्तम् (कौ० ७।१)।

इन तीनों ऋचाओं मे "सर्वलोकाधिपत्यकामी अथर्व का यज्ञ व उपस्थान करें। इन्हीं से समावर्तनान्त भात (पुरोडाश) अभिमन्त्रित कर खाये।

"आयंविशन्ति" (अ० ६।२–२) इस ऋचा से राक्षसादि की विविध पीड़ाओं के परिहार के लिये पक्षि के घौंसले (घर) के काष्ठ से पके दूध-चावल को अभिमन्त्रित कर खाये। (कौ० ४।५)

"पातं नः" कां ६ सू० ३ की तीन ऋचाओं से विजय स्वस्त्ययन कामी आज्या होम करे। आयुध अभिमन्त्रित कर योद्धा को दे। इसी स्वस्त्ययन कामना में रात्रिशयन काल में ऋचा के साथ प्रादेश से मुख पर हाथ फिरा कर सोये। सोते से उठते समय इन तीन ऋचाओं से प्रथम पग चले या ३ बार उस हाथ से पृथ्वी वन्दन स्पर्श करे। "पातनः" (६।३) "य एनं परिषीदन्ति (६.७६) (कौ० ७।१)

इसी (६.३) की ५ ऋचाओं से आज्यादि १३ पदार्थों से स्वस्त्ययन कामी होम करे (६।३, ५६) व (११।२) "भवाशर्वौ। (कौ ७।१)। "त्वष्टा में" इन ऋचाओं से (दायद विभाग कार्य) में पुष्टयर्थ सरूपवत्सागौ के दूध में पके भोजन को अभिमन्त्रित कर खाये। इसी कार्य में इन्हीं ३ ऋचाओं से धनुष की प्रत्यञ्चा को अभिमन्त्रित कर बांधे। इसी कार्य में दण्ड को अभिमन्त्रित कर नमस्कार कर धारण करे। (कौ० ३।६) तथा पुष्टयर्थ चित्रा कर्म में (६।४) की ३ ऋचाओं से वृक्षों (शान्ति वृक्षों) की शाखायें डालें और परिक्रमा करे। कौ ३६।

युग्म जनन (लड़का लड़की) एक साथ के शान्त्यर्थ सिर को छींटे दे होम

करें (कौ० १३।३२) (अथर्व कां ६ सू० ५) "उदेनम् उत्तर नय" योस्मानू ब्रह्मणस्पते" इन तीन ऋचाओं से ग्राम की कामना वाले वाले इन्द्र का उपस्थान व यज्ञ करें। तथा च

आभ्यां ऋचाभ्यां उदुम्बर पलाश फर्कन्धू तक्षणा धानम् सभोपस्तरणक्षणा धानम् अभिमन्त्रितान्नासव प्रदानं वा कुर्यात्। 'उदेनंमुत्तरं नय' (६।५) योस्मान (६।६) "इन्हीं सें दर्श पौर्णमास यज्ञ में अग्नि में चरु होम करे।

तथा अग्नि चयन में षोडश गृहीत वैश्वकर्मण होमान्त "उदेनमुत्तरंनय" ऋचा से आधीय मान समिधाओं को ब्रह्मा अनुमन्त्रित करे। वैतान श्रौ० सू० ५।२) तथा दर्शपूर्णमास में "इन्द्रेयं प्रतरं कृधि" (२) इन्द्रं आधारं से ब्रह्मायजन करें।

अद्‌भुत महाशान्ति में इन्द्रयाग में (६।५–२) "इन्द्रेयंप्रतरं कृधि" से याग का विधान है। नक्षत्र कल्प १४ (अथोतोद्‌भुत महाशान्तौ दिशो यजते "इतिप्रक्रम्य" इन्द्रेमंप्रतरं कृधि (कां ६ सू० ८—'येनसोम" इन ३ ऋचाओं से यज्ञ विघ्न शमनार्थ सरूपवत्सागौ के दूध में पकी खीर अभिमन्त्रित कर खाये। तथा—अयाज्य याजन दोष निवारण हेतु याग समाप्ति के उपरान्त चरु से सोम का यज्ञ करे। (कौ० ५।१०)

"यथा वृक्ष लिबुजा" (अ० ६।८–४) इन ३ ऋचाओं से स्त्री वशीकरणार्थ वृक्षत्वक्शर खण्ड तगराञ्जन कुष्ठादि पीसकर घी में मिला स्त्री के शरीर में लेप करें। (कां ६।८, ६ व १०२ "यथा वृक्षम्—वाञ्छ में—यथायं वाहः (कौ० ८।११

कां ६ सू० १०=पृथिव्यै क्षेत्राय– इन ३ ऋचाओं से समस्त संपत्कर्म में आज्य होम करे। कौ० २।३।

कां ६ सू०—११ "शमीमश्वत्थ"— इन ३ ऋचाओं से पुंसवन में सैमर में उत्पन्न या अन्य वृक्ष में उत्पन्न अश्वत्थ की उतर पूर्व की (अग्नि) दाडी या ऊपर की शुंग पीस मधु मिलाकर—अभिमन्त्रित कर स्त्री को पिलाये। इसी कर्म में इन्हीं दाड़ी या शुंग को कालीऊन से लपेट कर स्त्री के दायें भुजा बांधें। (कौ० ४।११) कां ६।११ के पुंसवन कर्म में ऐतरेयारण्यक २।५–१ पुरुषे हवा अयम् आदि तो गर्भो भवति' एतद पुत्र जननोपायत्वेन लोके प्रजानां स्रष्टा प्रकाशितवान्।

सू १२– "परिद्यामिव" इन ३ ऋचाओं से सर्प विष भैषज्य में "मधु को

अभिमन्त्रित कर पिलाये और यह प्रार्थना विशेष रूप से करे। इसी कर्म में 'ब्राह्मणो यज्ञे'' (कां० ४।६) इन ३ ऋचाओं से कौ० सू० (४५) में वर्णित जप-आचमन आदि कराये।

कां ६ सू० १३—"नमो देव वधेभ्य" इन ३ ऋचाओं से विजयेच्छु अपनी सेना के चारों ओर प्रतिदिन उपस्थान करें। वैश्य हो तो उसके जप के लिये आक्रामक शत्रुओं को देख ३ ऋचायें जपे। और इन्हीं से, घी, सत्तू का होम धनुष की लकड़ी शर की समिधादान कर अभिमन्त्रित कर धनुष प्रदान करें। कौ० २।६

इसी सूक्त (सूक्त१२) में वर्णित सर्प विषनिवारणार्थ (सभीविष) "येस्यांस्थ" (३।२६) में वर्णित: अभिमन्त्रित सिकता प्रेक्षपणादि गुडूची होमादि करे।

इन्हीं ३ ऋचाओं से क्रव्याशमनानन्तर गृह में हवन करे। "ये आनयः (३।२१) "नमो देववधेभ्यः (६।१३) "अग्नेभ्यावर्तिन्" (कौ० ६।४)

इन्हीं ३ ऋचाओं से ब्राह्मण के हथियार धारण देव प्रतिमानर्तन, हसन, वन्ध्या के कुचों से दुग्धादि समस्त अद्भुत कार्यों में आज्यहोम करे। "मानोविदन्" (१।१९) नमो देव (६।१३) (कौ० १३—१२—१३) इन्हीं से यज्ञ-वशापुरोडाश आदि में काकोलूक श्वानादि से दूषित होने पर प्रायश्चित्त होम करे।

कां ६ सू० १४—"अस्थिस्रसम्" ३ ऋचाओं से श्लेष्म भपज्य में—वृक्षों की छाल अभिमन्त्रित कर व्याधित को छीटे दे, आचमन कराये। (कौ० ४५—

सू० १५—"उत्तमो असि" ३ ऋचाओं से पुष्टिकामी ढाक की मणि अभिमन्त्रित कर बांधे "अक्षितास्ते" (६।१४२-३) से यवमणि को बांधे। कौ० ३।२

सू० १६—"आवयो अनावयो" इन ४ ऋचाओं से नेत्र रोग चिकित्सा में सरसों के तेल व सरसों की डण्ठल रोगार्त के बांधे, डाले, खिलायें, होम करें। इसी रोग में ४ शाक वृक्ष फल अभिमन्त्रित कर रोगी को दे। तथा जड़ का दूध अभिमन्त्रित कर रोगी के नेत्रों में डालें (सत्यानाशी वनस्पति) इन्हीं से यूल के दूध को अभिमन्त्रित कर खिलाये। कौ० ४।६

सू० १७—"अलसाला" इस ऋचा से " अन्न स्वस्त्ययनकामी" ३ खेत में खड़े अन्न की शाखा अभिमन्त्रित कर खेत में गाड़ दें। कौ० ४।७

सू० १८—यथेयंपृथिवी मही" इन ३ ऋचाओं से गर्भ वृहणार्थं धनुर्ज्या को त्रिवट कर स्त्री के बांधे। इसी से क्षेत्र मृत्तिका को अभिमन्त्रित कर प्रत्येक ऋचा से गर्भिणी को चटाये। कृष्ण वालू अभिमन्त्रित कर गर्भिणी के शयन के चारों ओर छिड़के। तथा जम्भगृहीत—की भी इन्हीं से यही चिकित्सा करे।

"ऋधङ्मन्त्र" (५।१–१) यथेयं पृथिवी (६।१७) 'अच्युता इतिगर्भ दृहणानि जम्भगृहीताय प्रथमा वर्जं "ज्यांविरुद्धयवध्नाति। कौ० ४।११।

सू० १६—"ईर्ष्याविाधाजिम्" जनाद्विश्वजनीनात्" (७।४६) "त्वाष्ट्रेणाहम् (७।७८—३) से उपर्युक्त कर्म में उक्त क्रिया करें। (कौ० ४।१२)

काण्ड ६ सू० १६ "पुनन्तु मा"-वृहच्छान्तिगण कर्म में विनियोग का विधान है तथा अर्थोत्थापन, विघ्न शमन कार्य में मरुगद्णों को मन्त्र में वर्णित देवों को क्षीरौदन, आज्य होम, (काश दिविधुवक वेतस) नाम्नी औषधियों को एक घर में डाले अभिमन्त्रित कर जल के वीच नीचे मुख कर उलटे, उन काशादि को अभिमन्त्रित कर अपने तथा मेष (घटस्थ) देव के शिर पर कोप्लावन कर जल में वहा दे। मानव केश, पुरानी जूती, वांस के सिर पर ऊपर वांधे, कास (घासः दाभादि) युक्त कच्चे घड़े को अभिमन्त्रित जल से छिड़के, तिपाई के छींके पर रख जल में छोड़े-ये अभि-वर्षण-अभिमन्त्रित घट के जल से स्नान छींटे इन्हीं ३ ऋचाओं से करे। "अर्थ उत्था-स्यन्" इससे परिक्रमा "अम्त्रयो यन्ति" (१।५-६) ३३-व ३।१३, ६।१६ से साराकार्य करे। (कौ० ५।५ देखें।

सव यज्ञेषु सव—यज्ञ में इन्हीं ३ ऋचाओं से यजमान पत्नी पुत्रादि को पोक्षण करे (पवित्रैः संप्रोक्षयेत् कौ० ८।२) पवित्र-गण-में (काण्ड ६।१६-५१-६२) पवमान यज्ञ में इन्हीं से हवि अभिमर्शनादि कर्म करे तथा दीक्षा कर्म में भी दर्भमुष्टि से पवित्र यजमान इन ऋचाओं को जपे (वैं० सू० ३।१)

सौत्रामणि इष्टि में— काण्ड ६ सू० १६, ६६, तथा ६।१-१६ गिरावरगराटेषु "आद्वरिषु" से आसेचन करे। वै० ५ ३।

"अग्नेरिवास्य दहतः" काण्ड ६ सू० २० की ३ ऋचाओं से पित्त ज्वर भैषज्य में "दावाग्नि" में ताम्रस्रुव से घी होम कर व्याधित के शिर पर फिराये। वै ४।६

कहा है व्रतोपवासै यैं विष्णु र्नान्य जन्मनि तोषितः।
ते नरा मुनि शार्दूल ग्रह रोगादि भागिनः॥

सू० २१ "इमा या स्तिस्त्रः" इन ३ ऋचाओं से केश वृद्धि के हेतु अभिमन्त्रित भांगरा साक्षा या दोनों हरिद्रा, कूठ) आदि के क्वाथ से उषाकाल में धोये। (कौ० ४ ६)

सू० २२ "कृष्णं नियानं" इन ३ ऋचाओं से उदर तुण्डादि के रोगी पर चित्ति आदि शान्त्यौषधियों के अभिमन्त्रित जल को छिड़के, स्नान कराये इसी भैषज्य कर्म में मरुद्गण व मन्त्र में वर्णित देवताओं, का क्षीरोदन, आज्य—होम कर काण्ड ६ सू० १६ की क्रिया करे। ("कृष्णं नियानम्" ६।२२) सो स्नषी (६।२३)। कौ० (४।६)

सू० २३-२४-५१ ये वृहद्गण में हैं शान्त्युदकादि कर्म में विनियोग करे। (वै० ८।६) इन्हीं से अर्थोत्थापन विघ्न शमन कर्म में क्षीरौदन होम करे-अर्थ को उठाते हुये परिक्रमा करे (६।१६-२३-२४-५१) अभिषेक, छींटें, स्नानिदि करे। दर्शपूर्णमास याग में ब्रह्मा प्रणीता को अभिमन्त्रित इन्हीं से करे (वै १।४) तथा हृदय दोष-जलोदर-कामलादिरोग निवारणार्थ नदी के प्रवाह के अनुकूल से जाकर (वलीकतृण) डालकर इन से छींटे मार्जन स्नादि कराये। कौ० ४।६

काण्ड ६ सू० २५ "पञ्चचयाः" ३ ऋचाओं से गण्डमाल की निवृति हेतु ५५—सूक्तोक्त काष्ठ से जलाये तथा कौ० ४।६ की क्रिया करे।

सू० २६ "अवमा पाप्मन्" ३ ऋचाओं से सर्व रोग भषज्य कर्म में कौ० ४।६ की क्रिया करे। दूसरे दिन ३।३ बलि चौराहे पर रक्खे। महाशान्ति याग में की जाने वाली नैऋतिकर्म में इन ऋचाओं को जपता नदी तीर पर जाय। "अवमा पाप्मन्निति जपन्नुदकम् अभिगच्छेत् "इतिहि नक्षत्र कल्प (१५)

अथर्व काण्ड ६ सू० २७ "देवाकपोतः,, "ऋचाकपोतम्" (६।२८) "अमून-

हेतिः, (६।२९) ये ३ ऋचायें महा शान्ति गण में हैं। उनके विनियोग के साथ गृहादि में कपोत उलूकादि निन्ध जीवों के प्रवेश शान्ति हेतु शान्ति जल अभिमन्त्रित कर छिड़कें। (कौ० ५।१) देखें। "ऋचाकपोतम्,, (६।२९) का भी पूर्व ३ ऋचाओं के साथ विनियोग करे। "परी में" (६।२९-२) से कपोत उलूकादि प्रवेश शान्त्यर्थ गौ व अग्नि को घर में ला पूजाकर ३ वार उस स्थान में घुमाये।

(६।३०) "अमून हेतिः,, इस ऋचा के सूक्त २८ व २९ के साथ विनियोग करे।

सू० ३० "देवा इमम्" इस ऋचा से "पौन सिरसवे-मधुमन्थ" अभिमर्शन करे। (कौ० ८।७)। सू० ३२ ये निन्ध पक्षियों जीवों के घर ग्राम आदि के प्रवेश या अभद्रवाणी के बोलने में प्रयुज्य हैं।

सू० ३१ ऋचा २ "यस्तेमदः,, पापलक्षणों की शान्ति में शमी-लवण शमी की टहनी से आधे शिर में डाले झाड़ा दे। (कौ० ४।७)

सू० ३२ "आयं गौ" ३ ऋचाओं से पृश्नि के प्रसव दोष में "अयं सहस्रम (७।३३) से गौ का अभिमर्शन करे (कौ० ८।७) तथा आधान में आहिताग्नि से हवन उपस्थान करे। आहितमाहवनीयं आयं गौ रित्युपतिष्ठवे, इतिहि वैतान सू० २।२ "द्वादशाहे अविवावाक्येहनि मानसस्तोत्रम् अनेन तृचेन अनुमन्त्रयेत् "इति वैतानं (६।३)

सू० ३२ "अन्तर्दवि" ३ ऋचाओं से पिशाच-राक्षस आदि जनितभय निवारणार्थ सूत्र के अनुसार अग्नि की ३ वार परिक्रमा कर होम करें (कौ० ४।७)

सू० ३३ "यस्येदमा रजः" ३ ऋचाओं से कृपि कम में क्षेत्र में जादायें-जुआ-में वैल को जोड़े और कर्त्ता इन ऋचाओं के जप के साथ प्राचीन हल वाहक के हाथ में हल दे-वह ३ कूंड-लागे-उनके तीनों के सिरे पर अग्नि में इन्द्र देवता को आहुति पुरोडाश-दे वैलों की इन्हीं से पूजा करे उन्हीं में से मिट्टी (सीता) ले तथा इन्ही ३ से समस्त फल का भी-इन्द्र याग व उपस्थान करे (६।३३) व "अथर्वाण" (७।२) "अदितिद्यौरदितिः" (७।६) आदि (कौ० ७।१०) तथा खेत जोतने में लाङ्गल संश्लेप लक्षणोत्पात-की शान्ति इन्ही ऋचाओं से करे (कौ०१२।१४)

सू० ३४ "प्राग्नये वाम्" इन ५ ऋचाओं से रक्षो-ग्रह पीड़ा निवारणार्थ पूर्वोक्त १३ वस्तुओं से होम करे ("प्राग्नये-६।३४) प्रेतः (७।११६-) (कौ० ४।७)

सू० ३५ "वैश्वानरो न ऊतये" ३६ "ऋतावानं वैश्वानरम्" इन ३ ऋचाओं से समस्त भैषज्य कर्म में "जल हल्दी, घी आदि कषायन वस्तु अभिमन्त्रित कर पिलाये। अग्नि चयन भी इन ३ से ब्रह्म-पुरीषाच्छन्नां चितिं-अनुमन्त्रयेत वैं० ५।२

सू० ३७ "ऋतावानं वैश्वानरं" इन ३ ऋचाओं का सर्व रोग भैषज्य में पूर्व की भाँति क्रिया करे। "सू० ३८ "उपप्रागातसहस्राक्षः" इन ३ से अभिचार जनित दोष निवारण में स्वेत मिट्टी अभिमन्त्रित कर श्वान को दे। पलाश मणि धारण करे। इङ्गिण होम करे "योनः शपात" ३९ की ३ ऋचाओं से विजली से ताड़ित वृक्ष की ११ समिधायें अभिचार कर्म में ले हवन करे। (को ६।२)

सू० ३८ "सिंहे व्याघ्रे" . ३९ "यशो हविः' इन ३ से वर्चस्कामी-सूक्त में कहीं ७ तथा अन्य भी नभि के लोम लाक्षाव हिरण्य में बांध कर धारण करे। तथा इन्हीं से वर्चस्कामी, ढाक आदि शान्ति वृक्षों की वनी मणि को उपरोक्त विधि से धारण करें (कौ० २।४ देखें)। उत्सर्जन कर्म में सू० ६।३८, ३९ व ५८) "यशसं मेन्द्रः" घृत होम करे रस मे डाल कर पिलाये। (प्रठीता में डाल कर)। यहाँ तैत्तिरीय वचन है "धान्यमसि धिनुहि देवान" इत्याह। एतस्य यजुषो वीर्येण यावत् एका देवता कामयते यावद् एका,, "तावद् आहुतिः प्रथते,, इति वैं० ब्रा० ३,२,६,४। कौ० सू० १४।३

कां ६ सू० ४० "अभयं द्यावापृथिवी" इन ३ ऋचाओं से ग्रामादि के अभय कामनार्थ उसकी सर्वदिशाओं में सप्तऋषियों का होम कर पुजा करे। (६।४०) तथा "श्येनोऽसि" (६।४४) कौ० (७।१०)। यही सेना के अभय के लिए करे। (कौ० २।७) इन्हीं से उपाकर्म में घृत होम करे। (कौ० १४।३) अभयगण, अपराजितगण से होम करे।

सू० ४१ "मनसेचेतसेधिये" तथा "यथाद्यौः" (२।१५) इनसे महाव्रीहि-इन्द्रजौ का स्थालीपाक को अभिमन्त्रित कर खाने को दे। (कौ० ७।५)।

"चोर, व्याघ्र, बधिक, पतङ्ग, शलभ, ओले विष, कृत्या आदि निवारणार्थ सप्तऋषि—विश्वामित्र, जमदग्नि, भारद्वाज, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ, कश्यपः (आ. प.) १

यं प्रसिद्धा सप्त ऋषय सन्ति तेषां समन्धिनां हविषा अस्माभिर्दीयमानेन नः अभयं अस्तु। इसे सूक्त ४० के साथ प्रार्थना करे।

सू० ४२ "अवज्यामिव" इन ३ ऋचाओं से स्त्री-पुरुष (दम्पती) में पुरुष स्त्री से क्रुद्ध हो तो उसे देखकर पत्थर को अभिमन्त्रित करे, हाथ में ले "सखायाविव" ऋचा २ को जपे उस पत्थर के ऊपर थूके। इसी कर्म में कुपित पुरुष की छाया पर इन ऋचाओं के जप के साथ धनुष तान दे। इससे पुरुष का स्त्री के प्रति क्रोध दूर हो जायेगा (कौ० ४।१२)। यदि दीक्षाकाल में यजमान को क्रोध हो तो "अवज्यामिव" (६।४२) ऋचा को जपे। (अवज्यामिव) वै० ३।२।

सू० ४३ सर्वविषय के मन्यु (द्वेष-क्रोध) के निवारणार्थ "अयंदर्भ" इन ३ ऋचाओं मे दर्भ की जड़ को औषधि के समान खोदें अभिमन्त्रित कर बांधे। (कौ० ४।१२)।

सू० ४४ "अस्थाद् द्यौ" ३ ऋचाओं से अपवाद निवारणार्थ स्वयं गिरे हुए गौ के सींग को धोये, जल को अभिमन्त्रित करे पिये पिलाये। (कौ० ४।७):

सू० ४५ "परोपेहि" इन तीन ऋचाओं से अतिघोर दुःस्वप्नदोष निवारणार्थ उठकर मुँह धोये। "योनःजीवः" ४६ से मुँह धोये तथा सप्तधान्यों के दो पुरोडाश बना, एक से होम करे, दूसरे को शत्रु के स्थान में रख दे। (कौ० ५।१०)

सू० ४६ "योनजीवः" इन तीन ऋचाओं से दुस्वप्न जनित दोषनिवारणार्थ सू० ४५ के कर्म करे। "विघ्न ते स्वप्न" (६।४६) इन दो ऋचाओं से दुःस्वप्नदोष निवारणार्थ मुँह धोये, सप्तधान्य से होमः शत्रु क्षेत्र में फेंके, आस-पास फेंक दे, अन्न दर्शन करे। (कौ० ५ १०) "अग्निः प्रातः सवने" ४७ की तीन ऋचाओं से क्रमशः तीनों सवनों (प्रातः, मध्याह्न, सायं) सवनसमाप्ति होम करे। (वैतान) ३।११— "यथासवन आज्यं जुहोति, संस्थित होमान्" इति। "६।४७-४८ "तथा यथासोमः प्रातः सवने" (कौ० ६ १-११) से उपर्युक्त कर्म करे।

सू० ४८ "श्येनोऽसि" इन तीन ऋचाओं से उपनीत ब्रह्मचारी को आचार्य अभिमन्त्रित कर दण्ड दे। ब्रह्मचारी भी इनके जप के साथ दण्ड धारण करे। (कौ०

७।६,८,७)। इन्हीं तीन ऋचाओं से अभयकामी सप्तऋषियों का होम करे (कौ० ७।१०) "श्येनोऽसि", "वृषासि", "ऋभुरसि" इन तीन ऋचाओं को तीनों सवनों में ब्रह्मा यजमान को कहे (वै० ३।७)

सू० ४९ "नहितेअग्ने" इन तीन से ब्रह्मचारी आचार्य की मृत्यु की दाह क्रिया में चिता की तीन परिक्रमा कर पुरोडाश दे। (कौ० ५।१०)

सू० ५० "हतंतर्दम्" इन तीन ऋचाओं से मूषक, पतङ्ग, शलभ, टिट्टभि, कीट, हरिण, शल्यक, गोधा आदि वन्य धान्य शत्रुओं के निवारणार्थ लोहमय शोशे को घिसे और जप करे, उस क्षेत्र को अभिमन्त्रित करे। इन्हीं तीन ऋचाओं से शक्कर अभिमन्त्रित मूषकादि के स्थानों में छोड़ दे। तथा मूषकादि के मुख को बाल से बांध, अभिमन्त्रित कर खेत के बीच गाड़ दे और इन्हीं से सारूपसवत्सा गौ के दूध में चरु डालकर अश्विनीकुमारों का होम करे। कौ० सू० ७१२ देखें।

कां ६ सू० ५१ "वायोः पूतः" ये तीन ऋचायें बृहद्गण में हैं इनसे शान्ति जलादि कार्य करें। इन्हीं से सर्वरोग निवारणार्थआज्य होम करें। तथा सोमवमन पानादि निमित्त व्याधि निवारणार्थ सोमरस मिश्रित पलाशादि की समिधाओं से होम करे। (कौ० ४।१ व ५।५) देखें। यह ऋचा अम्बादिगण व "अपांसूक्तम्" में होने से आप्लावन आदि सभी कार्यों में विनियोग करें। (कौ० ८।९)

सू० ५२ "उत्सूर्यः" इन तीन ऋचाओं से राक्षसादि, ग्रहादि निवारणार्थं शांति सामग्री डाल, जल अभिमन्त्रित कर छींटे दे। कौ० ४.७।

सू० ५३ "द्यौश्च मे" तीन ऋचाओं से गण्डमाला के घाव को अभिमन्त्रित जल से सेंक दे। इन ऋचाओं के जप के साथ हाथ से घाव को झाड़े। इन्हीं से घाव घिसे। (कौ० ४।७। इन्हीं से सहसा, धन–क्षय-निवारणार्थ द्यावापृथिवी का होम, जपादि करें। (कौ० ७।१०) सव यज्ञ में "द्यौश्चमे" (६।५३) इन तीन ऋचाओं से मन्त्रोक्त इन्द्रियों को अभिमन्त्रित करे। साथ में ६।५३ के "पुनर्मेत्विन्द्रियम् (७।६९) से अभिमन्त्रित करे। (कौ० ८,७) इन्ही से मेधाजनन कार्य में क्षीरौदन व रस को अभिमन्त्रित कर खाये। और सूर्य का उपस्थान इसीसे मेधाकार्य में करे। कौ० २।१ देखें।

सू. ५४ "पुनः प्राणः (६।५४-२) से उपनयन गोदान कर्म में क्षुरा को धोकर नापित

को दे और इसके साथ "पुनर्मैत्विन्द्रियम्" (७।६९) से उपर्युक्त कर्म करे कौ० ७।५। उपनयन कर्ममें " सं वर्चसा" से जलपात्र को अभिमन्त्रित कर ब्रह्मचारी को छींटे दे और देखे। को ७ सू १०२-२ व सं वर्चसा: (६।५३।३) कौ० ७.६ का कार्य करे।

सू० ५५ "इदं तद् युजे" तीन ऋचाओं से अभिचार कर्म निवारणार्थ ढाक के बीच के पत्तों से, फूलों आदि से होम करे। (६।२)

"अस्मैछत्रम्" (६।५५-२) से पौर्णमास याग में अग्नि सोम के चरु का होम करे कौ० (१।४)।

सू० ५६ "ये पन्थान:" तीन ऋचाओं से देशान्तर की शुभ यात्रा में पूर्वोक्त तेरह पदार्थों से होम करे। इन्हीं से स्वस्त्ययनार्थ दूध भात अभिमन्त्रित कर खिलाये। (कौ० ७।३) "ग्रीष्मो हेमन्त" (६।५६-२) से ब्रह्मा, अन्यत्र यात्रा वाले को अनुमन्त्रित करे (वै० १।२)। अभिचार कार्य निवारण में "इदावत्सराय" ७।५६-३) से होम करे।

"चान्द्राणां प्रनवादीनां पञ्चकेपञ्चत्वके युगे।

संपरीदान्वित्ये तच्छब्दपूर्वस्तु वत्सराः। इति।

तदभिमानिदेवाश्च तैत्तिरीये समाम्नातः॥ अग्निर्वावसंवत्सरः। आदित्यः परिवत्सरः। चन्द्रमा इदावत्सरः। वायुरनुवत्सरः अनुवत्सरः इद्वत्सरः" इति यथाक्रमं संज्ञाभवति (तै० वा० १।४।१०।१।

सू० ५७ "मानोदेवा:" इन तीन ऋचाओं से सर्प, बिच्छू आदि के भय निवारणार्थ घर, खेत आदि में बालू अभिमन्त्रित कर चारों ओर छिड़क दे। इन्हीं से आम्र आदि की पत्तों की माला, ग्राम, घर आदि के द्वारों पर बाँधे। इन्हीं से गौ का गोमय अभिमन्त्रित कर द्वार, घर, क्षेत्र में छिड़के, गाड़ दे. होम करे। इन्हीं से अपामार्ग की ऊपर की मन्जरी, गुड़, वच से पूर्ववत क्रिया करे। कौं० सू० ७।१ अ० वे० कां० ३ सू० २६, २७, (६ ५६) तथा "यस्ते सर्पः (कां १२ १-४६ से उपर्युक्त कर्म करे। इन्हीं तीन से उपाकर्म में घृत होम कर दही सत्तू मिला खिलाये। (कौ० १४।३)

कां ६ सू० ५७-१ "इदमिद् वाउभेषजम्" इन तीन ऋचाओं से-बिना मुख के घाव को गोमूत्र से धोये, बाँधे। और दाँतों का मल अभिमन्त्रित कर लगादे। इसीसे झाग (फेन) अभिमन्त्रित कर व्रण पर मने। (कौ० ४।७)

कां. ६ सू० ५७ "शंचनोमयश्चनः" शान्तिगण के साथ विनियोग करे। इन्हीं से अर्थोत्थापन विघ्न शान्ति हेतु क्षीरोदन होमादि कां ६ सू० ५१ के कर्म करें।

कां ६ सू० ५८ "यशसंमेन्द्रः" इन ३ से यश प्राप्ति हेतु इन्द्र का होम, उपस्थान करे। (कौ० ७।१० देखें) तथा उत्सर्जन कर्म में इन्हीं से होम करे और रसपान करे। तथा "गिरावरगराटेषु" (६।६९) को भी उपर्युक्त कार्य में विनियोग करे। कौ० १४।३

सू० ५९—अनडुद्भ्यस्त्वं प्रथमम्" इन ३ ऋचाओं से बृहद्गण कार्य करे और अर्थोत्थापन विघ्न शमनार्थ (६।५१) की भी समस्त विधि करे।

(६।५७–३) "शंचनोमयश्चनः" (५९) उपर्युक्त (६२) वैश्वानरो रश्मिभिः (६१) मह्मम् आपः से समस्त उपर्युक्त कर्म करे (कौ० ५।५)

इन्हीं ३ से स्वस्त्ययन कामी पूर्वोक्त १३ पदार्थों से होम करे। "पातं नः" (६।३) ये ५। व (६.५९) यमोमृत्युः (९३)" विश्वजित (१०७) शकधूमम् (१२४) भवाशर्वौ (११।२) उपर्युक्त कार्य में निहित हैं (कौ० ७।१)

सू० ६० "अयम् आ याति" इन ३ ऋचाओं से पति प्राप्ति हेतु कन्या उषः काल में कौये चलने से पूर्व घी का होम करे (कौ० ४।१०)

सू० ६१—"मह्ममापः" तीनों बृहद्गण कार्य में विनियोग करें। तथा (६।५९) के अर्थोत्पादनादि में निराकरण कार्य करें। तथा कूप, वापी, तडाग — में स्वादु-प्रचुर जल के लिये इन्द्र का होम करे (कौ० ७।१०)

सू० ६२—"वैश्वानरो रश्मिभिः" ये बृहद्गण के साथ कार्य में निहित हैं। इन से (६।५९) अर्थोत्थापन विघ्न—शमन कार्य करे। ये तीन ऋचायें पवित्रगण में हैं। सब यज्ञ में प्रोक्षण करें। कौ० (८।२)

सू० ६३ 'यत्तें देवी" इन तीन ऋचाओं से जौ तिल के होम के साथ ब्रह्मचारी के कण्ठ में दर्भ की रस्सी बांधे। और अवकीर्णी को दर्भ रज्वा से छींटे दे। (कौ० ५।१०) देखें। इन्हीं से अग्नि चयन में 'नै ऋतोष्टकोपधानान्तरं रुक्मपाषसहितां प्रास्ताम् आसन्दीम् अनुमन्त्रयेत्" इति वै० ५।१। वहीं पर अग्निचयन में 'संसमित' इससे आनुष्टभीरिष्टका उपधीयमाना ब्रह्मा अनुमन्त्रित करे। (६।६३)

सू० ६४ "संजानीध्वम्" तीन ऋचाओं से सांमनस्य कार्य में–शान्ति घट में सुराघट उड़ेल, अभिमन्त्रित कर ग्राम के अन्दर डाले, धार दे। और इन्हीं से भात अभिमन्त्रित कर खाये। और सुरा (प्रणीतामजल) अभिमन्त्रित कर पिये। 'स हृदयं' (३।३०) 'तेहूपु' (५।१–५) 'सजानीध्वं' (३।६४) 'एहयातु' (७३) 'संव:पृच्यन्ताम् (७४) से परिक्रमा करे तथा अन्य उपयुक्त कार्य करे। (कौ० २।३)

सू० ६५ "अवमन्यु:" तीन ऋचाओं से संग्रामजय कर्म करे। आज्य होम, सक्तु होम धनु व शर दान, धनु व शर समिधाओं से होम करने से शत्रु देखते ही भाग जाते। 'अदारस्टत' (१।२०) स्वास्तिदा: (१।२१) अवमन्यु (६।६५) कौ० (२।५) देखें। तथा ये तीनों अपराजितगण कार्य में निहित हैं (अभय व अपराजित) से होम करें। (कौ० १४।२)

सू० ६६ "निर्हस्त:" ये भी तीनों (६।६५) की भाँति संग्रामजय कार्य में विहित हैं।

सू० ६७ "परिवर्त्मनि" तीनों (६६) की भाँति संग्रामजय कर्म में निहित हैं। इन्हीं से पर सेना विद्वेष-त्रासार्थ सेना को ३ पग चलाये। इन्हीं से सोममणि को चर्म से युक्त कर राजा के बाँधे। (६७) व 'इन्द्रो जयाति' (६।९४) से राजा त्रिवार सेना की परिक्रमा करे। (कौ० २।७) इन तीनों ऋचाओं से 'अभयगण व अपराजित गण के साथ आज्य होम करे। कौ० (१४।३)

सू० ६८ "आयमगन्सविताक्षुरेण" इन तीन से गोदान-चूड़ाकरण में क्षौरार्थ, उदक-घट अभिमन्त्रित करे। "अदिति: श्मश्रु (६।६८–२) से क्षौरार्थ अभिमन्त्रित जल से सिर के बालों को गीला करे। 'येनावपत्' (३) से क्षौर (बालों का मुण्डन) करे। कौ० (७।३) इन्हीं से उपनयन कर्म में क्षौरार्थ जल अभिमन्त्रित करे। 'आयमगन्' से क्षुरे को धोये 'उष्णेन वायो' से जल अभिमन्त्रित करे। 'आदित्या रुद्रा:' से यज्ञोपवीती के शिर को गीला करे 'सोमस्यराज्ञ:' तथा 'येनावपत्' से क्षौर करे। कौ० (७।६) 'गिरावरगराटेपु' तीनों से मेधाजनन कामी उठकर मुँह धोये। 'प्रातराग्निम्' (३।१६) व (६।६९) व 'दिवस्पृथिव्या' (६।१) से उठकर मुँह धोये (कौ० २।१)। इन्हीं से कुमारी के वर्चस्कर्म में दही, शहद अभिमन्त्रित कर खिलाये। वैश्य, शूद्र को चावल अभिमन्त्रित कर खिलाये।

क्षत्रियादि के वर्चस्कार्य में (सू. २।३) में निर्दिष्ट ७ व अन्य काभी मर्म

(घुला जल) स्थालीपाक में डाले, अभिमन्त्रित कर खिलाये। इन्हीं से जल अभिमन्त्रित कर स्नान कराये, छींटे दे। (कौ० २।४ भी देखें) उत्सर्जन कर्म में घी से होम करें, रस (प्रणीता जल) में डाल पिये। कौ० १४।३ 'शत्ताष्मृण्णाम् आसिच्यमानाम्' इति वैं० (५।३)।

(६।६९-३) "मयिवर्चो अथो यश" से स्वर्गौदन, ब्रह्मौदन के चावलों को अवसेक दे। प्राश्चित्तार्थ—ब्रह्मा यजमान से कहे। (कौ० ४८।९)

सू० ७० "यथामांसम्" इस सूक्त से गौ, बछड़ा आदि के परस्पर विरोध निवारण हेतु बच्चे को स्नान कराये, गोमूत्र से छींटे दे, बच्चे के ऊपर ३ बार घुमा थन पीने दे। इसीसे गौ के शिर, कान को अभिमन्त्रित करे। कौ० ५।५।

सू० ७१ "यद्अन्नम्" तीनों से दुष्टादुष्ट प्रतिग्रह-दोषनिवारणार्थ प्रतिग्राह्य वस्तु को अभिमन्त्रित कर ले। कौ ३।२९; ७० क इदं कस्मा अदात् 'कामस्तद्अग्ने' (१९।५२) 'यद्अन्नम्' (६।७१) 'पुनर्मैत्विन्द्रियम् (७।६९) से ग्रहण करे (कौ ५।९)। इन्हीं से नित्य ब्रह्मचारी भिक्षा से होम करे कौ. (७।४) दर्शपूर्णमासयोः पुरोडाश-भागम् 'यद्अन्नम्' से ब्रह्मा भोजन करे। (वै. १।४)

सू० ७२-३ "यथासितं" तीनों से वाजीकरण कार्य में एक शाखा के आक की बनी मणि अभिमन्त्रित कर आक के सूत्र से ही बाँधें। इसी कार्य में 'यानवङ्गीनम्' (९) ऋचा से काले चर्म की मणि काले मृग के बाल से लपेट कर बाँधे। कौ० ५।४

सू० ७३ "एहयातुवरुणः 'प्रथम' 'सं वः पृच्यन्ताम्' (२) का सांमनस्य कर्म (६।६४ के अनुसार विनियोग है। (कौ० १।८)

(६।७४-३) "इहैव" इस ऋचा से नवशाला प्रवेश कर्म में यजमान अर्घ्य देकर पढ़े। 'यजूंसि यज्ञे (५.२६) 'इहैवस्त' (६।७४-३) वाचं विसृजते (कौ० ३।६)

सू० ७५ "निरमुंनुदे" से अभिचार कार्य में दर्भस्तरण करे तथा अभ्यातान में इङ्गिडहोम करे। और संस्थित होम भी करे। सू० ७६ "य एनंपरणीदन्ति" इन ४ से विजयेच्छु-खङ्गादि को डाल, हाथ से धो, अभिमन्त्रित कर धारण करे। रात्रिस्वस्त्य यनार्थ—इनको जपे, मुख धोये। देशान्तर गमन में कार्य सिद्धि हेतु उठकर चार को जपे, तीन पग परिक्रमा कर यथास्थान जावे। सौरभूमि को स्पर्श व नमन करे। (कौ० ७।१)

काण्ड ६ सू० ७७ "अस्थाद् द्यौः" इन ३ ऋचाओं से भगोड़ी स्त्री के निरोधार्थ रस्सी बटकर अभिमन्त्रित कर खम्भे के मध्य में बांध दे। और स्त्री की खाट के चारों पाये इन्ही ऋचाओं से अभिमन्त्रित कर पैरों की ओर बांध दे इसी कार्यार्थ, इन्ही ऋचाओं से तिल होम करे (कौ० ४।१२)

सू० ७८ "तेन भूतेन' तीनों से विवाह काल में बरवधू के सिर पर होमान्त अवसेचन करे। और इन्हीं से षट रस-व्यञ्जन अभिमन्त्रित कर जाया व पति को खिलाये। इन्हीं से अञ्जलि के जौ, व खील व शमी पत्रों का घी के साथ होम करे। ऋचा "तेन भूतेन (६।७८) "तुभ्यमग्ने" (१४।२) "शुम्भनी" (७।११७) से परिक्रमा करे और उपर्युक्त कर्म करे। कौ० १०।४

सू० ७९ "अयं नो नभसस्पति" तीनों से धान्य की बहुलता के लिये पत्थर को धो अभिमन्त्रित कर खलिहान में रख उससे ऊपर प्रत्येक ऋचा से ३ धान्य-मुष्टि रक्खे। यह रात्रि के समय करे (कौ० ३।४

सू० ८० "अन्तरिक्षेणपतति" तीनों से काक, उलूक, कपोत, बाज आदि के स्पर्श किये अङ्ग पर मार्ग की मिट्टी ले अभिमन्त्रित कर लगा दे। इसी दोष निवारणार्ण-श्वान के शरीर पर बैठी मक्खी को अभिमन्त्रित कर अग्नि में फेंक, शरीर को धूप दे। कौ० ४।७

सू० ८१ "यन्तासि" तीनों ऋचाओं से गर्भधान में कंकण को अभिमंत्र्य स्त्री के हाथ में बांध दे। कौ० ४।११

सू० ८२ "आगच्छतः" इन ३ ऋचाओ से पत्नि कीं कामना वाले, इन्द्र का होम व उपस्थान करें। कौ० ७।१०

इन्हीं तीनों से विवाह समय होम कर वर वधू की मूर्धिन को अवसेचन करे "आगच्छतः (६।८२) सविता प्रसवानाम् (५।२४) कौ० १०।४

सू० ८३ "अपचितः" तीनों ऋचाकों से गण्डसाला की चिकित्सा में शंख को पीसे अभितन्त्रित कर श्वान को लाल (लार) के साथ या अलग-अलग लेप करे। इसी कर्म में (जलूका ग्रहगोधिका) जौंक को अभिमन्त्रित कर घाव से चिपका दे। या सैंधा नमक पीस कर अभिमन्त्रित कर बुरके और चुप बैठे। अपचितः (६।८३)

आसुस्त्रस: (७।८०) कौ. ४।७ भी देखें। इसी रोग के निराकरण में "ग्लोरितः प्रपतिष्यति" इस आधी ऋचा से गो मूत्र अभिमन्त्रित कर धोये। इसी ऋचा से दांत के मल को अभिमन्त्रित कर चुपड़ दे। कौ० ४।७)

सू० ८४ "व्रीहिस्याम्" ४ ऋचाओं से चौपाये की गण्डमाल की चिकित्सा शान्ति जल अभिमन्त्रित कर धोये। इन्ही से घृत होम करे। मानसिक संकल्प कर-धोये। कौ० ४।७

सू० ८५ "वरणो वारयति" तीनों से राजयक्ष्मादि के निराकरणार्थ वरण वृक्ष की बनी मणि को अभिमन्त्रित कर पुनः जप कर बांधे "शनोदेवी (२।२५) "वरणः" (६।८५) "पिप्पली:" (६।१०९) कौ० ४।२।

सू० ८६ "वृषन्द्रस्य" तीनों ऋचाओं से श्रेष्ठ्यकामार्थं इन्द्र याग व उपस्थान करे। कौ० ७।१०

कांड ६ सू० ८७ "आ त्वाहार्षम्" "ध्रुवाद्यौ" (८८) इन तीनों से स्थैर्य कार्य में इन्द्र याग व उपस्थान करे। कौ० ७।१० तथा भूमि कम्प लक्षणोत्पात उपशमनार्थ इन ऋचाओं से घृत होम करे। जहां भूमि चले परिक्रमा करे (६।८७,८८) "सत्यं वृहत (१२।१) से होम करे (कौ० १३।६)

यदि जल के घट स्वयं ही फूटते हों तो इस अद्भुत दोष के निवारण तथा नये घटों की स्थिरता हेतु"(६।८७,८८) तथा "समुद्रं वः प्रहिणोमि (१०।५-२३) से अभिमन्त्रित करे। कौ० १३।८४

इन्द्र महोत्सव में इन्हीं से इन्द्र देव का उत्थापन करे "अथराज्ञम् इन्द्र महस्यो पचारकल्पम् "सपरिक्रमा करे (कौ० १४।४)

अग्नि चयन में उन्नीत उख्याग्नि को ब्रह्मा (६।८७) से अनुमन्त्रित करे "संशितम् में" (३।१९) से "उख्यं उन्नीयमानम् आ त्वाहर्षम्। (६।८७) वै० ५ १

सू० ८९ "इदं यत्प्रेण्यः" इन तीनों मे पति पत्नि की परस्पर प्रगाढ़ प्रीति हेतु शिर और कान अभिमन्त्रित कर केशों (चोटी) को धारण बन्धन करे। कौ० ४।१२

सू० "यां इन्नतेरुद्रः" तीनों से शरीर शूल रोग परिहारार्थ-लोह या पाषाण मणि अभिमन्त्रित कर बांधे "यह रुद्रदारिल भाष्यकार का कथन है। भद्र भाष्यकार के मत

से-शूलिनः दर्द के रोगी के दर्द स्थान को अनुमन्त्रित करे। कौ० ४।७ दर्द वाले के दर्द (शूल) को अभिमन्त्रित करे।

सू० ६१ "इमं यवम्" तीनों की आधी-आधी ऋचाओं से सर्व रोग निवारणार्थ घृत होम कर-जौ युक्त पात्रों में से २ से पृथ्वी पर अर्घ्य दे मृत्सहित उदक पात्र के जल से रोगी को छींटे दे, स्नान कराये। इसी कार्य में इन्ही ऋचाओं से यव मणि को अभिमन्त्रित कर बांधे। "दिवेस्वाहा" (५।९) इमं यवम् (६।६१) इन ४ से कौ० (४।४)

सू० ६२ "वातरंहा" इन तीनों से घोड़ों के उपद्रव शान्त्यर्थ घृत होम कर, प्रणीता जल से सूत्र के अनुसार अश्व को स्नान पान कराये। पलाश चूर्ण उसमें मिला दे। कौ० (५ ५) देखें।

सू० ६३ "यमोमृत्यु" यह सूक्त वास्तोष्पति गण में नक्षत्र कल्प (१८) के अनुसार है उसी के सब कार्यों में विनियोग करे। तथा स्वस्त्ययन कार्य में इन ३ से पूर्वोक्त १३ पदार्थों से होम करे "यमोमृत्युः (६३) "विश्वजित (१०७) "शकधूमम् (१२८) "संवो मनांसि" इन तीनों ऋचाओं से सौमनस्यकर्म में अभिमन्त्रित जल के घट से ग्राम में धार दे। सुरा पात्र से भी धार दे। तीन वर्ष की गौ के गोमय से संग्रहीत जौं के अन्न का प्राशन (भक्षण) करे। सुरा को प्याऊ में डालकर उन पशुओं को पिलाये (सुरा से औषधियों का ३ दिन रक्खा अभिमन्त्रित जल) कौ० २।३ में (६ ६४) "संज्ञानांनः" (७।५४) का विधान है।

सू० ६५ "अश्वत्थ देवसदनं}" तीनों से राजयक्ष्मा-कुष्ठादि व्याधि निवारणार्थ कुष्ठ नाशक औषधि को मक्खन में मिला अभिमन्त्रित कर लेप करे। (कौ० ४।४) "गर्भोऽसि" ९ वीं ऋचा (सूक्त ६।९६ से) अग्नि चयन में जल में भस्मादि उक्त पदार्थ डाल ब्रह्मा जपे वै० ५।१)

"या औषधयः" तीनों से ब्राह्मण शाप निवारणार्थ व जलोदर के निराकरणार्थ सोमलता को अग्नि में डालकर रोगी को धूप दे। और दही, शहद अभिमन्त्रित इन्हीं से करे-पिलाये। तथा दूध व मट्ठा मिला अभिमन्त्रित कर पिलाये तथा दही, दूध, शहद मिला अभिमन्त्रित कर पिलाये। कौ० ४।७ देखें

सू० ६६ "या ओषधयः" अंहोलिङ्गकाण कार्य में प्रयुज्य है (कौ० ४८)

कां ६ सू. ९७ "अभिभूः", इन्द्रो जयति" (९८) "अभित्वेन्द्र (९९) इन तीनों से संग्रामजय कार्य में आज्य, सक्तु, धनु, शर होम व धारण। पूर्व संग्रामवत करें। कौ० २.५ ये तीनों अपराजित गण में हैं। अभय तथा अपराजित गण कार्यों में विनियोग करें। कौ० १४।३। तथा महेन्द्राख्य कर्म में पूर्ण होम इनसे ही करें। इन्हीं से पशु-बलि इन्द्र उत्थापन कार्य भी करें। कौ १४.४।

सू० ९८ की तीन ऋचाओं से शत्रु सेना में परस्पर द्वेष कराने हेतु राजा तीन बार सेना की परिक्रमा करे। यथा 'परित्वत्मनि' (६।९७) 'इन्द्रोऽयति' (६।९८) कौ. २.७ तथा महाव्रत को तत्पर राजा या अन्य जो भी हो को ब्रह्मा अनुमन्त्रित करे 'मर्माणि ते' (७।१२३) इति सन्नध्यं ('इन्द्रोजयाति') (६।९८) अनुमन्त्रित करे वं० (६।४)।

सू० ९९ "अभित्वेन्द्र" तीनों को पूर्ववत संग्रामजय कर्म में विनियोग करे। अग्निष्टोम व प्रातः सवन में इनसे ब्रह्मा, स्तोत्र को अनुमन्त्रित करे (वै० ३।८)।

सू० १०० 'देवाअदुः" तीनों से स्थावर, जङ्गम विष निवारणार्थ-सर्प, वामी की मिट्टी अभिमन्त्रित कर जल मिला लेप करे, आचमन करे, पिये, बाँधे ; कौ. ४।७ तथा आहिताग्नि के अन्त्य (मृत) संस्कार में पिण्ड छाती पर रख इससे अनुमन्त्रित करे। कौ० ११।२

सू० १०१ "आवृपायस्व" तीनों से वाजीकरण कर्म में एक शाखा के आक की मणि को आक के धागे से बाँधे। काले हिरण का चर्म, हिरण के काले बाल के धागे से लपेठ अभिमन्त्रित कर बांधे। कौ० ५।४

सू० १०२ "यथायं वाहः" स्त्री वशीकरणार्थ वृक्षों की छाल शरखण्डा, तगर, आञ्जन (घास) कूठ, वातसंभ्रम (श्वेत घास) पीसे, घी में मिलाये, अभिमन्त्रित कर स्त्री के अङ्क में लेप कराये। यथा" वाञ्छमे (६।९) यथाहं वाहः (१०२) कौ० ४।११।

सू० १०३ "संदानं वः" आदानेन (१०४) से संग्राम-जय कामनार्थ-भांग-दिया, इङ्गिडादि के रज्जु पाशो को अभिमन्त्रित कर पर सेनाक्रमण क्षेत्र में फैंक दे वांध दे (कौ० २।७)

सू० १०४ "यथामनो मनस्कंते" इन तीनों से कास-१ ले श्लेष्मादि रोग निवारणार्थ सक्तू अभिमन्त्रित कर खाये। इन्हीं से अभिमन्त्रित जल को पिये इन्ही से सूर्य उपस्थान करे। "यथामन: (१०५) "अवदिव:" (७।१११) से भी कार्य करे (कौ० ४।७

सू० १०६ "आयने" इन तीन से घर आदि के बीच अग्निभय से रक्षणार्थ गर्त कर अभिमन्त्रित कर जल को भर दे (गाढ़ दे)। इन्ही से इसी कार्यार्थ छपरी छाकर अभिमन्त्रित कर ऊपर तान दे। तथा इन्हीं से शाप या गाली देने वाले को गर्म उड़द का तैल मिला अभिमन्त्रित कर दे। तथा अग्नि से दग्ध कर इससे अभिमान्त्रित जल से धोये। कौ (७।३)

सू० १०७ "अपाम् इदम्" हिमस्यत्वा" इन ऋचाओं से अग्नि चयन में "चिति" वेदी को छींटे दे यथा "इदं व आप: (३।१३-७) "हिमस्यत्वा (६ १०६-३) "उपद्याम इप वेतसम्' (१८।३-५) "अपाम् इदम्" (६।१०६-२) (वै० ५।२)

सू० १०७ "विश्वजित" चारों बृहद्व्रण कार्यो में विनियोग करे। तथा स्वस्त्ययन कार्यो में पूर्वोक्त १३ पदार्थो से हवन करें। यथा (६।१०७,१२८) (११।२) कौ० ७।१

सू० १०८ "त्वं नोमेधे" इन ५ से मेध जननार्थ दूध-भात अभिमन्त्रित कर खाये। सूर्य का इन्ही से उपस्थान करे। यथा (६।१०८,५३) कौ० २।१। तथा उपनयन में पाँचों से अग्नि का उपस्थानादि करे (कौ० ७।८)

काण्ड ६ सू० १०९ "पिप्पली क्षिप्त भेषजी" इन ३ से धनुर्वात क्षिप्तवात, कृत्स्नवात से पीड़ित रोगी को पिप्पली अभिमन्त्रित कर जप के साथ चटाये "यथा— "पिप्पली (६।१०९) विद्रधस्य (६।१२०) या बभ्रव: (८।७ से परिक्रमा कर, चौथे से चटाये) कौ० ४।२

सू० ११० "प्रत्नोहि" इन ३ से पाप-नक्षत्र मे उत्पन्न जीव को अभिमन्त्रित जल से छींटे, स्नान, पानादि करे। इसी कार्य में इन्हीं से अभिमन्त्रित दूध-भात खिलाये। कौ० ५।१०

सू० १११ "इमं मे अग्निे" ये चारों मातृनाम गण में हैं तत्प्रयुक्त कार्य करे। कौ० १३।२ तथा गन्धर्व राक्षस, अप्सरा, यक्ष, भूत, पिशाच, वैताल, दक्षिणी,

कृत्या, नैॠति, वशा, क्रव्या आदि की पीड़ा निवारणार्थ इसका प्रयोग करे। कौ० ४।२

सू० ११२ "माज्येष्ठम्" (११३) त्रितेदेवा" इन तीनों से परिवेत्ति-परिवेत्ता के दोष निवारणार्थ घड़े के अभिमन्त्रित जल से पर्व में मूंज की रस्सी बाँधे (पवित्री) छींटे, स्नादि कराये। और "नदीनां फेनान्" इस आधी ऋचा से उत्तर पाशों को नदी बहाव में डाले और प्रवेश नदी में करे। कौ० ५०।१०

सू०११४+ १५ "इस पूरे अनुवाकके ५ सूक्त आचार्य के मृत्यु उपरान्त कार्य में विनियोग है इसी से समिध, घी, पिण्ड, शय्यादानादि के साथ होम का विधान है। पाकयज्ञ द्वारा वैवस्वतदेव को आहुतियां दें। इसी से घट व शय्या आदि अभिमन्त्रित कर ब्राह्मण को दे। कौ० ५।१०। तथा अन्त्येष्टिकर्म में चिताग्नि में घी से होम करे। (न० क० १७) त्रिहिनाया याम्याख्यायां महाशान्तौ "यद देवा देव हेडनम्" इति अनुवाकेन आवपेत" तथा सब यज्ञ में (६,११४,११५ व ११७) इन तीनों ऋचाओं से पूर्णाहुति दे। (कौ० ८।८। तथा उपर्युक्त ११४।११५ से अग्निष्टोम के तृतीय सवन में आदित्य ग्रह होम को ब्रह्मा अनुमन्त्रित करे। (वै० ३.१२)। तथा अग्निष्टोम के तृतीय सवन में इन दोनों से सर्व प्रायश्चित्त होम करे (वै० ३।१३) तथा इन्हीं ३ ऋचाओं से आग्रयणेष्टि में वैश्वदेव को ब्रह्मा चरु अनुमन्त्रित करें। (६।११५) द्यावा पृथिवी उप ग ुन्या (२।१६-२) सोमो वीरुधाम् (५।२४ ७) से वैश्वदेव करे (गै० २।४)

सू० ११६ "यद यामं चक्रुः" इन तीनों से घी, तेल, शहद, समभाग लेकर वृद्धिक्षय लक्षण की अद्भुत क्रिया के दोष निवारणार्थ आज्य होम करे। कौ०१३।४०

सू० ११७ "अपमित्यम् अप्रतीत्तम्" ११८-११९ तीन ऋचाओं से उत्तम वर्ण की मृत्यु होने पर उनके पुत्र या गोत्र वालों को ऋणी अभिमन्त्रित कर ऋण दे। तथा उत्तम वर्ण वाले के द्रव्य को अभिमन्त्रित कर मशान या चौराहे पर रक्खे। तथा इन्हीं तीनों से धन को पोटली में रख अभिमन्त्रित कर तथा। कौ० ५।१०। तथा इन्ही तीनों से सब यज्ञ में पूर्ण होम करे। तथा लौकिकाग्नि से शाला जलने पर-शान्ति हेतु सप्तधान्य से अञ्जलि से पूर्णाहुति दे। कौ० (१३।४१) तथा अग्निष्टोमावसान में गार्हपत्याग्नि, वानप्रस्थी-या स्वयं समारोपणानन्तर वेदी "अपमित्यम्" से अनुमन्त्रित करे। वै० ३।१४

सू० १२० "यद् अन्तरिक्षम्" चौथे सूक्त की ४ ऋचाओं से लकड़ी, लौह, रस्सी की वेड़ी के वन्धन मुक्ति के लिये-चर्ममय लोह युक्त पूर्व वेड़ी की भाँति करके अभिमन्त्रित करे, भूमि पर बनाये। कौ० ७।३

६ सू० १२२ "एतं भागम्"। १२३ "एतं सधस्थाः" दोनों से संस्थित होम करे। इनके साथ "उलूखले" (१०।६।२६) भी है (कौ० ८।४) इन्ही से अग्निष्टोम में पृथक्-पृथक् पिण्डादि के पास स्वकीय पितृगणों को लक्ष्य कर पिण्ड अनुमन्त्रित करे एतत ते प्रततामहः (२८।४।५५) वौ० ११।६। के अनुसार जप कर (६।१२२,१२३) श्येनो नृचक्षाः (७।४२-२) से अनुमन्त्रित कर भाग दे। वौ० ३।१२

यहाँ (१२३) "एतं सधस्थाः इन दोनों से ब्रह्मा वैश्वदेव होम अनुमन्त्रित करें (६।१२३–१,२) येना सहस्त्रम्" (६।५।१७) से वैश्वदेव। वै० ५।२

सू० १२४ "शुद्धापूताः" इस ऋचा से सब यज्ञ में ऋत्विजों के हाथ धुलाने को जल दे। (कौ० ८,४)

"देवा पितरः" १२३-३ यजमान के ऋषि कुलों का वर्णन करे (वै० १।२) दिवोनु मां वृहतः। (१२४) इन ३ ऋचाओं से आकाश जल से भीग जाने के दोष परिहरणार्थ जल अभिमन्त्रित कर शारीरिक उद्वर्तन करे। कौ० ५।१० देखें।

सू० १२५ "वनस्पते वीड्वङ्गः" इन ३ ऋचाओं से नये रथ को अभिमन्त्रित कर जय कामार्थ राजा को रथ पर चढ़ाये। सूक्त (६।१२४) अयविष्टा (७।३) अग्न इन्द्रः (७।११५) दिशाश्चतस्रः (८।८।२२) से नये रथ पर मय सारथी के राजा को विठाये। कौ० (२।६) तथा "इन्द्रस्यौजः" (२६-३) से इसी कर्म में रथ चक्र को धूप दे। "इन्द्रस्यौजो मरुताम अनीकम्" ६।१२५-३) वनस्पते वो वीड्वङ्गः (६।१२५) से वैठाये (वै० २।२)। तथा महायात्रा के माध्यन्दिन हवन में इससे अभिमन्त्रित कर राजा या अन्य को भी विठाये (वै० ६।४)

सू० १२६ "उपश्वासय" इन तीनों से शत्रु सेना में भय-द्वेषादि के हेतु भेरी को सूत्रोक्त रीति से अभिमन्त्रित कर ३ वार वजा अन्य वजाने वाले को दे :"उच्चैर्घोषः" (५।२०) उपश्वासय (६।१२६) से समस्त वाजों को छींट कर तगर, उशीर से धोकर धूप दे, ३ वार वजाकर वाजे वाले को दे (कौ० २।७) महाव्रत में इन तीनों से भूमि व भेरी को ताडन करे। वै० (६।४)

सू० १२७ "विद्रधस्य बलासस्य" इन ३ ऋचाओं से जलोदर-विसर्प आदि रोग निवारण भेषजार्थ रोगी के शिर पर अभिमन्त्रित कर झाड़ दे। उसी के निवारणार्थ ४ आंगुल ढाक कीं लकड़ी पीस अभिमन्त्रित कर रोगी के शरीर पर मल दे। यथा" विद्रधास्य (६।१२७) या बभ्रवः (८।७) कौ० ४।२।

सू० १२८ "शकधूमम्" इन ४ ऋचाओं से स्वस्त्ययनार्थ पूर्वोक्त १३ पदार्थों से होम करे। इन्हीं से नित्य-नैमित्तिक काम्य कर्मों के शीघ्र फलार्थ ब्राह्मण की सन्धि (घर के छद्रादि) गोमय पिण्ड रख अग्नि की कल्पना कर अभिमन्त्रित कर सूत्रोक्त प्रकार से प्रश्नोत्तर करे। सूक्त "शकधूमम् (६।१२८) भवाशर्वौ (११।२) कौ० ७।१ (उत्तमैन सुहृदो ब्रह्माणस्य शकृत्पिण्डान्-पवस्त्राधय) शकधूमं किम्। अद्याहरिति पृच्छति। भद्रं सुमङ्गलम् इति प्रतिपद्यते (कौ० ७।१) तथा सोम ग्रहण जनित अरिष्ट-निवारणार्थ इससे घृत होम करे। कौ० १३.८ तथा ग्रहयाग में सोम देवता को इससे होमादि करे (शान्ति कल्प १५)

सू० १२९ "भगेन मासम्" इन ३ से शंख पुष्पी की जड़ को खोदे अभिमन्त्रित कर सौभाग्यार्थ बाँध-धारण कर इसी कर्म में शंख पुष्पी के पुष्प को अभिमन्त्रित कर शिर पर बाधे। यथा (६।१२९) न्यस्तिका "६।३९ इदंखनामि" ७।३८) कौ० ४।१२।

सू० १३० "रथजिताम्" ३ सूक्तों से दुष्टस्त्री वशीकरणार्थ उड़द अभिमन्त्रित कर स्त्री के फिरने के स्थान में डाल दे। इसी कार्यार्थ इन्हीं से "लूकटी) जला प्रतिदिन फैंकदे। इसी कर्म में स्त्री की प्रतिभा भूमि आदि पर बना शृङ्गार करे धनुष पर बाण चढ़ा इन ३ ऋचाओं से हृदय को बांधे। कौ० ४।।२

सू० १३१ "निशीर्षतो निपत्तत:" इस सूक्त का पूर्व ३ ऋचाओं से सम्बन्ध है।

सू० १३२ " य इमां देवी मेखलाम्" इन ऋचाओं से अभिचार कर्म दीक्षा की मेखला की ग्रन्थि को रंग दे। तथा १३३ "मृत्योरहम्" से वाध की समिध रक्खे उप नयन कर्म में "श्रद्धाया दुहिता" १३४ की दोनों ऋचाओं से मूँज की मेखला बाँधे। कौ० ७।८

सू० १३४ "अयं वज्र:" की ३ ऋचाओं से अभिचार कार्य की दीक्षा में

दण्ड को अभिमन्त्रित कर धारण करे। इसी कर्म में इन्ही ३ से अन्न को अभिमन्त्रित कर कर्त्ता खाये। तथा कौ० ६।२

सू० १३५ "यद् अश्नामि" "यद्गिरामि (१३३ से उपर्युक्त कर्म में उक्त अन्न खाये। "यत् पिबामि" से जल अभिमन्त्रित कर उपर्युक्त कर्म में पिये। १३६ "देवी देव्याम्" "यां जमदग्निः" १३७ इन ३ ऋचाओं से केश वृद्धयर्थ काचमाची फलं, जीवन्ती फल भृङ्गराज मिला अभिमन्त्रित कर बांधे तथा इन्हीं के क्वाथ या जल से इन ऋचाओं के जप के साथ उषा काल में धोये। कौ० ४।७

सू० १३७ "यां जमदग्निम्" का सूक्त १३६ के साथ विनियोग करे।

सू० १३८ "त्वं वीरुधाम्" पूर्वोक्त सू० १३३ की ५ ऋचाओं के साथ विनियोग है।

सू० १३९ "न्यस्तिका" इस सूक्त से सू०६।१२९ "भगेनमासम्" के तुल्य स्त्री वशीकरण कर्म करे।

सू० १४० "यौ व्याघ्रौ" इन ३ ऋचाओं से पुत्र-पुत्री के प्रथम ऊपर के दांत उगने के दोष निवारणार्थ जौतिल चावलादि से होम करे। इसी कर्म में इन्हीं से धान, जौ, उड़द, तिल मिला अभिमन्त्रित कर उपजे दांतों से चबवाये। इसी कर्म में इसी मे पाक बना अभिमन्त्रित कर बच्चों को खिलाये। कौ०५।१०

सू० १४१ "वायुरेना: इन ३ से पुष्टयर्थ चित्रा कर्म में वृक्षों की टहनी डाल छीटे दे। इसी कार्य में "लोहितेन स्वधितिना" इस मन्त्र से बछड़े के कान छेदे इसीं कर्म में "यथा चक्रुः" (१४१-३) लोहित कान होने पर दही, शहद, घी, जल मिला अभिमन्त्रित कर बछड़े को पिलाये। कौ० ३।६

सू १४२ "उच्छ्रयस्व" इन ३ से पुष्टयर्थ बीज बोने में-जौ आदि के बीजों में घी, मिला अभिमन्त्रित कर प्रत्येक ऋचा से ३ मुट्ठी बैलों के पीछे कुड़ी में बोकर मिट्टी से दबा दे। कौ० ३।७



ओ३म्

अथर्व विधान काण्ड—७

यस्य निश्चसितं वेदायो वेदेभ्योखिलं जगत् ।
निर्ममे तम् अहं वन्दे विद्यातीर्थं महेश्वरम् ।
सातवें काण्ड में १० अनुवाक हैं । प्रथम अनुवाक में ३ सूक्त हैं ।

कां ७ सू० १ "धीति वाये" इन दो ऋचाओं से अर्थोत्थापन विघ्न शमनार्थ (पूर्वोक्त १३) अज्यादि से होम करे या जप । (कौ० ५।५) तथा अन्य सम्पूर्ण कर्म फलार्थी इन दो से इन्द्र, अग्निदेव का यज्ञ या उपस्थान करे । "तदिद आस" (५।२), "धीतिवा" (७।१) से इन्द्राग्नि (कौ० ७।१०) से याग या उपस्थान करे । इसी सर्व फल कामना से "अथर्वाणं पितरम्" (७।२) की आठ ऋचाओं से अथर्वा का याग या उपस्थान करे यथा "येस्येदमारजः" (६।३३) 'अथर्वाणम्' (७।२) 'अदितिर्द्यां' (७।६) । कौ० ७।१०।

सू० ३ "अयाविष्टा" इन २ ऋचाओं से नूतन रथ को अभिमन्त्रित कर, जय कामी राजा को बिठाये, यथा "अयाविष्ठा" (७।३) अग्नइन्द्र (७।११५) 'दिशश्चतरस्र.' (८।८।२२) । कौ० २।६

सू० ४ "एकयाच" इस ऋचाओं से घोड़ाओं के रोगप्रशमनार्थ सर्वौषधि चूर्ण घोड़ाओं के सिर पर छोड़े । यथा "वातरंहाः" (६।९२) से स्नानान्त परिक्रमा करे । (कौ. ५।५)

सू ५ "शुनासीरी" से चातुर्मास में वायव्य यागानुमन्त्रण करे । यथा—"वायव्यं शुनासीरीयं सौर्यम् एकयाचेति" (वै. २।५)

सू० ६ "यज्ञेन" इससे सोमयाग में—आतिथ्येष्टि में ब्रह्मा हविका का अभिमर्शण करे । वै. (३।३)

दुःखेन यन्न स्वर्ग संभिन्नं न च ग्रस्तम् अनन्तरम् ।
अभिलाषोपनीतं यत् सुखं स्वर्गपदास्पदम् । (तै. ब्रा. १।३ ८५)

भ. गी. १५।६—यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ।

मनः एव मनुष्याणां कारणंबन्ध मोक्षयोः बन्धायविषयासक्तं मुक्तेर्निर्विषयंस्मृतम्

सू ७।७ "अदितिर्द्यौरदितिः" इसकी प्रथम ४ ऋचाओं से सर्व फलकामी अदिति का यज्ञ या जप करे यथा 'अथर्वाणम् (७।२) अदितिर्द्यौः (७।६) "दितेः-पुत्राणाम्" (७.८) । कौ. ७।१० तथा आधान में पवमानेष्टि में आदित्य का याग करे यथा—"पवमानःपुनातु" (६।१९-२) त्वेपस्ते (१८।४।५९) "अग्नी रक्षांसि" (८।३-२६) अदितिर्द्यौः (७।६) । वै० (२।२)

सू० ७ (६) ।२ "महीमूषु" (७।६-२) इन तीन ऋचाओं से—नावादि से जल का घाट पार करते समय (नावादि) को अभिमन्त्रित कर पार हो तथा जलीयात्रा में नावादि से दूर देश जाने में स्वस्त्ययनकामी इन तीन ऋचाओं से अभिमन्त्रित कर, जप के साथ पार करें । इन्हीं ऋचाओं से इसी काम में नौमणि (नौका की लकड़ी व नौमणि, अभिमन्त्रित कर नाविक के बांधे (कौ० ७ ३)। इसी सूक्त ७।६-२ महीमूषु इस ऋचा से विवाह में चतुर्थी कर्म में खाट का स्पर्श करे । (कौ० १०।५)

आवसथ्याधान में कव्य द्विसर्जनानन्तर घर के पास नदी का स्वरूप बना जल भरे (७।६-२) तथा सुत्रामाणम् (७।७-१) सवितुर्नावमृएताम् (१२।२-४८) से धन, स्वर्णादि, धान्यादि से पूर्ण नाव में सवार हो । (कौ० ६।३)

सोमयाग की दीक्षा में "सुत्रामाणम्" (७।७-१) को मृग चर्म के आसन पर बैठकर यजमान जपे । "पुनन्तुमा" (६।१९-१) सूत्रामाणाम् (७।७-१) (कृष्णाजिनम् उपवेशितः) वै० ३।१ । अग्नि चयन में "वाजस्यनुप्रसवे" (वै० ५।२) वाजप्रसवीय होम ब्रह्मा अनुमन्त्रित करे । (अ० ७।८—१) (वाज=अन्न)

सू० ८--२ "दितेः पुत्राणाम्" सर्व कामफलार्थ देवताओं का याग व जप करे (कौ० ७।१०) प्रवास से लाभार्थ "भद्रादधि"(७।९—१) पूर्वोक्त १३ या अन्य पदार्थ से होम या जप करे तथा इसीसे घोड़े की गाड़ी आदि से चलते समय घोड़ों को अभिमन्त्रित कर जोड़े, छींटे दे, और छोड़े । इसीसे विक्री के वस्त्रों को अभिमन्त्रित कर लाभार्थी वस्त्रों को अभिलषित स्थान को ले जाय तथा लाभकामी इसी ऋचा से वस्त्रों को अभिमन्त्रित कर, स्वीकार करे । कौ० ५।६ तथा गृहयाग में इसी ७।९—१ से वृहस्पति का यज्ञ करे । शान्ति कल्प १५ "सवुध्न्यात्" (४।१—५) भद्रादधिश्रेयः-प्रेहि (७।९) वृहस्पतिर्नः (७।५३) ।

सू. ७।१०—१ "प्रपथेपथाम्" इन ४ ऋचाओं से नष्ट द्रव्य लाभार्थ नष्ट द्रव्याकांक्षी के दाँये पैर, हस्त को धोये विसृज्य आगे फैलाये। इसी कर्म में इन्हो चारों ऋचाओं से २१ बार शक्कर अभिमन्त्रित कर, चौरास्ता पर रक्खे और बिखार दे। (कौ० ७।३) तथा चातुर्मास में वैश्वदेव पर्व पर इन्हीं ४ से पौष्णहवि अनुमन्त्रित करे। "प्रपथेपथाम" (७।१०) मरुतः पर्वतानाम् (५।२४-६) कौ० २।४

सू० १० "यस्तेस्तनः" प्रथम अनुवाक तृतीय सूक्त इसीसे जन्मगृहीत बालक की चिकित्सा के हेतु स्तन को अभिमन्त्रित कर बालक को पिलाये तथा इसी कार्य में इन्हीं ऋचाओं से प्रिसङ्गु के चावल के ऊपर स्तन का क्षीर दुहकर, अभिमन्त्रित कर, रोगी को पिलाये। कौ० (४।८)

सू० ७।११ "यस्तेपृथुस्तनयित्नु" इस ऋचा से आकाशी विद्युत तथा ओलों की वृष्टि निराकरणार्थ अभिमन्त्रित कर उस पर बैठे, उसे गाड़ दे। कौ० ५।२ तथा ग्रह शान्ति कर्म में इन्हीं से केतुका होम व जप करे। शा० क. १५ "यस्तेपृथुस्तलित्नु" (७।१२) देवो देवान् (१८।१-३०) इत्यादि केतुं कृण्वन्नकेतवे ऋ. १।६-३ उपाकर्म में भी इन्हीं से आज्य होम करे।

सू० ७।१३ "सभाचमा" इन पाँच ऋचाओं से सभाजयकर्म में दूध भात में रस मिला, अभिमन्त्रित कर, खाये। इसी कर्म में इन्हीं को जपते हुए सभास्तम्भ को पकड़े। इन्हीं के जप के साथ सभा में बैठे। (कौ० ५।२)

सू० १४ "यथासूर्यः" इस ऋचा के जप के साथ कृत्यापरिहरण कार्य में कृत्या निस्सारणान्त अपने घर आप परिक्रमा करे। कौ० ५।३ तथा अभिचार कर्म में शत्रु की ओर देखकर इनका जप करे। सू० १५ "यथा सूर्योनिक्षत्राणाम्" से। तथा सू० १६ "यावन्तोमातपत्नान" के जप के साथ शत्रुओं को देखे तथा निऋ्रीविऋीप्रतिमा का विसर्जन कर सू० १४ यथा सूर्य के जप के साथ स्वगृह में आये। न. क. १५

काण्ड ७ के द्वितीय अनुवाक में २ सूक्त हैं। सू० १५ "अभित्वम्" की आदि की ४ ऋचाओं से-महावकाश-आरण्य में जा उद पात्र को सोमर से युक्त करके समान रूप की बछड़े की गौ के दुग्ध से भात (चावल) को अभिमन्त्रित कर पुष्टि कामी खांये।

सू० १६-२-'तां सवित' इस ऋचा से एक बार की व्याई गौ की रस्सीवत्

अभिमन्त्रित कर पुष्टि कामी वृद्धि को बांधे। कौ० ३।७ सोमक्रयणानन्तर "अभित्वम्" ७।१५ से ब्रह्न स्वर्णहस्त सोम को चुने (वै० ३।३)

सू० १७ "वृहस्पतेसवः" से सूर्योदय काल तक सोने वाले ब्रह्मचारी को उठाये। तथा आधान में संभार स्पर्शन दिवस में सोये हुए यजमान आदि को इससे उठाये। वै० २।१

सू० १८ "धातादधातु" इन ४ ऋचाओं से सर्व फलार्थ धाता का होम या जप करे। यथा" अदितिर्द्यौः (७।६)"दितेः पुयाणाम्" (७।८) वृहस्पते सवितः (७।१७) धात्ता दधातु (७।१८)। कौ० ७।१०–तथा वीर पुत्र प्रजनार्थ इन ४ ऋचाओं से गर्भणी के उदर को अभिमन्त्रित करे। "याम् इच्छेत् वीर जनयेत्" इति (कौ० ४।११)

सू० १९ "प्रनभस्व" इन २ ऋचाओं से वृष्टि के लिये मरुद्गण-यागन्त्र वर्णित देवताओं को क्षीर, घी से होम करे, एक पात्र में काश कुशा बिधु-वक वेतस आदि की शाखायें शान्ति औषधियां एक पात्र में डालें इन्हीं से अभिमन्त्रित करें और जल के बीच में धार नीचे मुख होकर दें उन काशादि को भी जल में वहा दें अपने तथा कुशानि र्मितमेष शिर को अभिमन्त्रित करें और मेष शिर (कुशा) को जल में फेंक दें मनुष्य के वाल पुरानी जूती वांस पर ऊपर वांधे और घास आदि से युक्त कच्चे घड़े को अभिमन्त्रित जल के पात्र को तीन पाद के छींके पर रख जल में फेंक दें। ये सव वर्षा के लिये हैं। सूक्त—"समुत् पतन्तु" (४।१५) प्रनभस्व (७।१९) वृष्टि के लिये १२ रत्रियों का कर्म है। कौ ५।५ तथा इसी सूक्त से उपतार-काद्भुतशान्ति (उल्कापात, तारों के टूटने आदि) में घी से होम करे। कौ० (१३।११)

सू० १९।२ "नप्रस्तताप" से दर्शपूर्णमा में पत्नि सहित सौम्ययाग करे। यथा "नप्रस्तताप" ७।१९-२ "संघर्चसा" ६।५३-३ "देवानांपत्नीः" ७।५१ "सुगर्हिपत्य" २२।२-४५ इति पत्नि संयाजान-इति वै० १४

सू० १९।३ "प्रजापतिर्जनयतु" इस ऋचा से वन्ध्या के पुत्र लाभार्थ कर्म में उसकी गोद भरा-घी से होम करे। तथा इसी कर्म में इसी ऋचा से लाल वकरी के दूध में उड़द की खीर वना अभिमन्त्रित कर खिलाये। तथा इसी कर्म में इसी ऋचा से मिट्टी के पात्र में पवित्र शान्ति औषधियों के अभिमन्त्रित जल ले अग्नि की परिक्रमा कर पुत्रकामिनी (वन्ध्या) धार दे। तथा इसी से पुत्र कामिनी को

(भात, दूध, पेय अन्य पदार्थ) अभिमन्त्रित कर दे । ४ ११ तथा अभिलषित फलार्थी इसी से प्रजापति का होम व जप करे। कौ० ७।१० 'धाता दधातु" ७।१९ "प्रजा-पतिर्जनयतु "७।२०" अन्वद्य नोनुमतिः (७।२१) पूर्णमास याग में ७।२१ से होम करे (वै० १।१) ये ६ ऋचायें हैं ।

सू० ७।२२ "समेतविश्वे" से पितृ मेध की दाह क्रिया में ईंधन, चिता, श्मशान और समस्त बान्धवों को छींटे दें ।

सूक्त ७ सू० २३—"अयंसहस्त्र" इन २ से प्रश्नसवे-हविविमर्शना दान उदित सूर्य दर्शन उपस्थानादि करे । "आयं गी" (६।३१—७।२३) "अयंसस्त्रम्" कौ० ८।७ सप्तम काण्ड के तृतीय अनुवाक में ३ सूक्त हैं । "यन्नइन्द्रो" २५।१

सू० २५ इस ऋचा में वर्णित इन्द्रादि ९ देवताओं को सर्वफल का भी होम करें स्तुति करें । इसी कर्म में "ययोरोजसा" काण्ड (७।२५-२) इन २ ऋचाओं से विष्णु तथा वरुण देवता के निमित्त होम व स्तुति करें । कौ० ७।१० "यन्नइन्द्रः" (७।२५) "ययोरोजसा" (७।२६) विष्णोर्नु कम् (७।२७) तथा "वैष्णवीं अन्न का मस्यान्नक्षयेच" इति (न. क. १७) आतिथ्येष्टि में इसी से विष्णु को हवि अभिमन्त्रित करे (अ. वे. ७।५) "यज्ञेन यज्ञम्" वैष्णवं विष्णोर्नु कम्" (७।२७) इति वै० ३।३ तथा सोमयाग में औपवसथ्याहनि में उपस्तव्यमान उपस्तम्मन काष्ट को इसी से अनुमन्त्रित करे । वै० (३।५) सोमयाग में "यस्योरुषु" ७।२६ से सोमक्रयणार्थ सोम निकाले (वै० ३।३) पशुयाग से पूर्व की जाने वाली इष्टि नें "उरुविष्णो" ७।२७ से ब्रह्मा वैष्ण व पूर्ण होम करे । (वै० २।६) तथा अद्‌भुत शान्ति में "उरुविष्णो" इससे विष्णु याग करे । (न. क. १४) दर्श पूर्णमास याग में प्रणीता-प्रणयन प्रभृति, हविदनि "इदं विष्णु" (७।२७) से करे (वै० १।२) इसीं से सोमयाग में उत्तर वेदि प्रणयनान्त दक्षिण हविर्धान ब्रह्मा अनुमन्त्रित करे । इसी कर्म में उत्तर हविर्धान वर्त्म होम "त्रींणिपदा" (७।२८) से अनुमन्त्रित करे "इदं विष्णुः" (७।२७-४) इत्युत्तस्य त्रिणिपदा (७।२७-५) वै० ३।५ तृतीय सवन में सोमयागान्त "इदं विष्णु (७।२४-४) से चमस को जल में डाले वै० (३।१३) तथा "त्वाष्टीं-वस्त्रसये" इति न. क. १७ त्वाष्टाख्य नामक महा शान्ति में "इसी ७।२४ से—त्रिष्टन्मणिवन्धन" (सोना तांवा, चाँदी) युक्त मणिवन्धन करे "अग्नि सूर्यः (५।२८-२) इयं विष्णु, (७।२७-५) न. क. १९

सू० ७ २७-६ "विष्णोः कर्माणि" पशु तन्त्र में अवट पर स्थापित यूप को

इन २ ऋचाओं से ब्रह्मा अनुमन्त्रित करे "धर्ताध्रियस्व" (१२।३-३५) इति पादे-नावटे निधीयमान "विष्णोः कर्माणि" (७।२७-६) से अनुमन्त्रित करे (वैं० २ ६) तथा इसी (७।२७-६) से अग्निचयनान्त कूर्माभ्य ञ्जनानन्तर उलूखलमुसल को अनुमन्त्रित करे । इति ३ अ. प्र. वैं० ५।२

काण्ड ७ सू० २८ के द्वितीय अनुवाक का द्वितीय सूक्त की आदि २ ऋचाओं से सर्व-सम्पत्कर्म में "विष्णोर्नु कम" का विनियोग है । अर्थात् ७।२७-१ का ७।२९ "वेदस्वस्तः" दर्श पूर्णमास में कुशमुष्टि (वेद) स्वास्तंदाभवः इससे दर्भमुष्टि (वेद) को अनुमन्त्रित करे । वैं० १।४

सू ७/३० "अग्नाविष्णू" समस्त व्याधि समनार्थ मूंज की जाल समस्त ग्रन्थि व्याधित (रोगी) को बांधें और उपर्युक्त दोनों ऋचाओं से (मुट्ठा) दूब-दाभ, शरपता, अञ्जन, सहदेवी, अपामार्ग) आदि से युक्त जलपात्र को अभिमन्त्रित कर रोगी पर छिड़के, स्नान कराये, पान कराये । 'अग्नाविष्णू' (७।३०) "सोमारुद्रा" (७।४३) कौ. ४।८ तथा इन्हीं २ से सर्वसम्पतकानी अग्नि होम, जपादि करे । कौ. ७।१०

सू. ७.३१ "स्वाक्तम्" से गोदान संस्कार में अन्जन को अभिमन्त्रित कर ब्रह्मचारी के नेत्रों में लगाये । 'आयुर्दा' (२।१३) से गोदान करते हुए (कौ. ४) परि-क्रमा कर 'स्वाक्तम्' से अञ्जन लगाये । कौ. ७।५ इसीसे पशु (इन्द्रियों से युक्त पुरुष) (आत्मसमर्पणकर्त्ता) हवन में यूपं को अनुमन्त्रित करे । (वै २।६)

सू. ३२ "इन्द्रोतिभिः" से अभिचार कर्म में ओले से नष्ट वृक्ष की समिधाओं से होम करे । "उपप्रियम' आयतस्ते (५ ३०—१) 'अन्तकायमृत्यवे' (८।१) से यज्ञो-पवीत में बालक की दीर्घायु की कामना से सिर को अनुमन्त्रित करे । कौ. ७।६

सू. ३३ "संमासिञ्चन्तु" से पुष्टि कर्म में सप्रधान्य सर्वसाधारण तालाबादि के जल में मिला, अभिमन्त्रित कर खाये । कौ. ३।७

सू० ३४ "संमासिञ्चन्तु" ब्रह्मचारी (नित्यहोम में) अग्नि को छींटे दे, स्था-पित करे । कौ० ७।८। तथा अग्नि चयन में अभिषिच्यमानयजमान श्री ब्रह्मा इसी ऋचा को कहलवाये । वै० (५।२)

सू० ३५ "आने जातान्" पुत्रहीन विद्वेषिणी स्त्री को खच्चरी के मूत्र को

पत्थर पर घिस अभिमन्त्रित कर चावल के साथ विद्वेष रखने वाली को दे । इसी कार्य में इसी ऋचा से खच्चरी के मूत्र को पत्थर पर घिस अभिमन्त्रित कर उसके आभूषणों से चुपड़ दे । तथा इसी कर्म में इसीसे विद्वेषिणी की चोटी को देखे ।

सू० ३६ "पान्यान्" इन तीन ऋचाओं से विद्वेषिणी (पुत्रहीन) स्त्री को वन्ध्या बनाने हेतु पूर्वोक्त तीनों कर्म करे । कौ० ४।१२। तथा इसी ७।३५ "अग्ने-जातान" इन २ ऋचाओं से अभिचार कर्म में ओले से नष्ट वृक्ष की समिधाओं से होम करे। (वै० ५।२) "अग्नेजातान्" इति द्वाभ्यांपञ्चभ्यांचितावसपलेष्टका निधीय-मानाः इति ।

सू० ३८ 'अक्ष्यौ नौ" इससे विवाह से चौथे दिन वर-वधू दोनों के नेत्रों से अभिमन्त्रित कर काजल लगाये । (कौ० १०।५)

सू० ३९ "इदं खमामि" इन पाँच ऋचाओं से सौभाग्यकरणार्थ "सौवर्चल-हुलहुलमूल" (हुलहुल की जड़) अभिमन्त्रित कर बाँधे, पिलाये, सेवन कराये । इसी कर्म में इन्हीं पाँच से शंखपुष्पी के पुष्प अभिमन्त्रित कर स्त्री से सिर में बाँधे । वै० ४।१२ । इस सौवर्चल से वशीकरण होता है अर्थात् पति अन्य स्त्री में आसक्त हो तो उसे सभी प्रकार से, सभी क्रियाओं से यह सौवर्चल औषधि बश में करके उचित मार्ग पर लाती है

चौथे अनुवाक काण्ड ७ के तीन सूक्त हैं ।

सू० ४० "दिव्यंसुपर्णम्" से पुष्टि कर्म में इन्द्र का होम करे। इसमें ऋषिदण्ड मेखला साथ रक्खे । कौ० ३।७ इसीसे अन्वारम्भिणीय इष्टि में सरस्वती का १२ दिन होम करे। (वै. २।४ "सरस्वती व्रतेषु" (७।७०) 'यस्यव्रतम्' (७।४१) ।

सू० ४२ "अतिधन्वानि" इन दो ऋचाओं से नूतन घर घर बनाने से पूर्व, 'भूमि जहाँ घर बने' की शुद्धि के लिए 'श्वेन देवता' का होम करे । कौ. ५।७

सू० ४३ "सोमारुद्रा" इन २ से समस्त व्याधि निराकरणार्थ रोगी के शरीर को मूज की रस्सी के जाल में ग्रन्थि बाँधे, सरपिञ्जूलि के साथ जल के नवीन घट को अभिमन्त्रित करे, रोगी को छींटे दे, स्नान, पानादि करादे । "अग्नाविष्णु" (७।३०) "सामारुद्रा" (७।४३) कौ. ४।८ तथा इन्हीं से दोनों से सर्वसम्पत्कर्मों में सोम तथा रुद्र देवता का होम, जप, उपस्थान करे ।

सू० ७।४४ "शिवास्ते" इसमें परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी इन चार अवस्थाओं में प्रथम तीन देहान्तर में रहने से दूसरों के लिए कहने में असमर्थ हैं पर चौथी वैखरी–तालु ओष्ठादि स्थानों में वर्ण पद वाक्य रूप कही जाने वाली दूसरों से सुनी जा सकती है। वह वाकस्तुति-निन्दा दो प्रकार की है इस दूसरी निन्दा को सुनने या निन्दा करने रूपवाणी के पाद समनार्थ, भात या मन्थ अभिमन्त्रित कर दे। तथा इसीसे ढाक की मणि को लोहा, स्वर्ण, के तार से अभिमन्त्रित कर बाँधे। 'उतामृतासु' (५।१–७) शिवास्ते (७.४४) कौ. ५।१०

कां. ७ सू० ४८ ईर्या के विनाशार्थ गर्म धारदार हथियार से क्वथित जल को 'अग्नेरिवास्य दहन" ऋचा से अभिमन्त्रित कर ईर्ष्या करने वाले को पिलाये। कौ ४।१२

सूक्त ४५ "उमाजिग्यथुर्नपरा" ऋचा से हाथी आदि वाहन (वायुयानादि) को अभिमन्त्रित कर, मैत्री (सामनस्य) कर्तागण को बिठाकर, पैर धुलाकर अपने निवास पर या घर लाये। चावलों का भात या सत्तू अभिमन्त्रित कर साथ में भोजन करे। कौ. सू. ५ ६ 'उभाजिग्यथुरित्यार्द्रपादाभ्यां सांमनस्यम् । यानेनप्रत्यञ्चोगामान् प्र' तिपाद्यप्रयच्छति।

सू० ४५ "तथा उक्थ्ये अच्छावाकयाज्याहोमानुमन्त्रणम् अनया ब्रह्मा कुर्यात्।" एतेषांयाज्या होमान इन्द्रा, वरुणा सुतपौ (७।६०) बृहस्पतिर्नः (७।३) उभाजिग्यथुः (७।४५) इतिहि वैतानंसूत्रम् (४।१) वै. एतरेय ब्राह्मण ६।१५ "इन्द्रश्च हवै विष्णुश्चासुरैर्युयुधति। तान्हस्म जित्वोचतुः कल्पामहाइति। ते ह तथेत्युसुतअचुः। सोऽब्रवीद् इन्द्रो यवद् एवायं विष्णुस्त्रिविक्रमते तावद् अस्माकम् अथयुष्माकम् इतरद्" इति। स इमाल्लोकान् विचक्रमेथो वेदान्अथोवाचम्। तदाहुः किं "तत् सहस्रम् इतीमे लोका इमें वेदा अथोवाग् इति ब्रूयात्। इत्यन्तम् अनुसंधेयम् (ऐ. ब्रा. ६।१५)।

पूर्व पृष्ठ लिखित सू० ४७ के सन्दर्भ में --

सू० ४६ इर्ष्या विनाशार्थ "जनाद्विश्वजनीनाद्" इस ऋचा का ईर्ष्यालु की ओर दृष्टि कर जप करे। सत्तू या चावल का भात अभिमन्त्रित कर ईर्ष्यालु को खिलाये। ईर्ष्यावान् को छूकर जप करे कौ. सू. ४।१२ 'ईर्ष्यायाध्राजिम्' (६।१८) 'जनाद्विश्वजनीनाद्' (७.४६) "त्वास्ट्रेणाहम्" (७।७८–३) इति।

सू० ४८ समस्त व्याधियों की चिकित्सार्थ रोगी के शरीर को मुञ्ज के जाल

की गाँठों से बांधे, लपेटले, कुशा, श्वेत दूब, सैमर, अपामार्ग, अन्जन, सहदेवी, शान्ति औषधियों की पोटली से घड़े में जल को अभिमन्त्रित कर, रोगी को छींटे दे, स्नान कराये। कौ. सू० ४।८ सूक्त –'सोमारुद्रा' (७।४३) सिनीवालि (७।४८) 'विते-मुञ्चामि (७।८३) 'शुम्भनी' (७।११७) ये नव ऋचायें हैं। तथा सर्व सम्पत्कामी इन्हीं ६ ऋचाओं से—राका, सिनीवाली, कुहू, देवपत्न्यः इन ४ देवताओं के निमित्त होम करे, जप करे। 'अग्नाविष्णु' (७।३०) सोमारुद्रा (७।४३) 'सिनीवालि पृथुष्टुके' (७।४८) वृहस्पतिर्नः (७।५३) । कौ. ७.१० तथा दर्शयाग में 'सिनीवालि ये ३ ऋचाओं से सिनीवालि देवता का याग करे वै० १।१ देवताः परिगृहणाति सिनीवालि पृथुष्टुक इति मत्रोक्तान् अमावास्यायाम्। दर्शयाग में ही "कुहूँ देवीम्' इन २ ऋचाओं से कुहू देवी का याग करे। पूर्णमास याग में 'राकामहम्' इन दो ऋचाओं से राकादेवी का याग करे। 'कुहूँ देवीम्' (७।४६) यत् ते देवा अकृण्वन् भागधेयम् (७।८४) 'इत्यमावास्यायाम्'। 'राकामहम्' (७।५) 'पूर्णापश्चात्' ७।८५ इति पौर्णमास्याम्' वै. १।१।

दर्शपूर्णमास में पत्नी के हेतु याग में 'देवानांपत्नि' इन दो ऋचाओं से देवपत्नी याग करे 'संवर्चसा' (६।५३–३) देवानां पत्नीः' (७।५१) सुगार्हपत्यः (१२।२ ४५) इतिपत्निसंयाजायेत्। वै० (१।४) "राका हवा एताँपुरुषस्यसेवनीं सीव्यतियैषा" 'शिश्नेधि' पुंमासोस्यपुत्रा जायन्ते" इति एतरेयश्रुते. (ऐ ब्रा. ३.३७) तथा च कृत्वा वीरम् विक्रान्तं पुत्र शतदायम् स बहुधनं, बहुपुत्रं व उक्थ्यम् कर्मभिः स्तोत्राई ददातु प्रयच्छतु।

सू० ५२—द्यूत में विजय प्राप्ति हेतु—पूर्वा अषाढा में गड्ढा खोदे उत्तराषाढा में चबूतरा की भीत बनाये उसी पर पाशों को यह द्यूत की सामिग्री बिछावे फैलाये, पाशों को "यथा" वृक्ष अशनिः" से नव ऋचाओं से अभिमन्त्रित करे। "उद्भिन्दन्तीं संजयन्तीम् (४।३८) "यथा वृक्षं अशनिः" (७।५२) इदमुग्राय (७।११४) इतिवासितान् अक्षान् निवपति" इति कौ० ५।५

सू० ५३—सर्वफलकामः "वृहस्पतिर्नः" इस ऋचा से वृहस्पति का होम करे या जप करे। (७।५२) यत्ते देवाः (७।८४) कौ० ७.१० तथा उक्थ्य क्रतौ ब्राह्मणाच्छं सिनो याज्या होमम् अनया ब्रह्मा अनुमन्त्रयेते। उक्तं वैताने। "एतेषां याज्याहोमान्" इन्द्रावरुणासुतपौ। (७।५८) वृहस्पतिर्नः (७।५३) उभाजिग्यथुः। (७।४५) इति (वै ४।१) तथा ग्रह यज्ञ में इससे, हवि, आज्य होम, उपस्थान, वृहस्पति को निमित्त करे। (शान्ति कल्पे १५) भद्रादधिश्रेयः प्रेहि (७।६)

वृहस्पतिर्नः (७।५३) इति वृहस्पतये इति शा० १५ तथा बार्हस्पत्याख्य महाशान्ति में राज्य श्री ब्रह्मवर्चसकामी "वृहस्पतिर्नः" से होम, जप, उपस्थानादि करे। (न. क. १७) "वृहस्पतिर्नः परिपातु पश्चात् (७·५३) अमुत्रभूयात् (७।५५) इति बार्हस्पत्याम्" इति (न० क० १८)

सू॰ ५५ "संज्ञानं नः" यह सूक्त वृहद्गण में है इससे शान्ति जल अभिमन्त्रण कर छीटे स्नान पान आदि कराये। तथा ग्रामादि में प्रीति, शान्ति आदि के हेतु इसी की २ ऋचाओं से जल का घड़ा या सुरा अभिमन्त्रित कर ग्राम के चारों ओर धार दे, शेष को ग्राम में उलट दे तथा इसी कार्य में इन्हीं २ ऋचाओं से ३ मास की वछडी का मूत्र अभिमन्त्रित कर, उर्दों में मिला खाये। इसी कर्म में इन्हीं दोनों से अन्नं, दूध सुरा आदि पेय को अभिमन्त्रित कर खाये पिये। कौ० २।३ "संवो-मनासि" (६।६४) संज्ञानं नः (७।५४)

उपनयन संस्कार में आचार्य ब्रह्मचारी की नाभि को स्पर्श करे ये ६ ऋचायें जपे "आयातुमित्रः (३।८) अमुत्र भूयात् (७।५५) कौ० ७।६ तथा "बार्हस्पत्यां राज्य श्री ब्रह्मवर्चस कामस्य" इति न० क० १७।

वृहस्पतिर्नः परिपातु पश्चात् (७।५३) अमुत्रभूयात् (७।५५) से बार्हस्पत्य महाशानी करे (न० क० १८)

सू० ७।५५—७ से आग्रहायणी कर्म विधि में पुष्टयर्थ अग्नि के पास से प्रातः उठते ही परिक्रमा करे "उदायुषा" (३।३१—१०) इत्युपोतिष्ठति उद्वयम्। (७।५५—७) इत्युत्क्रामति स्नान करे " इतिहि (कौ० ३।७) सूत्रम् इसी "उद्वयम्" ऋचा से अन्नप्राशन संस्कार में भूमि पर बैठे बालक को सूर्य के दर्शन कराये, इसे जपे। तथा सोमयाग में अवभृथस्नानान्त "उद्वयम्" से जल से स्नान कराये छीटे दे। वै (३।१४)

सू० ५६ "ऋच सामयजामहे" ऋचा से अध्यापकों के द्रव्योपार्जन विघ्न शमनार्थ घृत होम करे (कौ० ५·६)।

सू० ५७—इसी कार्य में "ऋचं सामयदप्राक्ष" इसी ऋचा से उपर्युक्त सू० ५६ का कर्म करे। कौ० ५ ६।

सू० ५८—'येते पन्थान" इस ऋचा का यात्रा दोष निवारणार्थ जप करे और दांया पैर प्रथम आगे रखकर चले।

सू० ५७–२ 'येते पन्थान: (१। २१) स्वस्तिदा: से मार्ग स्वास्त्ययन सर्वस्वस्त्ययन कर्म में विना गिनी शर्करा व तिनके (घास) अभिमन्त्रित कर घर क्षेत्र, ग्राम गोष्ठादि में छिड़क दे। इन्द्र का जप परिक्रमा यज्ञ उपस्थान करे।

सू० ५८—१—इस ऋचा से मन्त्रोक्त कर्म विच्छू, डांस मच्छर दुःखचींटीं वर्र ततय्या गोहरा, नेवला, विषकपरिया आदि सभी के विष शमनार्थ "तिराश्चि राजेः" इन ऋचाओं से वैं० मधुक (महुआ-मुलैठी) कों अभिमन्त्रित कर काटे हुए रोगी को पिलाये। इसी रोग में इन्हीं ८ ऋचाओं से मार्ग क्षेत्र वामी की मिट्टी अभिमन्त्रित कर चर्म से—वाल में लपेट कर वाँधे या केवल मिट्टी को अभिमन्त्रित कर पिला दे। अथवा घी में हल्दी डालकर अभिमन्त्रित कर पिलाये। कौ० ४।८ तथा उपाकर्म में "अरसस्य शर्कोटस्य" (७।५८—४) इन्द्रस्य प्रथमो रथः" (१०.४) कौ० १४।३ से घृत होम करे।

सू० ५९—"यद आशसा" यं याचाभि (५।७—४) इन २ ऋचाओं से भिक्षा या चन्दा करने वाला समान रूप की बछड़े की गौ के दूध में बनी खीर (पायस) अभिमन्त्रित कर खाकर जाये। कौ० ५।१०

उक्थ्यक्रतौ मैत्रा वरुण याज्या होमानुमन्त्रणम् "इन्द्रावरुणासु तर्पों" इति अनया कुर्तात्। वै४।१ " एतेषां याज्या होमान्

"इन्द्रावरुणा सुतवी (७.६०) वृहस्पतिर्नः (७।५३) उभाजिग्यथुः (७.४५)। ऋ सं ३।३३–६) यथा

इन्द्रो अस्मां अरदद् वज्रवाहुरपाहन् वृत्रं परिधिं नदीनाम्।

देवोमयत् सविता सुपर्णि स्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वी। तथा

"भूमिं पर्जन्या जिन्वान्ति दिवं जिन्वन्त्यग्नयः ऋ. १६४।५१

श्रुत्यन्तरात्। द्यावा पृथिवी कर्तृक पोषण लिङ्गाद्याचका

सिल पित प्राप्ती अस्य मन्त्रस्य विनियोगऽभिहितः । त्रिजली

सू. ६१—"यो नः शपात्" इस ऋचा से अभिचार कर्म में ओले आदि से गिरे वृक्ष की समिधा से होम जपापि करे।

सू.—६२ ऊर्जं बिभ्रत्" सूक्त की आदि को ६ ऋचाओं से अन्यस्थान से आकर अपने घर को देख समिधा ले जप करता घर आ-हाथ की समिधाओं को वाम हाथ में लेछान के तृण दायें हाथ में लेकर छैं ऋचाओं को जपता गृह में प्रवेश करे और लौकिक (आहित्यग्निः) में पुष्टयर्थं होम करे। की ३।७

इन्हीं ६ से अपने परिवारी या परिकर के लोगो के सभी के कल्याण व प्रेमार्थ होम करे (की. ५।६। इसी ऋचा से तथा "निः सालाम्" (२।१४) से क्रव्या द्विसर्जनान्त सभी इसको जपते हुए घर में प्रवेश करें। (की. ६।४) तथा अन्त्येष्टि में शव दहनान्त दाहकर्त्ता प्रिय परिजनों सहित जपता हुआ घर में प्रवेश करे।

सू. ६२—"इहैवस्त" इस ऋचा को जपे प्रवास जाते समय अपने घर, पशु, प्रियजनों को देखे (की. ३।७।

सू. ६३—"यदग्ने तपसा" इन २ से आग्रहायणी में दूध, भात, घी आदि को अभिमन्त्रित कर मेधाकामी खाय अग्नि का उपस्थान करे (को. २।?) तथा उपनयन में दोनों से होम करे,

सू. ६३—"यद अग्ने तपसा तपः" इन २ से वेदी वुहारे "संमा सिञ्चन्तु" ७।३४ से ३ वार जल छिड़के (की. ७।८) उपनयन संस्कार में प्रयोग करे

सू० ६४ "अयमग्नि सत्पतिः" नलम् आरोह (१२।२) इस अनुवाक मे महाशान्ति गण कार्योक्त कर्म आवसथ्याधान में शान्ति जल से छींटे, स्नानः आदि करे। की. ६।१ तथा अग्नि चयन कर्म में आतिच्छन्द सीष्ट का नुमन्त्रणानन्तर मनया गार्हपत्ये "चीयमानाम् इष्टकां ब्रह्मा अनुमन्त्रयेते। तदुक्त वैतामे "अग्नि होतारं मन्ये। २०।६७-३

इत्यातिच्छन्दसीः। गार्हपत्य उक्तम्। "अयम् अग्नि सत्पतिः (७।६४) "येना सहस्रम्" (६।५-१७) इति (वै० ५।२)

सू० ६५—"पृतनाजितम्" से अरणि से अग्नि मंथन करे। (कौ० ६।१)

सू० ६६-६७ —"इर्दयत् कृष्ण: " इन दोनों ऋचाओं से शरीर पर कौआ बैठे या स्पर्श करने के अनिष्ट निवारणार्थ जल अभिमन्त्रित कर स्नान कराये छींटे दे। तथा कौआ की चोंच लगने से उत्पन्न घाव, के ऊपर उल्मुक जला अभिमन्त्रित कर घुमाये।

सू० ६८—"श्यावदता" कौआ के छूने से उत्पन्न दोष निवारणार्थ, तथा मन्त्र में वर्णित रोग निवारणार्थ " प्रतीचीन फल:" इन ३ ऋचाओं से अपामार्ग की समिधाओं से होम करे। (कौ० ५।१०)

सू० ६९—"यद् दुष्कृतम्" इन दोनों ऋचाओं विवाह काल में स्नानानन्तर कन्या के अङ्ग तथा वस्त्रों को धोये। (कौ० १०।२)

सू० ६९—"यदन्तरिक्षे" (७।६८) "पुनर्मैत्विन्द्रियम्" (७।६९) शिवान: (७ ७१) ये वृहद्गण में हैं शान्त्युदकादि कर्म करे। कौ० ११९ तथा प्रतिग्रहदान दोष निवारणार्थ दानादि की वस्तु अभिमन्त्रित कर ले। तथा नित्य, नैमित्तिक तथा काम्य कर्म पाक यज्ञ के अन्त में कर्म समाप्ति काल में न्यूनातिरिक्त दोष निवारणार्थ अपने को भी अभिमन्त्रित करे। "यदन्नम्" (६।७१) पुनर्मैत्विन्द्रियम् (७।६९) से गृहण करे। (कौ० ५।१९)। तथा गोदान कर्म में (मुण्डन में) इससे छुरा अभिमन्त्रित कर नाई को दे। "पुन: प्राण:" (६।५३–२) पुनर्मैत्विन्द्रियम् " (७।६९) इन तीन से धोकर अभिमन्त्रित कर दे (कौ० ७।५) तथा सब यज्ञ में (७।६९) से इन्द्रियों का अभिमन्त्रण करे और अभिमर्शन भी करे। " वाङ्म् आसन" (१९ ६०) इस मन्त्र में वर्णितों को "वृहता" (५।१०–८) द्यौश्च (६।५३) "पुनर्मैत्विन्द्रियम्" (७।६९) से अभिमन्त्रित करे। (कौ० ८।७)। तथा ब्रह्मचारी का दण्ड टूटने पर दूसरे दण्ड को अभिमन्त्रित कर ब्रह्मचारी धारण करे। कौ० ७।८।

अग्निष्टोमे तृतीये स वने में होत्रादिधिष्ण्येषु विहृतान अग्नीन्

"पुनर्मैत्विन्द्रियम्" इससे ब्रह्मा अनुमन्त्रयते। " पुन: प्राण:" (६।५३—२) 'पुनर्मैत्वि" (७ ६९) वै० ३।८।

सू०—७२—"आहिताग्नि के प्रेत संस्कार में " औचित् सखायम्" इस काण्ड के जपानन्तर—सारस्वत होम में " सरस्वति व्रतेषु" इन दोनों से घृत होम करे।

तथा चातुर्मास के वैश्व देव पर्व में सारस्वयाग इन्हीं से करे। "सविता प्रसवानाम्" (५।२४) सरस्वती व्रतेपु (७।७०) "प्रपथेयथाम" (७।१०)। वै० (२।४ तथा अन्वारम्भणी इष्टि में सारस्वत: चरुयाग "सरस्वती व्रतेपु" (७।७०) यस्यव्रतम् (७।१४) वै० (२.४)

सू० ७६—"आतमन्ये" इस सूक्त से तथा "उपह्वये" ७७ सूक्त से ब्रह्मा अग्निष्येम में आज्य होम करायें। (वै० ३।४) इसी से अग्निष्टोम के माध्मन्दिन सवन में दधि धर्म करे भक्षण कराये (मधुपर्क वै० ३।११)

सू० ७८—"अपचितां" ':आसुस्रस:" (७।६०) सूक्तों से गण्डमाला की चिकित्सा में अपचित "प्रपतत" (६।८३) में वर्णितविधि से रुद्रतेज से युक्त धनुष के बाण से या बाणापर्णी औषधि से, या दर्भ से गण्डमाला का वेध करे। और कालीऊन डाल कर उसी का गर्म जल लेकर इन्हीं सूक्तों से अभिमन्त्रित कर उषा—काल में रोगी को छींटे दे। कौ० ४।८

सू० ८०—आसुस्रस:" इन दो ऋचाओं से भी गण्डमाला की चिकित्सा में शंख घिस कर अभिमन्त्रित कर या श्वान की लार, गण्डमाला पर लेप करे तथा इसी चिकित्सा में सैंधा नमक पीसे अभिमन्त्रित करे घाव पर छिड़के चुपके से उस पर थूक थे। कौ० ४.७।

सू० ८०—"य: कीकसा:" इन ३ ऋचाओं से वीणातन्त्री वाद्यखण्ड खण्ड, या या शङ्ख खण्ड अभिमन्त्रित कर बांध दे। यह राजयक्ष्मा की चिकित्सा में बांधे। (कौ० ४।८)

सू० ७६/३—"त्वाष्ट्रेणाहम्" इस ऋचा को ईर्ष्यालु को देखकर जपे और इसी से शुष्क सक्तुमन्थ अभिमन्त्रित कर दे। इसी को ईर्ष्यालु का स्पर्श कर जपता रहे। कौ० ४।१२। यह स्त्री के प्रति ईर्ष्यालु के साथ करे। "व्रतेन त्वं व्रतपते" से दर्शपौर्णमास व्रत सम्पन्न करे। कौ० १।१

सू० ८१—"विद्मवैते" इस ऋचा का राजयक्ष्मा की चिकित्सार्थ २ ऋचा ७।८० की भांति प्रयोग करे।

"धृपत्पिब:" इस ऋचा से सोमयाग में माध्यन्दिन सवन में, द्रोण कलशस्थ सोमरस को ब्रह्मा अनुमन्त्रित करे, (वै० ३।६)

सू० ८२—"सांतपनाः इन २ ऋचाओं से अभिचार कर्म निवारणार्थ ओले बिजली से नष्टवृक्ष की समिधाओं से होम करे। इसी से चतुर्मास व्रत में साक मेध पर्व के माध्यान्दिन काल में मरुद्गण का यजन ब्रह्मा करें। (वै० २।५)

सू० ८३—"विते मुञ्चामि" इस ऋचा से घट के जल को अभिमन्त्रित करे सेणी को रस्सी (दाभ) से बाँधे और छींटे दे, स्नान कराये। "सिनीवालि (७।४८) (८३) (११७) "शुम्भनी" इन ३ ऋचाओं से (कौ० ४।८) के अनुसार समस्त व्याधियों की चिकित्सा करे। तथा दर्शपौर्णमास यागों में ब्रह्मा पत्नी को इन इन से अनुमन्त्रित करें। वै० १।४—"विते मुञ्चामि" (७।८३ "अहं विष्यामि" (१४।१–५७) "प्रत्वामुञ्चामि" (१४।१–१६) तथा दर्श प्रौर्णमास याग में समिधायें अभिमन्त्रित करे "अग्निर्भूम्याम्" (१२।१–१६) ये ३, "अस्मैक्षत्राणि" (७ ८३) "एतम् इध्मम्" (१०।६–३५) कौ० कौ० १।२।

सू० ८४ - "यत् ते देवा अकृण्वन्" इन ४ से अभीष्ट फल कामी अमावस्या में होम या जप उपस्थान करे। "बृहस्पतिर्नः" (७।५३) तथा ७।८४ तथा "पूर्णा पश्चात्" (७।८५) कौ० ७ १० के के मतानुसार विनियोग करे।

तथा दर्शयाग में पार्वणहोम अमावस्या में (७।८४) से करे। तथा श्रौत-दर्शयाग (७।८४) कुहूदेवता का यजन करे। (वै० १।१)

सू. ८५ "अमावास्ये न" इसका ७।८४ के साथ सर्वाभीष्ट फलार्थ विनियोग है। ८५–२ "पूर्णापश्चात्" इन दो तथा पौर्णमासी प्रथमा यज्ञियासीत् इससे

समस्त कामनाओं की सिद्धि के हेतु यज्ञ, जप, अनुष्ठान करे। इसी कर्म में "प्रजापते नत्वत" इस ऋचा से प्रजापति देव का होम, जप करे तथा समस्त श्रौतकर्मों में प्रजापते नत्वत' से अनुमन्त्रण करे। वैतान 'मन्त्रानादेशेलिङ्ग' वतेति भागलिः। 'प्रजा पते नत्वद् एतान्यस्य इति युवा कौशिकः। 'यथा देवतम् इति माटरः' इति (वै १।१) इसी "प्रजापते नत्वत्' से ब्रह्मा दर्शपौर्णमास याग करे। नक्षत्र कल्पोक्त महाशान्ति में बलकामी मारुद्गणी इष्टि में इस ऋचा का जप, होम करे। 'मरुतांमन्वे' (४।२७) 'प्रजापते नत्वत्' एतान्यन्य (७।८५—३) मरुद्गणी महाशान्ति करे दक्षत्रवल्प १८।

सू०८६ "पूर्वापरम्" तथा "सत्येनोत्तभिता" (१४।१) से विवाह में आज्य समिधा, चरु आदि होम करे कौ. (१०।१) "सोमस्यांशोयुधांपते" (७।८६, ३–६)

"यद्राजान:" (३।२६) से ग्रहयाग में महाशान्ति हेतु बुध को ४ ऋचाओं से होम, जप, उपस्थान आदि करे (न. क. १५)।

सू० ८७ "अभ्यर्चत" "समास्त्वाग्ने" (२।६) "को अद्यान:" (७।१०८) इन ६ ऋचाओं से सम्पत्कामी या सर्व फलार्थी अग्नि की पूजा, उपस्थान, याग करे। (कौ ७।१०) अग्निचयन में समिधानान्तर "अभ्यर्चत" ७।८७ का ब्रह्मा जप करे। वैतानोक्ति "उदेनं उत्तरंनम:" (६।५) से समिधा दान कर "चत्वाश्रृङ्गा" (४।५८—३ ऋ वे) अभ्यर्चत (७।८७) का जप करे (वै. ५।२) तथा अग्निमय और सभी कामनाओं में (आग्नेयी) इष्टि, महाशान्ति में 'अभ्यर्चत' का जप, उपस्थान करे। (न. क. १७) तथा बार्हस्पत्य नाम्नी महाशान्ति में 'अभ्यर्चत' से गूलर का समिधा दान करे। (न. क. १८, १६)।

"मय्यग्रे" इन पाँच ऋचाओं से ब्रह्मचारी अपनी अग्नि नष्ट होने पर अग्नि को पाँच समिधायें अर्पित करे। (कौ ७।८) तथा गर्भाधान में इसी 'मय्यग्रे' से अग्नि में आज्याहुति दे (वै. २।१)। "घृतं ते अग्ने" से दर्शपौर्णमास में ब्रह्म आज्यहुति दे। (वै. १।२) "अप्सु ते राजन" (७।८३।८८) की ४ ऋचाओं से नदी तीर पर मण्डप बना जलोदर रोगी की चिकित्सा हेतु गर्म जल अभिमन्त्रित कर स्नान कराये। तथा इन्हीं ४ ऋचाओं से अभिमन्त्रित शीत जल से रोगी को छींटे दे। तथा धूम्रकेतु के उदय या दर्शन दोषार्थ अद्भुतप्रायश्चितार्थ वारुण होम

सू० ८८—'अप्सु ते राजन' इन्हीं चार ऋचाओं से करे (कौ० १३।३५) न. क १४।

यथा "इन्द्रेमंप्रतरंकृधि" (६।५—२) इसमें इन्द्र की 'अप्सुते राजन्' (७।८८) से वरुण का अद्भुत महाशान्ति होम करे। तथा मृतक के दाह संस्कारान्त जल के पास ब्रह्मा 'उदुत्तमम्' ७।८८—३ का जप करे और अन्त्येष्टि आदि में स्वस्त्ययनार्थ 'प्रास्मत्पाशान्' (७ ८६) का जप करे।

सू० ८६ "अनाधृष्योजातवेदा: "इस प्रथम ऋचा से अग्नि स्थापन करे।

सू० ८६—२"इन्द्रक्षत्रम्" से इन्द्रयाग में आज्य होम करे। (कौ० १४।८)

सू० ८६—३"मृगो न भीम:" "वैश्वानरो न ऊतये" (६।३५) से अग्निचयन में ब्रह्मयाग करें (वै. ५—२)

सू० ६० "त्यमूपु" "त्रातारम्' (६१) "आमन्द्रैः" (१२२) से स्वस्त्ययनार्थ होम करे। (की. ७।१०) तथा इन्हीं से उपाकर्म में होम करे। ये स्वस्त्ययनगण में हैं। (की. १४।३) तथा अन्त्येष्टि आदि में स्वस्त्ययनार्थ जप करे। तथा इन्द्रमहोत्सवपर्व (उत्सव में) "त्यमूपु" 'त्रातारम् इन्द्रम् (६१) 'इन्द्रःसुत्रामा (७।६६) से होम करे (की. १४।४)।

सू० ६३ "योअग्नी" से स्वस्त्ययनार्थ रुद्रदेव का जप, होम आदि करे। (की' ७।१०) इसीको अन्त्येष्टि आदि में स्वस्त्ययनार्थ जपे। तथा दर्श पौर्णमासयाग में इससे आग्नीध्रः संमार्ग को संमार्जन कुशाओं को अग्नि में डाल दे। (वै. १।४) तथा चातुर्मास में साकमेध पर्व पर त्रैयम्बककर्म में इसका विनियोग करे (वै. २।५) तथा अग्निष्टोम याग में शालादहनान्तर 'योऽग्नौ" से अग्नि को नमस्कार करे और उसीके जप के साथ निकले। (वै. ३।१४)

सू० ६४ "अपेहि" इस ऋचा से सर्प विषचिकित्सार्थ तिनके जलाकर सर्प की ओर या जिस ओर सर्प था उसी ओर लक्ष्य कर फैंक दे। काटने के स्थान में डाले (की ४।५)।

"अपोदिव्या." इन दो तथा "एधोसि" इस एक से इसमिधा वेद व्रत में समर्पण करे। इसीसे 'परिमोक्ष विधि' में 'अपोदिव्याः' इन ४ ऋचाओं से शान्ति जल अभिमन्त्रित करे। तथा आचार्य के मृतक संस्कारान्त ब्रह्मचारी इन चारों के जप के साथ स्नान करे। की० ५।१० तथा दर्शपौर्णमासयाग मेंइडाभाग भक्षणांत 'अपोदिव्या:" इन ३ से पत्थर परमार्जन करे। वै. १।३ तथा अग्निष्टोम में अवभृथस्नानान्त इन्हीं से होम करे। वै ३।१४ 'इदम् आपः" से अग्नि कार्य में ब्रह्मचारी हस्त प्रक्षालन करे। की. ७।८ तथा चातुर्मास में वरुणप्रघास पर्व पर 'इदम् आपः' से मार्जन करे। 'अपाढ्यां-वरुणप्रघासः" इति प्रक्रम्य 'इदम् आपः प्रवहतेति से मार्जन करे। वै, २।४

"एधोसि" इस मन्त्र से दर्शपौर्णमास में दक्षिणा प्रतिग्रहान्त समिधा दान करें वै. १।४। तथा स्मार्त दर्शपौर्णमास में संस्था व होम के उपरान्त 'एधोसि' इस मन्त्र से द्वितीय "समिदसि" से तृतीय समिधाधान कर "तेजोसितेजोमेधेहि" से मुखमार्जन करे। की. १।६ अग्निहोत्र में ब्रह्मचारी 'एधोसि' इससे अग्नि पर हाथों को तपाकर ऊष्मपान करे। की ७।८

सू० ६५ "अधिवृश्च" इन तीन ऋचाओं से जार पुरुष के उच्चाटनार्थ जार को देखकर जपे। इसीसे जार के संगम स्थान में पत्थर अभिमन्त्रित कर फेंक दे। की. ४।१२

सू० ९६ "इन्द्रःसुत्रामा" इन तीन ऋचाओं से ग्रामादि प्राप्ति हेतु इन्द्र देवता का जप, होम, उपस्थान करें। उसी कर्म में इन्हीं तीन ऋचाओं से गूलर, ढाक, कर्कन्धु की समिधा आदि इसीसे दे। कौ. ७।१० तथा इन्द्रमहाख्य उत्सव में 'इन्द्रःसुत्रामा" 'अर्वाञ्चन् इन्द्रम्' "त्रातारम् इन्द्रम्" (७।९१), इन्द्र सुत्रामा (९६) से ५।३।११ आज्य होम करे। (कौ. १४।४)

सू. ९९ "ध्रुवं ध्रुवेग" इस ऋचा से अग्निष्टोम में राजा को राजवहनार्थ सोम अभिमन्त्रित कर दे। तथा आग्नेयास्त्र, वारुणास्त्रों को अवसानकाल में अभिमन्त्रित करे। वै. ३।३ व ३।१३

सू० १०० "उदस्यश्यावो" इन तीन ऋचाओं से अभिचार कर्म में आज्य होम करे। इन्हीं तीन से इसी कर्म में मेढक के मुख को धोये।

सू० १०१ "असदन्गावः" इस ऋचा से लाल साठी चावल के दूध भात को अभिमन्त्रित कर अभिचार कर्म में इष्यालु को दे।

सू० १०२ "यद्अद्यत्वाप्रयति" इन ८ ऋचाओं से दर्शपौर्णमास में संस्थित मनसस्पते (७।१०२—८)। कौ. १।६।

सू० १०३ "समिद्रमौः" इन ८ ऋचाओं से अभिमन्त्रित जलपात्र ब्रह्मचारी के अवलोकनार्थ उपानयन में दे। कौ. ७।६

सू० १०५ "पर्यावर्ते" इस ऋचा को दुःस्वप्न दर्शन निमित्त दोष निवारणार्थ जपे। कौ० ५।१०

सू० १०६ ऋचा "यतस्वप्ने' को स्वप्न में अन्न भक्षणनिमित्त दोषनिवारणार्थ

सू० १०७ "नमस्कृत्य" इस ऋचा से मन्त्रवर्ण की देवता को स्वस्त्ययनार्थ नमस्कार करे। कौ० ७।३

सू० १०८ "को अस्या नः" इन दो ऋचाओं से सर्व फलकामनार्थ प्रजापति का जप, होम, उपस्थान करे। कौ० ७ १०

सू० १०९ "कः पृश्निम्" यह ऋचा उर्वरा नाम का याग में विनियोग करे। की. ८।७

सू० ११० "अपक्रामन्' से ब्रह्मचारी को उपनयन में पूर्वाभिमुख बिठाये। को. ७।६

सू० १११ "यदअस्मृति" इससे ग्राम, घर आदि को भेजे हुए सन्देश को न देने के प्रायश्चित्तार्थ अग्नि का उपस्थान करे। को. ५·१० दर्शपौर्णमास तथा अग्निष्टोम में भी नियम, व्रत, दीक्षा भङ्ग में जपे। वै. ३.२

सू० ११२ "अवदिवः" "यथामनः" (६।१०५) खासी, श्लेमा की चिकित्सा में अन्न, सत्तू, औपधि, जल को अभिमंत्रित कर रोगी को दे, उपस्थान करे। (की ४।७)

सू० ११३ "यो न स्तायत" इन दो ऋचाओं से अभिचार कर्म में ओले से नष्ट वृक्ष की समिधायें ले।

सू० ११४ "इदम् उग्राय" इन ७ ऋचाओं से अभिमन्त्रित ३ दिन के दही, मधु में रखे अक्षों से द्यूत क्रीड़ा करे। इन्हीं में "आदिनव प्रतिदीप्ने" ये ४ ऋचायें हैं।

सू० ११५ "अग्न इन्द्र" "दिशश्चतस्त्रः" (८।८–२२) से नवीन वाहन मय वाहक को अभिमन्त्रित कर दूसरे के कटक दल के त्रासनार्थ दे। (की. २।६) तथा इन तीन से सर्वसम्पतकामनार्थ अग्नि, इन्द्र का याग, उपस्थान करे। (कौ. ७।१०) इसी ११५ से आग्रयणेष्टि में अग्नि इन्द्र देवता का होम करे। (वै. २।४)

सू० ११६ "इन्द्रस्य कुक्षिः" "साहस्त्रः" (९।४) से वृषभ को अभिमन्त्रित कर छोड़े। (कौ. ३।७)

सू० ११७ "शुम्भनी" इन दो ऋचाओं से घट में सुरभि पदार्थ डाले, अभिमन्त्रित कर मूंज की रस्सी से ग्रन्थियों को बांधकर, रोगी को कुश समूह से स्नान करायें, छींटे दे। सर्व व्याधि भेषजार्थ प्रयुक्त हैं (कौ. ४।८)

सू० ११७ "शुम्भनी" यह अंहोलिङ्गगण कार्यों में जो अप्रसिद्ध या अनुक्त

या उक्त, प्रसिद्ध औषधि, वनस्पति आदि कार्यों में विहित है । की ४१८ इसीसे विवाह में घृत होम कर वर-वधू के मस्तिष्क को छींटे दे । इन्ही से इसी कर्म में वर-वधू की अन्जली में जलपात्र अभिमन्त्रित कर अर्घ्य (अघमर्षण) करे । 'शुम्भनी' ७ ११७ 'तुभ्यम् अग्रे' (१४।२७) । (की. १०१४)

सू० ११८ "तुष्टिके" इन दो ऋचाओं से बाणापर्णी के चूर्ण को लाल बकरी के दूध में मिला अभिमन्त्रित कर, स्त्री पुरुषों में परस्पर विद्रोह के हेतु शय्या के चारों ओर छिड़के । तथा उसको दुर्भगा या दौर्भाग्यवती बनाने के लिए 'आते ददे' मन्त्रोक्त अवयवों को स्पर्श कर अभिमन्त्रित करे या विद्वेषी को देखकर जपे । यथा "तृष्टिके" (७।११८) से बाणापर्णी (आते ददे) (११९) से उसके अङ्ग स्पर्श करे । या उसे देख कर जपे । की. ४१७

सू० ११९/२ "प्रेतोयन्तु" "प्राग्नये" (६।३४—१) से रक्षोग्रहभेषज्यार्थ, आज्य, समिध आदि १३ पूर्वोक्त वस्तुओं से होम करे । (की, ४१७)

सू० १२० "प्रपतेत" नैऋति कर्म में चौथे कर्म में काक की जंघा में सपिण्ड लोहे की कील में बाँधकर इससे काक को छोड़ दे (विसर्जन करे) ५वें नैऋत कर्म में सूत्रोक्त परिधान, आच्छादन, धोती, दुपट्टा, साफा आदि कर्त्ता करके "या मा-लक्ष्मी:" (१७।१२०—२) इससे लोह सहित साफा (उष्णीष) को जल में फैंक दे। "एक शतं लक्ष्म्या:" (७।१२०—३) से ओढ़ने के वस्त्र को लोहे के टुकड़े के साथ जल में छोड़े ।

७।१२०/४ 'एता एना" इस ऋचा में पहनने के वस्त्र को लोहे के साथ जल में छोड़े। "प्रपतेत" (१२०) से नग्न को गिराये । इसी (७।१२०) से काम्य कर्म में विघ्न-रूप दुःस्वप्न दर्शन दोष निवारणार्थ चारों से ही छींटे दे । (शा० क० ४ तथा ६।१६)

१२१ "नमोसराय" इन दो ऋचाओं से 'सर्वज्वरभेषज्यार्थ' सूत्रोक्तकार से मेढक को बाँधकर खट्वा के नीचे बिठा उसके ऊपर व्याधित को बिठा इनसे अभि-मन्त्रित जल से छींटे दे । की.

सू० १२२ "आमन्द्रैः" "त्यमूषू" ७।९० "त्रातारम्" ७।९१ से स्वस्त्ययनार्थ इन्द्रदेव का जप, उपस्थान, होम करे (की ७।१०) तथा शव के दाह संस्कार के उपरान्त कर्त्ता जप प्रतिदिन करे ।

सू० १२३ "मर्माणिते" से कवच अभिमन्त्रित कर योद्धा को शत्रु दल त्रास के हेतु दे। की. ८।७ तथा महाव्रत (अभिषेकादि) में राजा या अन्य को दुन्दुभिवादनानन्तर तीर्थ देश को प्रस्थान कराये।

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन्।
पुमर्थांश्चतुरो देयात् विद्यातीर्थ महेश्वरः।

ॐ

❀ अथर्व विधान काण्ड– ८ ❀

सू० १—"अन्तकाय मृत्यु वे" तथा "आरभस्व" (८।२) कौ० (७।६) के आधार पर अर्थ सूक्त कहे हैं। इनसे आचार्य्य यज्ञोपवीत संस्कार में बदलक (वटु) की नाभि को स्पर्श कर जपे। तथा आयुष्कामी शरीर को स्वयं अभिमन्त्रित करे। तथा ऋषि के हाथ से अभिमन्त्रित कराये। कौ० ७।९ यथा "उपप्रियम्" ७।३२ अन्तकाय-मृत्य वे" ८।१ "आरभस्व" ८।२ ॥

इसकी अर्थ सूक्त में गणना होने से "विश्वकर्म गण, आयुष्यगण और स्वस्त्ययनपण से आज्य होम करे। कौ० १४।३। तथा तीस महाशान्ति तन्त्र भूतशान्ति कर्म में जप करे। (न. क. २३)

"रक्षन्तु त्वा" इसका पूर्व सूक्त के साथ उपनयनादि में विनियोग है। तथा हिरण्यगर्भ नामक महादान कर्म में इसी से कर्त्ता की रक्षा करे। (परिशिष्ट) "यदा बध्नन्" (१।३५) से हिरण्यमाला बनाये "रक्षन्तु त्वा" (८।२—११—२१) से रक्षा करे (प० १३-१) तथा अश्वरथाख्य महादान कर्म में इसीसे यजमान को अभिमन्त्रित करे।

"पुनन्तुमा" (६।१९) अपने को स्पर्श कर जपे "रक्षन्तु त्वाग्नयः" (८।२) से यजमान को अभिमन्त्रित करे (प. १४।१)

सू० २—"आरभस्व" ये ३ सूक्त अर्थ सूक्त हैं। इसका प्रथम सूक्त के साथ विनियोग है। तथा इन ३ सूक्तों से आयुष्कामी शरीर को स्वयं तथा ऋषि हस्त से अभिमन्त्रित करे। "आरभस्व" (८।१) "प्राणायनमः" (११।४) "विष्णमहिम्" (१७।१) कौ० (७।६) अभिमन्त्रित करे। तथा अर्थ सूक्त के उपरोक्त कर्म करे। तथा नाम करण में इस अर्थ सूक्त से कुमार के हाथ में निरन्तर जल धारा छोड़े। और "देवदारुमणि" अभिमन्त्रित कर बांधे। और उसी मणि को घिस कर कुमार को चटाये (कौ० ७ ६) तथा अन्त्येष्टि कर्म में "आरभस्व" इन ३ से प्रेताग्नि दीपित करे। यह ३० महाशान्ति तन्त्र भून शान्ति के जप में भी मानी है (न. क. "पुनस्तदेव जप्यंतु शंतातीयम् अथावतः। अन्तकाया रभरचेति" (न. क. २३) तथा "वैश्वदेवींगतायुषाम्" (न. क. १७) में निर्दिष्ट महाशान्ति कर्म में देवदारुमणि बांधे। न. क. १६ यह मरण से पूर्व की अवस्था में किया जाना चाहिये।

"कृणोमि ते प्राणापानौ" इस सूक्त का (८।२) 'आरभस्व' के साथ विनियोग है।

"आरादरातिम्" इन २ ऋचाओं से कलह रूप निर्ऋति गृहीतकुल की शान्ति में होम करे। (कौ० १३ ५) इनसे नैर्ऋति कर्म में ढाक, आज्य, शर्करादि से होम करे (न. क. १५)

ऋ० ११ –"परःसोऽस्तु" इस सूक्त का "रक्षोहणम्' इस अनुवाक के साथ विनियोग है।

सू० ४—"इन्द्रो यातूनाम" इसका भी "रक्षोहणम्" अनुवाक के साथ विनियोग है।

सू० ५—"अयं प्रतिसरः" ये दो अर्थ सूक्त अभीष्ट सिद्धि के हैं। इनसे दही मधु में ३ रात्रि वास के उपरान्त तिलकमणि अभिमन्त्रित कर धारण करे। यथा कौ० ३।२

"आयमगना" (३।५) अयं प्रतिसरः (८।५) अयंमेवरणः (१०।३) अरातीयोः (१०।६) से मन्त्रोक्त को अधिवासित कर बांधे। तथा ये दो सूक्त कृत्यागण में होने से शान्ति जल के छींटे स्नान होमादि भी करे। "अयं प्रतिसरः" "यां कल्पयन्ति"

(१०।१) इनसे महाशान्ति प्राप्त होती है। ५।३। शान्ति कर्म कृत्यादूषण, चालन और मातृनामा गण से करे (प. क. १६) (न. क. २३) तथा रोगार्त (रौद्री) शान्ति करे। । न. क. १७) से तिलक मणि बन्धन करे। "प्रतिसरम्" से प्रतिसर धारण करे (अ० परिशिष्ट)

सू० ५—"उत्तमो असि" इसका उपर्युक्त सूक्त के साथ विनियोग है।

सू०—६ यौ ते माता" ये ३ सूक्त अर्थ सूक्त हैं। इसका "दिव्योगन्धर्व" (२।२) " इममे अग्ने" (६।१११) "यौते माता" (८।६) ये मातृनामा अम्बादिगण हैं। तद्वतकर्म अद्भुत होम शान्ति होमादि करे। (कौ० ५।७) १३।२, शा० क० १६

सीमन्तोन्नयन में इन्हीं से श्वेत पीत सरसों अभिमन्त्रित कर गर्भिणी के बांधे। कौ० ४।११ ऋ० वे० १०।१६२—५) "पवीनसात्" (८६—२१) का (८।६) के साथ विनियोग है।

सू०—७ "या बभ्रवो" इस अर्थ सूक्त से यक्ष्मादि समस्त व्याधि निराकरणार्थ शान्ति वृक्षों की टहनियां-छालें जलयुक्त घट में डालें, अभिमन्त्रित कर स्नान, पान करे वैतान् (५।२—३) कौ० ४।२

सू० ८—"इन्द्रो मन्थतु" इस अर्थ सूक्त का शत्रु-क्षय, शत्रुभयनाशन शत्रुजय स्वकीय बल वृद्धि में विनियोग है। ये सेना कर्म कहे हैं, सेनाग्निसिद्धयर्थ "पूतिरज्जु" (८।८-२)

इस आधी ऋचा से अग्नि के स्थान पर पुरानी रस्सी ले, पीपल व करील के काठ को मन्थन कर अग्नि पैदा करे (८।८—१) से अग्नि मन्थन करे। धुआं होते ही "अग्निपराद्दश्य" (८।८—२) आधी ऋचा से अग्नि की वन्दना करे। ऐसी अग्निसेना कर्म में ले "इन्द्रो मन्थनु" इस सूक्त की प्रत्येक ऋचा से अश्वत्थ समिधादान से—शत्रु क्षय इसी सूक्त से करीर, एरण्ड, ढाक, तिणि, कत्था, शरकण्डा, की समिधादान से शत्रुभय नहीं रहता। इसी के अन्त में अभ्यातान होम भाङ्ग के पाश अभिमन्त्रित कर सेना के चारों ओर डाले, क्रुद्धरूप से अभिमन्त्रण करे। इसी से मूंज के पाश करीर के दण्ड, पीपल के खूटे, तथा करीर के दण्ड, भाङ्ग के जालों में बांध सेनास्थल, में गाड़ दे, ये क्रम से सेना क्रम से भी करे (जय कर्मार्थ प्रयोग है) उपर्युक्त कर्म तीन प्रकार से करे। "स्वहेभ्यः" (२४) इन दो पदों से स्वमित्रबल

वृद्धयर्थं, आज्य होम दायें हाथ से करीर की समिधाओं को प्रज्वलित अग्नि में करे। "दुराहामीभ्य:" (२४) इन २ पदों से पर बल बिनाशार्थ सव्य (वाम) हस्त से उक्त अग्नि में इङ्गिड समिधों से होम करे। कर्म अग्नि के उत्तर में लाल पीपल की शाखा पृथ्वी में ऊपर (गाडे) को करके नील, लोहितरङ्ग के धागे से सबको लपेट कर "नीललोहितेनामूनभ्य वतनोर्मि" (२४) इससे दक्षिण की ओर दूर बलपूर्वक त्यागे। यह सेना कर्म, अरण्य या सेनास्थल में जो सम्भव हो वहां करे (कौ० २।७)

सू० ६—"कुतस्तौ" विराड वै" इन २ सूक्तों का स्वर्ग कामना वाला जप करे।

सू० १४—"शिवे ते स्ताम्" इन २ ऋचाओं से धान जौ, शमी अभिमन्त्रित कर कुमार के शिर पर रक्खे। कौ० (७।६)

सू० १५—"शिवास्ते सन्त्वोषधय." इस ऋचा से अद्भुत महाशान्ति में सूर्य चन्द्र का होम करे "उरु विष्णो वि क्रमाच" (७ २७—३) से विष्णुः (८।२—१५) से सूर्य चन्द्र को न. क. १४। तथा इसी (८।२—१५) से मिथ्याभिशाप निवृत्यर्थ, भोजन अभिमन्त्रित कर अभ्यागत को दे। इसी से उक्त कर्म में द्रुघण या पलाश आदि मणि अभिमन्त्रित कर निन्दित के बांधे। यथा "उतामृतासु" (५।१—७) "शिवास्ते" (८।२—१५)। कौ० (५।१०)

सू० १६—"यत ते वासः" इस ऋचा से नामकरण में बालक को वस्त्र से ढांके। कौ० ७।६

सू० १७—"यत क्षुरेंण" से गोदान कर्म, चौल कर्म उपनयन कर्म में क्षुए का मार्जन अभ्युक्षण करे। कौ० ७।४,, ७।६

सू० १८—"शिवौ ते स्ताम व्रीहि यवौ" इन दो से चावल जौ पीसकर, अभिमन्त्रित कर बालक को अन्न प्राशन में दे। (कौ० ७।६)

सू० १९—२" शिवौ तेस्ताम्" इन्हीं २ ऋचाओं से गोदानादि में व्रीहियव अभिमन्त्रित कर कुमार के सिर पर रक्खे। कौ० ७।६

सू० २०—"अह्नं चत्वा" इस ऋचा से भी उपर्युक्त कर्म, उपर्युक्त संस्कारों में करे।

सू० २१—"शतं तेऽयुतम् हायनाय" का ८।२।१६ के साथ विनियोग है।

सू० २२—'शरदे-त्वा हेमन्ताय" का ८।२।१८ के साथ विनियोग है।

सू० २३—"मृत्युरीशे" यह चातनगण में उसी भाँति विनियोग करे "रक्षोग्रहपिशाच आदि में पूर्व ही आ चुका है। तथा इसी अनुवाक से पिशाचादि ग्रस्त से कहलवाये, पूछे, पढ़े। इसी कर्म में त्रपुसमुसला, खदिर, सर्षपादि की समिधा, कटका या गूलर की मेख, कील लोह या तांबे की विषम संख्या में गाड़ने को "रक्षोहणम्" (८।३—१) से अभिमन्त्रित करे। तथा गर्म शर्करा अभिमन्त्रित कर छिड़के। इसी अनुवाक् से यव के सक्तुओं से होम करे। तथा असाध्यग्रह वशीकरणार्थ बीरण तूल युक्त इङ्गिड व आज्य का होम करें। तथा गृह आदि में ग्रह पिशाच आदि की शंका में सरसों की समिधा बाल सहित एवं कुशा अभिमन्त्रित कर घर के ऊपर रख दे। प्रातः उपर्युक्त वर्हि, इध्म के विकार होने पर ग्रह व पिशाच का अस्तित्व समझे, विकार न हो तो अभाव समझे। इसी कर्म में वैश्रवण (यम) को नमस्कार करने के उपरान्त इसी अनुवाक् से जल अभिमन्त्रित कर ग्रह ग्रहीत को आचमन, प्रोक्षण स्नान कराये या रात्रि में दो उल्मुक (ऊकटी) अभिमन्त्रित कर एक दूसरे से घिसे। कौ० ५।२६-४) (४।१) तथा शान्ति जल अभिमन्त्रित कर चातन तथा मातृनामादिगण से होम करे। (शा० क० १६। तथा वशा शमन कर्म में पशुसंज्ञापन के उपरान्त इस अनुवाक को जपे।

सू. २४ "प्रजानन्त" (२।२४—५) से प्राण प्रतिष्ठा करें। "रक्षोहणं ८।३ को जपे (का० ५।८) तथा घृत कम्बलाख्य महाभिषेक में जपे। अथर्व परिशिष्ट—

ब्राह्मणाः स्वस्ति वाच्याथ प्राङ्गमुखः संविशेत ततः।

रक्षोहणम् अनुवाकं जपत् कर्त्ताथ ऋत्विजः। इति।

सू. २५—"तदग्ने चक्षुः" यह सूक्त रक्षोहण के साथ विनियोग करे।

सू० ८।३।२६ "आग्नी रक्षांसि" इस ऋचा से बिना अग्नि के अग्नि दर्शन दोष-निवारणार्थ होम करे। कौ १३।३८। तथा इसी से सशब्द अग्नि-दोष-निवारणार्थ अग्नि का उपस्थान करे (कौ० ५।१०)

"अग्निरक्षांसि" (८ ३—२६) "आदितिर्द्यौः" (७।६—१)। वै० २।२

"इन्द्रासोमा" इस सूक्त का भी रक्षोहण के साथ विनियोग है

संवत्सरं तु मण्डूकान् ऐन्द्रासोमं परं तु यद्।

ऋषिर्ददर्शराक्षोघ्नं पुत्र शोक परिप्लुतः॥

हते पुत्र शते क्रुद्धः सौदासैर्दुःखितस्तदा॥

❀ अथर्व विधान काण्ड–९ ❀

सू० १–"दिवस्पृथिव्या मधुविद्या–सूक्त" इस अर्थ सूक्त का मेधाजनन, वर्चस-कर्म में विनि योग है। इसे सविस्तार "प्रातरग्नि" (३·१६) में देखें। उत्सर्जन कर्म "यथासोमः प्रातः वने" (९।१—११ से २४) से आज्यहोम करे। "गिरावर गरादेषु" (६।६९) कौ० (१४।३) तथा "दिवस्पृथिव्या" यह सूक्त सोमयाग में सोम सेवनार्थ विनियोग करे। (वै० ३।६)

सू० २—"सपत्नहनमृषभं" कामसूक्त-काम इच्छारूप देव हैं उनको सम्बोधन कर सपत्नक्षय की प्रार्थना करे। इससे अभिचार कर्म में ऋषभ को अभिमन्त्रित कर, द्वेष-कर्त्ता की ओर छोड़े और स्वतः गिरी हुई पीपल की समिधा-दान करे। (कौ० ६।३) तथा सोमयाग में अनुवन्धी, अपराजित बैठी हुई काम देवता को नमस्कार करें। (वै० ३।१४)

सू० ३—"उपमितां प्रतिमितामथो" इस सूवत-शाला से स्वर्गकामी दाता, प्रतिगृहीता कोअभिमन्त्रित कर भवनदान दे।

सू० ४–"साहस्रस्त्वेष" एवं "इन्द्रस्य कुक्षिरसि" (७।११९) से वृषभ को अभिमंत्रित कर छोड़े। सू. ५ "रेतोधायै:" इन ६ सौत्रमन्त्रों से तथा "एतं वो युवानम्" (९।४—२४) ऋचा से वछड़े का अभिमन्त्रण कर प्रोक्षण करे।

इसी सूक्त से पुष्टि कामी वृषभ को छोड़कर इन्द्र देव को नमस्कार करे। तथा संपत्कामना वाले पौर्णमासी को श्वेत वृषभ, इन्द्र की प्रीत्यर्थ छोड़े। कौ०३।७। परिशिष्ट १७।

सू० ६—"योविद्यात् ब्रह्म" स्वर्ग की इच्छा वाले इन ६ पर्यायों का जप करें। "यत्क्षत्तारम् ह्वयत्या" पर्यन्त ६ पर्यायों में अतिथि की प्रशंसा तथा माहात्म्य है।

सू० ७—"प्रजापतिश्च" इसका "एहयन्तुपशव." (२।२६) के साथ गोष्ठ कर्म में विनियोग है। (कौ० ३।२)। तथा "वृषभ" के भिन्न अङ्गों में भिन्न २ देवता रूप से इस सूक्त से अभिमन्त्रित कर दान दे, छोड़े।

सू० ८–"शीर्षक्तिम्" इस अर्थ सूक्त में शिरोरोग आदि की भैषज में रोगी के शरीर का अभिमर्शन करें। तत्पश्चात् "पादाभ्याँ ते" इन २ ऋचाओं से सूर्य

का उपस्थान करे। साथ ही " उत्तमाभ्याम् " (२१।२२) से भी सूर्य उपस्थान करे। कौ० ४।८ यह सूक्त अंहोलिंगगण में है उसके सभी कार्यो में विनियोग करे। विशेष "अक्षीभ्यां (२।३३) सूक्त में देखें।

सू० ६--"अस्य-वामस्य" यह अनुवाक, सलिलगण में है। उसी में विनियोग है। "आपोहिष्ठा" (१।५) में देखे सू० १० " यद्गायत्रे" भी सू० ६ के साथ है।

कामिनी मनोऽभिमुखीकरणम् । (अ. कां २ सू. ३० मं.३ प्र. ४ अनु ५)

१–५ प्रजापतिः । १ मनः, २ अश्विनौ, ३—४ ओषधिः, ५ दम्पत्ति ।
अनुष्टुप. २ पंथ्या पंक्ति, ३ भूरिक् ।

यथेदं भूम्या अधि तृण वातो । मथायति ।
एवा मथ्नामि ते मनो यथा मां कामिन्य सो यथामन्नापगाऽसः ।। १

संचेन्नयाथो अश्विना कामिना सं च वक्षथः ।
सं वां भगासो अग्मत संचित्तानि समुव्रता ।।२।।

यत् सुपर्णा विवक्षवो अनमीवा विवक्षवः ।
तत्रेमं गच्छताद्धवं शल्व इव कुल्मलं यथा ।।३।।

यदन्तरं तद् बाह्यं यद बाह्यं तदन्तरम् ।
कन्यानां विश्वरूपाणां मनो गृभायौषधे ।।४।।

एयमगन पतिकामा जनिकामो ऽहमागमम् ।
अश्वकनिक्रदद यथा भगेनाहं सहागंमम् ।।५।।



ॐ

अथर्व विधान काण्ड-१०

सू० १—"यां कल्पयन्ति" यह अर्थसूक्त कृत्याप्रतिहरण "दूष्यादूपिरसि" (२।११) की भांति विनियोग शान्ति जलादि से करें।

सू० २—"केनपार्ष्णी" इस सूक्त में पुरुष माहात्म्य है। और उसके भिन्न २ अङ्ग किस देव ने बनाये, इसका प्रश्नोत्तर है। तथा इस सूक्त का शनि-ग्रह की शान्ति में भी सूक्त" (१०।२) सहस्रबाहुपुरुष (१९।६) "त्रिषासहिम्" (१७।१) "प्राणाय नमः" (११।६) से शनिका होम जप, बलिदान करे (शान्ति कल्प १५)

सू० ३—"अयं मे वरणो" इस अर्थ सूक्त से ३ रात्रि दही, मधु में वरणमणि बिठा अभिमन्त्रित कर 'अरातीयोः" (१०।६) मंत्र को अभिमन्त्रित कर शत्रु-क्षय के लिये बांधे। (कौ० ३।२) अभयाख्य महाशान्ति विधान (शा. क. १७,१९)

सू०—४ 'इन्द्रस्य प्रथमो" इस अर्थ सूक्त का "ब्राह्मणो जज्ञे (४।६) की भाँति समस्त प्रकार के सर्पभय विनाश कर्म चिकित्सा में प्रयोग करें। पैद्व, सुनहरी रङ्ग विरङ्गा कीड़ा (तलिनी) भाषा में नाम है उसे पीस कर अभिमन्त्रित कर दायें अंगुष्ठ से दाँयें नथने में रोगी को सुघायें। इसी सूक्त से पैद्व नाम के कीड़े को सफेद वस्त्र में लपेट कर अभिमन्त्रित करे। सर्प का जहां भय हो वहां गाड़ दे (केशवः) पैद्व को वस्त्र में बांधकर उस घर में रखदे। (दारिलः)

(१) वें० २५ ऋचा से सर्प के काटे हुए के शिर से पैर तक सभी अङ्गों को बन्द लगादे। अभिमर्शन करे।

कौशिक सू० ४।४; ४।८ तथा ४।६ भी देखे, सर्प विप भैपज्य विधान, में निहित है।

विष की आशङ्का हो तो उस की चिकित्सा में "अङ्गादङ्गात् प्रच्यावय" (२५) (२) को तपाकर अभिमन्त्रितकर विष के घाव को देखकर उसके सन्मुख फेंक दे। ऐसा फेंके कि सर्प न देखे, सर्प के न होने पर उस स्थान की ओर जहाँ से काटा हो फेंके। यह इसकी आरे अभूत (२६) ऋचा से करे।

सू॰ ५ "इन्द्रस्यौज" यह अभिचार कर्म में है। शत्रु-नाशन समर्थ बल को जल में प्रवेश (आह्वान) करे, उस जल में वज्रत्व की कल्पना करे और शत्रु को लक्ष्य करके उसे फेंके। जैसे—प्रथम जल को सम्बोधन करे जिससे तुम इन्द्र के तेज हो, सहधर्मी हो, उस इन्द्रबल वीर्य, तेजादि से तुम्हें करता हूँ। तत्पश्चात् क्रमशः इन्द्र, सोम, वरुण, मित्रावरुण, यम, पितृगण, सविता, के अंश हो ऐसा कहे। तदनन्तर जो जल भूलोक के समस्त जलों का अंश हैपूज्य है, वही किरण या जलोत्पन्न विद्युत है। जैसे महाबली वृषभ है उसी के सदृश हिरण्यगर्भ, आदि बलीदेव जल में विद्यमान विविध रंग को किरणों की भाँति मेघ, जो जलों के बीच वर्तमान है, उस तुम जल को, निन्द्यकर्मी क्रूर प्रत्येक शत्रु के प्रति फेंकता हूँ। उस शत्रु को मैं बध करता हूँ। उसे इस मन्त्र से, इस कर्म से, इस जल रूपी वज्र से विदीर्ण करता हूँ, ऐसा कहे। तदनन्तर ऋचा २२ यदर्वाचीनं त्रैहायणात्" अनृत वचन पाप से रक्षा की प्रार्थना करे। २३ से शत्रु पर कल्पित जलरूपी वज्र फेंकने को परिक्रमा करे, घुमाये। जो घुमाये वह स्वक्रम का सम्बोधन करे। जैसे त्वं विष्णो क्रमोऽसि। अर्थात् जैसे जिस भाँति विष्णु तीन लोकों को धारण करते हैं वैसा बलवान हो और स्वयं पृथिवी के तीक्ष्णतमशस्त्र हो जिसके द्वारा पृथ्वी के सहयोग से शत्रु का संहार करता हूँ। वैसे ही आकाश में तीक्ष्णतर द्यौ, दिक्, आशा, ऋक्, यज्ञ, औषधि, जल, कृषि, प्राण से संशित हो उससे उनके अभिमानी प्रदेशों से शत्रु को अस्त करता हूँ और कहे हमने शत्रु सेना जीत ली। हम जीत गये। तत्पश्चात् दक्षिण दिशा को चले, कुछ चलकर उसके सामने हो जावे। वैसे ही अन्य दिशाओं की ओर सप्तऋषि, नक्षत्र, ब्राह्मणों के सम्मुख होवे। प्रत्येक को उनके द्वारा धन की प्रार्थना करे। जिस शत्रु को पाऊँ उसे यह समिधा नष्ट कर दे, उसे होलिका बनकर खा जावे। तत्पश्चात् भुवनपति (२।२) से अन्न की, वैसे ही अग्नि से तेज, प्रजापति से आयु की प्रार्थना करे। और अग्नि से राक्षसों के परस्पर (उनके) विद्वेष, विनाश की प्रार्थना करे। अन्त में पूर्वोल्लिखित जितने जल हों उन सभी को वज्र तुल्य मानकर शत्रु के शिर काटने को फेंके और वह शत्रुओं के अङ्गों का भेदन करे और देव गण इस के अनुगत हो ऐसी कामना करे।

साम्प्रदायिकों की इस अभिचार कर्म में निम्नलिखित विधि हैं।

अभिचार कर्म उद्वज्र में (जल रूपी वज्र) का विधान—

"इन्द्रस्यौजः" इन प्रथम ६ ऋचाओं से पूर्व, अर्ध ऋचाओं से काँसे के

घटकों धोये। "जिष्णवे योगाय" उत्तरार्ध इन ६ ऋचाओं से उस घट को जल के पास रक्खे। १४।१।३८ "इदमहं योमा प्राच्यादिशः" इन ८ कल्पजा ऋचाओं से घट को जल के वीच रखदे। "इदम् अहम्" इस सूक्त से जल के वींच घट का मुख कर दे। "इदमहं योमा प्राच्या दिशः" इस सूक्त से घड़े को जल से पूर्ण करके निकाल ले। "इदमहं" इस सूक्त से जल पूर्ण घट को मण्डप में रखदे। इस प्रकार अभिचार कर्म में जल लावे। तदनन्तर वज्र चलाने की विधि करे।

"इन्द्रस्यौजः" यह कर करके "इदमहम्" से स्थापनान्त "अग्नेर्भागः" (७।१४) इन ८ ऋचाओं से लाये हुए जल के दो भाग करे।

"इदमहम्" ६।९८-३ कां १६ सू. ७ ऋचा ८ से प्रारम्भ सूक्त १३।१,५७ "योमा प्राच्यादिश पर देखें।

"इदमहम्" कां १६ सू० ७ ऋचा ८ से अन्त पर्यन्त सूक्त "योमा" कां १३ सू० १ ऋचा ५७ "प्राच्या दिशः" कां ६ सू. ९८ ऋचा ३ कुल ८ कल्पजा ऋचाओं से घट को जल के वीच रक्खें।

"इदमहम्" कां १६ सू. ७ से ८ पर्यन्त घट का मुख जल के वीच कर पूरे सूक्त १६।७ से ८ तक घट को जल पूर्ण करे। पुनः कां १६ सू. ७ ऋचा ८ से १३ मात्र से घट को मण्डप में रक्खे 'प्राणियों को इस प्रकार अभय प्रदान करे (कल्पजासूक्त)

"एनानधरा चः पराचोवाञ्चस्त पसस्यमूंनयत ।
"देवाः पितृभिः सविदानः प्रजापतिः प्रथमो देवतानाम् ॥

"इदमहं योमा प्राच्या दिशो अघायुरभिदासादपवा "दी दिषूर्गूहः ।
तस्ये मौप्राणयानावक्रमामि व्रह्मण ।

दक्षिणायाः प्रतीच्या उदीच्या ध्रुवाया ऊर्ध्वायाः ।"इदम् अहम्"

"योमा दिशाम् अन्तर्देशेभ्य; इत्ययक्रामामीति एवम् अभि ष्ठानायो हननि वेष्ठनानि ।

सर्वाणि खलु शश्वद् भूतानि ब्रह्मणाद् । "वज्रम् उद्यच्छ मानाच्छङ्कन्तेमाहनिष्यसीति ।

तेभ्योभयं वदेच्छम् अग्नयेशं पृथिव्यैशं अन्तरिक्षाशं वायवेशं दिवेशं सूर्यायशं चन्द्रायशं नक्षत्रेभ्यःशं गन्धर्वाप्सरोभ्यः शं सर्पेतरजनेभ्य. शिवं मह्यम् । इति

यह पूर्व क्रम की शेष प्रयोग विधि है।

भाग १ भाग २ रेखाङ्कित को पूर्व क्रमों के साथ प्रयोग करें।

अभिचार कर्म विधिः—

आधा जल घट में और आधा अन्य पात्र में करले। उस पात्र को अग्नि में तपाये। घट को अन्य पुरुष को दे दे। "अग्नेर्भागस्थः" (१०।५-७ से १४ ये ८ तपाने के मन्त्र हैं। उसके उपरान्त बाहर दक्षिणाभिमुख बैठे और गर्म पात्र को सामने रखे। "वातस्यरहितस्य" (६।९२—१) इस सौत्रमन्त्र से जल ले "शम्अग्नये" (१८।४—११, १२) इन कल्पजा ऋचाओं से समस्त प्राणि वर्ग को अभय करे। "योवआपोऽपाम्" (१५) इस ऋचा से वज्र फैंके। पुनः "वातस्य रहितस्य" से उपर्युक्त कर्म करके—"योवआपोपाभूमिः" (१६) इस ऋचा से वज्र फैंके। इस प्रकार (१७—२१) ऋचाओं से वज्र फेंके। "एनान धराच पराचः" इस कल्पजा ऋचा से पात्र में रक्खे हुए जल को भूमि में उड़ेल दे। इसी भाँति "यंवयम्" (४२) के अनुसार "अयामस्मै" (५०) इस ऋचा से वज्र फैंके। "विष्णोःक्रमोसि" (२५—३५) इन ११ को शत्रु के सम्मुख जपे। (की. ६।३) "यदर्वाचीनम्" (२२) से आचमन करे। अनृत भाषण से उत्पन्न पाप के निराकरणार्थ यह आवश्यक है।

"समुद्रंवःप्रहिणोमि" (२३) से समस्त तन्त्रों में पत्नि की अञ्जलि में उपपात्र को उड़ेल दे। (कौ० १।६

"सूर्यस्यामृतम्" इन ५ (३७—४१) समस्त तन्त्र में प्रदक्षिणा करे। (की.१।६)

सू० ६—"एतमिध्यम्" (३५) इस ऋचा से (समस्त कामनाओं की सिद्ध्यर्थ-खदिर फल की मणि) दधि, मधु, में ३ दिन रखकर सोने में मढ़कर उपर्युक्त ऋचा से होम कर "तमिंमदेवता" (२९) अधिवासित को निकाले "अरातीयोः" इस अर्थ सूक्त से अभिमन्त्रित करे। "ब्रह्मणा तेजसा" ३० इस ऋचा से बांधे। यह समस्त कामनाओं की

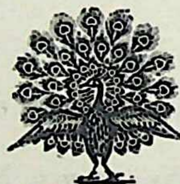
पूर्ति करने वाली मणि है। "आयमगन्" (३।५) "अयंप्रतिसरः" (८।५) "अयंमेवरणः" (१० ३) "अरातीयोः" (१०।६) इन मन्त्रों में वर्णित को अधिवासित कर उपर्युक्त भाँति से बाँधे। (को. ३।२)। इन मन्त्रों में वर्णित द्रव्यों से बनी, त्रयोदशी आदि ३ तिथियों में, दधि, मधु में अधिवासित, बन्धन स्थान मन्त्रों में हैं। उत्तम की "अरातीयो" इस सूक्त की, अवभुज्यकुटिल करके, तीन वार लपेट कर पार्श्वों में (लोह से चारों ओर से पूर्णतया ढाँककर) शिर में धारण करे (दारिलः)। तथा पशु याग में पशु के अनुमन्त्रण में इस सूक्त का विनियोग करे (वैं० २।६)। भूमिकामी— पार्थिवी इष्टि, पृथिवी में महाशान्ति हेतु उपर्युक्त मणिधारण करे (न. क. १७) (न. क. ६)।

सू० ७ "कस्मिन्नङ्गे" यह स्कम्भ सूक्त है। यह ब्रह्मा से ज्येष्ठ सनातन ब्रह्म की पूजा है। सर्वाधार वर्णन है।

सूक्त ८ "योभूतं" च भव्यच यह भी उपर्युक्त का समर्थक ज्येष्ठ ब्रह्म स्तवन में है।

सू० ६ "अद्यायताम्" वन्ध्या—"शतौदनागौ" दान विधि कौ० ८।६ देखें।
यह सूक्त सतौदना गौ सूक्त कहा जाता है।

सू० १० "नमस्ते जायमानायै" तथा ददामि (१२।४) से दाता वशा का दान करे गृहीता "वाच्यमानो भूमिष्ठाः" (३।२६–) से उसे ग्रहण करें।



ॐ

अथर्व विधान काण्ड—११

सू० १—"अग्ने जायस्वादिति" यह ब्रह्मोंदन सूक्त है। पुत्र की कामना एवं पति के लाभ के लिए ब्रह्मोंदन को पाक दान विधान है

सू० २ "भवाशवौं" ये ३ अर्थ सूक्त कहे गये हैं। "विश्वजित" (६।१०७) "शकधूम" (६।१२८) तथा (११।२) इन से स्वस्त्ययन होम करने का विधान है। भूत, प्रेत, पिशाच, असुर, कृत्या, अभिचारकर्म, अनहोनी या अद्भुत-घटनायें, दुष्ट–पक्षि (काक, उलूक, कपोत) आदि। लोकपाल क्षेत्रपति आदि के अभिवात-जनित, दोष, निवारणार्थ समान रूप के वछड़े वाली गौ' के दूध में चावल पका, तीन भागों में वांटें समस्त अर्थ सूक्त से रुद्र देवता को ३ वार आहुतियां दें।

यदि सामने मांस, विष्टा आदि गिरने का अपशकुन हो या मुख आदि पर गिरे, या अनहोनी अद्भुत घटनायें दृष्टिगोचर हों तो उससे उत्पन्न अनिष्ट, अरिष्ट शान्ति होम इन्हीं से करे। अग्नि चयन में "यस्तेसर्पः" (१२।१-४,६) तथा उपर्युक्त ११।२ से रौद्री-इष्टका में अग्नि-चयन करें। भौम-ग्रह या अन्तरिक्ष के समस्त उत्पात दोष शमनार्थ इन्हीं से अष्ट मूर्ति महादेव की प्रार्थना पूजा उपस्थान होम करें। वे ये हैं "शर्व पशुपतिश्चोग्रं रुद्रभयं अथेश्वरम्। महादेवं च भीमं च श० ब्रा० ६।१।१।१ इसीसे रुद्रज्वर शान्ति हेतु लोहे को गर्म कर जल में वुझाकर पिलायें, वाष्प दें, क्रोधशमन भी इसी प्रकार करें।

कां ११ सू० ३ "तस्यौदन" ये तीनों भी अर्थ सूक्त हैं इन से वृहस्पति सव होम, में जप, उपस्थान, दान आदि करें। परन्तु अभिचार कर्म में चावलों का भात वना "पृषान केन" से छींटे दें। इन ३ अर्थ सूक्तों से अभिमन्त्रित कर द्वेषी को दें। द्वेषी को छूकर जपें। आहुतिशेष घी को भात में डालकर उसे खिलायें। उसी में उस भात के खाने वाले के शिर आदि अङ्गों की कल्पना करे तथा कां ५ सू० ३० की ऋचा १३ तथा कां ६ सू० ५३ ऋ० १।२-३ प्राणि आदि को आवाहित प्रतिष्ठित करे। कां ७ सू० १३ ऋ ४ से मन को अवस्थित कर प्रयोग करें। ये सू० ३, ४, ५ अर्थ सूक्त हैं।

कां ११ सू० ४ प्राणाय नमः आरभस्व (८।२)" विषा सहिम्" (१७ १)

अर्थ सूक्तों से उपनयन में माणवक (बच्चे) की नाभि का अभिमर्शन करे। (कौ० ७६) दीर्घायु के निमित्त दक्षिण कर्ण को अनुमन्त्रित करें। आचार्य, ऋषि, हाथ से शरीर का अभिमर्शन करें। कौ० ७१६ इन्हीं से होम करें (कौ० १४।३) ग्रह याग में "सहस्रबाहु" (१६।६) "केनपार्ष्णी" (१०।२) "प्राणाय नमः" ११।६ से शनि-दोष निवारणार्थ जप, उपस्थान होम करें। शा० क १५ "महा-शान्ति लक्ष्य होम में (६।१३) नमोदेववधेभ्यो" "भवाशवौं (११।२) "प्राणाय-नमः ११।६ से होम करें।

कां सू० ५ "ब्रह्मचारी ष्णंश्चरति" ब्रह्मयज्ञ, जप में बिनियोग करें।

सू. ६ "अग्निं ब्रूमः वनस्पती" अंहोलिङ्गगण कार्यों में तथा समस्त दानादि समर्पण कार्यों में होम करें। प. १४।१

सू. ७ "उच्छिष्टेनाम रूप" इन ३ सूक्तों से ब्रह्मौदन सव—यज्ञ से अवशिष्ट ओदन की प्रार्थना करें।

कां ११ सू० ८ "यन्मन्युर्जायामावहत्"

कां ११ सू० ६ "ये बाहव" ये तीन भी अर्थ सूक्त हैं। "ऋचा दो "उत्तिष्ठत सं नह्यध्वम् इन से युद्ध में जाने से पूर्व राजा शूरवीर अधिकारियों यूथपतियों को जपते हुए भेजें। घी सक्तु होम करें धनुष की लकड़ी से उत्पन्न की गई अग्नि में आज्य, शर, धनुष की लकड़ी की समिधाओं से होम करें एवं अभिमन्त्रित कर धनुष कवच आदि दें। पर सेनाक्रमण स्थान में भाङ्गपाश फैंकें। मूंजपाश कच्चे मिट्टी के पात्र तीन सन्धि के लोहे के शस्त्र पात्र-वज्ररूप में युद्ध भूमि में फैंकें। श्वेत पैर कृत्या (गौ) की मिट्टी की कल्पित मूर्ति, राज चिह्नों से सजा (कृत्या रूप में) चौ रास्ता या युद्ध क्षेत्र में भेजें या छोड़ें।

कां ११ सू० १० "उत्तिष्ठ सं नह्यध्व केतुभिः सह का भी इसी में प्रयोग है।

प्रश्नोपनिषद खण्ड २—श्लोक ६

(i) अरा इव रथनाभौ प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम्।
ऋचो यजूंषि सामानि यज्ञः क्षत्रं ब्रह्म च॥

(ii) मनुस्मृति अध्याय १२ श्लोक—१२३

एतमेके वदन्त्यग्निं मनुमन्ये प्रजापतिम्।
इन्द्रमेकेऽपरे प्राणमपरे ब्रह्म शाश्वतम्॥

ॐ

अथर्व विधान काण्ड-१२

सू० १ "सत्यंबृहद्" इस पृथ्वी सूक्त तथा कां ३ सू० १२ "इहैवध्रुवां" ये वास्तोष्पति गण में हैं। ऋ. ३३ "यावत्तेऽभि" से पुष्टि कामी उन्नत स्थान पर चढ़कर उपस्थान करें कां ३ सू० १७ में वर्णित "सीरायुञ्जन्ति" कृषि कर्म साफल्यार्थ होम करें। "यस्या संदोहविर्धानं" (३८) यस्मां पूर्वेभूतकृत सानो भूमिरादिशतु (३९, ४०) इन तीन ऋचाओं से पुत्रधनादि प्राप्ति हेतु प्रार्थना, जप उपस्थान होम करें। "यस्यान्नम्" ऋ. ४२ से अन्न की अधिकता के लिये पृथिवी का उपस्थान करें "निधिंबिभ्रती' बहुधा ऋ. (४४) भूमि बिभ्रतां ऋ. ४५ से मणि हिरण्य आदि के लिये पृथ्वी की प्रार्थना करें। ग्रह-ग्राम-नगर-क्षेत्र की रक्षा के लिये ४।४ वलि भय ४।४ पत्थरों के इस अनुवाक से अभिमन्त्रित कर ग्राम की चारों दिशाओं में गाड दें। "भूमि हिले" इसके लिये और हिले तो उस अरिष्ट के शमनार्थ इस अनुवाक से होम करें भूमि अचल हो जायगी। भूमि प्राप्ति हेतु भी इसी अनुवाक का जप, उपस्थान, होम करें।

कां १२ सू० २ "नडमारोह" से यक्ष्मादि समस्त रोग शमनार्थ होम करें। तथा इसी से एवं प्रतिकूल कर्म करने वाले दुर्दान्त शत्रु के नाशार्थ होम करे। क्रव्यादग्नि की शान्ति का उपाय इसी से करे।

कां० १२ सू० ३ "पुंमान्पुंसोऽधितिष्ठ" स्वर्ग सूक्त है स्वर्गकामी इसका जप, होम करे। अन्तिम ६ ऋचाओं प्राच्यैत्वा दिशे (५५) से ऊर्ध्वायै त्वादिश ६० तक से वही दिशाओं की ओर मुखकर स्तवन करे।

कां १२ सू० ४—"ददामीत्येवब्रूयात्" का उपनयन में विनियोग है। बटु के मस्तक शिर पर हाथ रख कर इसका जाप करे। जल का मार्जन करे। विजय-कामी राजा भी इसका जप होम करे। यह वशा सूक्त है।

कां. १२—सू० ५—"श्रमेण तपसा सृष्टा" वह सप्त पर्याय हैं। राजा, श्रम तप, सत्य, यश, श्रद्धा और पौरुष से लक्ष्मी को वश में करने के लिए जप करे। विजय प्राप्ति के लिए अपने सेनापतियों के साथ ऊँचे स्थान पर चढ़कर जपे।



ॐ

अथर्व विधान काण्ड–१३

सू० १ "उदेदि वाजिन" से अर्थ कामना वाले २० ऋचाओं से उदित सूर्य का उपस्थान करें। अर्थोत्थापनार्थ स्नान कर त्रीसों ऋचाओं से उपस्थान करें। अर्थ सिद्धि में एक ही वस्त्र धारण कर इनसे उपस्थान करें और अर्थोमम "सिद्धयताम्" इन से अभिमन्त्रित कर वस्त्र धारण करें।

'उदेहि वाजिन्नितिविंशतृचो वाचस्पतिर्लिङ्गा" इति केशवः "उत्तमेन" ६।६२ "वैश्वानरोरश्मिमिर्न" तथा वाचस्पतिर्लिङ्गा उपर्युक्त ऋचाओं से उपर्युक्त कार्य करें। "योरोहितो" २५, रोहितो दिव २६, दो ऋचायें सलिल गण नें हैं "समिद्धो" कां १३ सू० २८ से अग्नि में समिधा दान करें। कां १३ सू० २ उदस्य केतव" सलिलगण में हैं। तद्वत कर्म करें। आयु वृद्धि के लिये सूर्य उपस्थान विनियोग करैं। "मूर्द्धाऽहम्" १६।३ "विपा सहिम्" १७।१ तथा "उदस्य केतवः" (१३।२) यह सवितृ देवतापरक हैं। नींचे कां १३ सू०३ "य इमे द्यावा" यह सूक्त रोहित देवता का है-सूर्य के प्रधान घोड़े के स्वरूप की कल्पना करैं। ऋचा १३ से १९ तक का अभिचार कर्म में निम्न प्रकार विनियोग करैं।

कां १३ सू० ३ "य इमे द्यावा पृथिवी" अभिचार कर्म में इस अनुवाक से पदों को बांधै। द्वेष कर्म में इसी अनुवाक् से लाल चावलों के भात में दूध मिला, सिन्दूर डाल-अभिमन्त्रित कर द्वेषी को दें। इसी से द्वेषी के प्रति कच्चे मिट्टी के पात्र में हाथ धोने को जल दें। वृषभ (पाँशुरज-निर्मित) की प्रतिष्ठा पूजा कर शत्रु के सन्मुख छोड़ें। शत्रु की चौरास्ता की मिट्टी की मृण्मयी प्रतिमा वना, प्राण प्रतिष्ठा करैं-अग्नि के पीछे खम्भे से बाँधे और जल उसके शिर पर से उतारें। "यस्मिन् पड्डुर्वीः पञ्च" ऋचा ६ से उद्वज्र प्रहार करें। "यो अन्नादो अन्नपति" ऋचा ७ से अभिमन्त्रित जल द्वेष के कारण को सङ्कल्प को मन में ध्यान करके उतारे आचमन करायें। कौ० ६।३ "समिद्धो अग्निः" (१३।१-२८, ३२) "य इमे द्यावा पृथिवी (१३।३) "अजैष्म:" (१६।६) से पाश वना अभिमन्त्रित करें। स्वयं टूटी पीपल, ऐरण्ड, करीर,, धनुष, की लकड़ियों मूंज के शङ्कों से प्रतिभा को छेदें, ताडित करें, गर्म कर तापित करें। यह १२ दिन करैं ६ दिन वज्रों, उद्वज्रों का प्रहार करें, सातवें दिन आचमन करें।

कां० १३ सू० ४—"सऐति सविता" उपर्युक्त की भांति प्रयोग विनियोग है। रोहित देवता परक ऋचा है।

ॐ

❀ अथर्व विधान काण्ड–१६ ❀

सू० १–"अतिसृष्टो" इससे किन्हीं भी शान्ति सूक्तों के साथ कांस्य पात्र में जल भरे, उसे इस सूक्त से छिड़कें, पुनः कास्यपात्र में जलपूर्ण करें—उससे जल के मल को निकालें। उसी जल से आचमन, प्रोक्षण, अवसेचन, आसेचन, आप्लावन कर्म करें।

१६।२— १ "निर्दुरर्मण्य" मरणं व्यसनं चैव बन्धन च विशेषतः। प्रणिपातोन्मत्तता वादेवोपहतिरेव च। पुत्रादि धननाशश्च गृहे दोषान् वहूनपि" ये सभी शत्रु हैं उन सभी के शान्ति हेतु अभिचार— कर्म की समाप्ति में अवभृथ स्नान करे। इस सूक्त से शान्ति औषधि, शान्तिय वृक्षों की शाखा अभिमन्त्रित, उदकघट से आत्मा का अभिमर्शन करें। (कौ० ६।३। तथा तथा उपनयन में रोली-चन्दन आदि से शरीर का अनुलेपन करें, और आत्मा को अभिमन्त्रित करे। इसी सूक्त से चक्षु आदि इन्द्रियों की दृढ़ता पुष्टि के लिये एकान्त में सर्वौषधि अभिमन्त्रित कर अनुलोम में लेप करे। इसी से श्रोत्र-वाणी, चक्षु, दांत नासिका आदि सभी इन्द्रियों की विकलता शमन होकर इन्द्रियां दृढ़, पुष्ट होती है। १६।३ "मूर्धाऽहं रयीणाम्" १६।४ नाभिरहंरयीणां "विषासहिम्" (१७।१) से दीर्घायुष्य कामी सूर्योपस्थान करें। १६।७ "तेनैनं विद्यामयं" १६।६ "अजैष्मा द्यासना" अभिचार कर्म में इन ४ सूक्तोंसे पाशों से शत्रुओं के पैरों आदि अङ्गों को बांधे, अभिमन्त्रित करे और गाड़ दे।इन्हीं ४ पर्याय सूक्तों से "अगन्मस्वः" इन २ अवसानों को छोड़कर शेष पद पद में पाशों को बांधे।

इन ४ पर्याय सूक्तों से उपर्युक्त २ अवसान छोड़कर-भाङ्गपाश मुञ्जपाश दर्भपाशों को स्वयं गिरे हुए पीपल, करीर, खैर, ऐरण्ड मुञ्ज, के शरों से छेदकर तप्त कर ताड़ित करे। इन्हीं ४ पर्याय सूक्तों से उपर्युक्त २ अवसान छोड़कर "अगन्मस्वः" इन २ अवसानों को छोड़कर-साठी या रक्त चावलों का भात, दूध मिला अभिमन्त्रित कर दे। इन्हीं ४ पर्याय सूक्तों से वृषभ की प्राण-प्रतिष्ठा पूजा कर अभिमन्त्रित कर शत्रु के घरों में छोड़ें। इन्हीं ४ से गढ्ढों में अनार की लेखनी से नाम इन्द्रिय आदि लिखकर खूँटे से बांध १२ रात्रि उन पर उद्वज्रजल छोड़ें।

१६।८-६ "जितमस्माकमुभ्दिन्न" दोनों पर्याय सूक्त है विजय की कामना, विश्वास के साथ करे तथा शत्रु के सैनिक, सेनापति, पशु, प्रजा और वीरों के बन्धन को दृढ़ करने की कामना करे।

अथर्व विधान काण्ड–१६

(षोडशं काण्डम्)

अथर्व संहिता का षोडश (१६ वाँ) काण्ड अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। इस काण्ड में दो अनुवाक और ६ सूक्त है। प्रथम अनुवाक में ४ सूक्त और द्वितीय अनुवाक में ५ सूक्त हैं। सभी ६ सूक्त पर्याय सूक्त, सूक्त है तथा १०३ मंत्र हैं अतः इस षोडश काण्ड को ही पर्याय काण्ड कहा जाता है। ६ सूक्तों में से ५ के देवता प्रजापति २ के आत्मा १ के वाग् और १ के देवता स्वप्न हैं। आठवे और नवे सूक्तों के ३७ मंत्रों में से ३४ मंत्र विजय कामना अथवा शत्रुञ्जय के हैं। सभी मंत्र "जितमस्माकमुभ्दिन्नं" से प्रारम्भ होकर "पाशान्मानोचि" पर समाप्त होते हैं। केवल देवता का नाम ही परिवर्तित होता है।

इसी षोडश काण्ड के पंचम पर्याय सूक्त का देवता "स्वप्न" है। इस सूक्त में केवल १० मंत्र हैं। सभी मत्र प्रायः विद्म ते स्वप्न जनित्रं' से प्रारम्भ होते हैं। पाश्चात्य विद्वान फ्रायड का विश्व प्रसिद्ध स्वप्न सिद्धान्त इसकी तुलना में हेय है।

—सम्पादक

ॐ

❀ अथर्व विधान काण्ड–१७ ❀

को १७।१-"त्रिपासहिम्" यह पूरा अनुवाक पर्याय सूक्त है तथा सलिलगण में वर्णित है। इसका "उदस्य केतव" (१३।२) "मूर्धाऽहम्" (१६।३) से आयुः अभिवृद्धि हेतु प्रातः, सायं, मध्याह्नः सूर्य उपस्थान करे। को० ७१६। चन्द्रग्रहण, सूर्य ग्रहण में तथा अद्भुत कर्म (अनहोनी घटना घटित होने से उत्पन्न भावी क्लेश) शमनार्थ इसी से होम करे। को.१३।७। चन्द्रग्रहण आदि में इन्हीं से उपस्थान करें। को० १३।८ श्रुत, तेज, धन-धान्य दीर्घायु के लिये इसी अनुवाक, से होम करें। कोटि-होम भी इन्ही से करें। अ० प० ३१—६

जुहुयुः शान्त वृक्षस्य समिधो घृत संयुक्ताः, स्वयं चापि यजेत् ब्रह्मा सवितारं दिने दिने पाक-यज्ञ विधानेन मन्त्राश्चर्युविषासहि, शान्ति कामोयवै, कुर्यात् तिलैःपापानुत्तये"

सूर्य देव की प्रीत्यर्थ मण्डलाकार अपूप, अभिमन्त्रित कर उस पर स्वर्ण रख, लाल पुष्पों रक्त चन्दन से इसी अनुवाक् से पूजन कर ब्राह्मणों को दान दें। "यः कामयेत सर्वेषां नृणाम् उत्तमं, स्याम" कुल-जाति वय, धन-विद्या, पुत्र-पौत्र, पशु प्रतिष्ठा आदि में सर्वोपरि होने के लिये उपर्युक्त भांति सूर्यदेव का दान उपस्थान; जप, होम इनसे करें।

इन्हीं से इस लोकान्तर साधन लक्षण फल प्राप्त होता है।

"यत्र ज्योतिरजस्त्रं यास्मिल्लोके स्वर्हितम्।

तस्मिन् मांधोहि पवमानामृते लोके अक्षितं" ऋ० वे० ९।११३।७—इससे

"समत्वम् आराधनम् अच्युतस्य। सममतिरात्मा सुहृद्विपक्ष पक्षे।

न हाति न च हन्ति किञ्चिद् उच्चैः। वि० ३।७।२० तथा

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।

ज्ञान वैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणाः।

भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तस्याम्।

भग रूप भगवान की प्राप्ति भी होती है।

समस्त व्याधि तस्कर भूत, रक्ष, पिशाचादि पीड़ा भी पास नहीं आती हैं

कां. १८



अथर्व विधान काण्ड–१७

(सप्तदशं काण्डम्)

अथर्व संहिता का सप्तदश (१७ वां) काण्ड आकार में सबसे छोटे काण्ड के रूप में परिज्ञात है। इस काण्ड में केवल एक अनुवाक और उसमें भी केवल एक सूक्त है जिसमें केवल ३० मंत्र हैं। इसके विपरीत छठे काण्ड में १४२ सूक्त और ४५४ मंत्र तथा सबसे बड़े और अन्तिम बीसवें (२०) काण्ड जिसे शासन कहा गया है, में ९ अनुवाक १४३ सूक्त एवं ९५८ मंत्र हैं।

इस सप्तदश, काण्ड सूक्त को पर्याय सूक्त कहा जाता है। इसके मंत्र देवता इन्द्र एवं विष्णु है।

अथर्व विधान काण्ड–१८

कां १८ सू० ४ "नमो वः पितरः" ऊर्जे नमो वः पितरो रसाय इन ८ ऋचाओं से कुशा तथा पिण्डों में प्रेत या पितृगण का आवाहन उपस्थान करे।

यह पितृमेध का पृथक् विषय है। इसमें कुछ विशेष ज्ञातव्यः–कां ७।३-१,२) "अयाविष्टा" मे होम देश को अभिमन्त्रित करे। कां १३।२–१ "उदस्य केतवः" से पित्रेष्टि कर्त्ता गण पूर्वाभिमुख होकर बैठें।

कां० १८–४-७२ "सोमाय पितृमते" से कुशाऐं फैलाकर परिक्रमा करे।

कां १८।१–५१,५२ "तआगतावसा" इन दो मंत्रों से तथा कां १८।३–४५,४६, ६८, ६९ " उपहूता " येनः पितुः" "अपूपापिहिता" "यास्तेधानां" इनसे वैतान सूत्रोक्त रीति से तथा " नमो वः पितरः " १८।४—८१ से ८८ तक कौशिक मत से कुशा, पिण्ड, अस्थि, भस्मी आदि में लौकिक पितृगण का आवाहन उपस्थान पूजा आदि करे, प्राणप्रतिष्ठादि भी करे। कां. २।३५-१ "ये भक्षयन्तो" से माहेन्द्र का आवाहन उपस्थान करें।

"यो अग्नौ" (७।९२ (८७—१)] से त्रैयम्बक–पुरोडाश (पिण्डदान) अनुमन्त्रित कर प्रेतात्मा को दे।

कां० १८।४—६१ ६२, ६३, ६५ इन ५ उत्थापनी ऋचाओं से प्रेत को उठाकर शकट (अर्थी) पर रक्खें। इन्हीं से अर्थोत्थापनार्थ कर्म में "घट" का उत्थापन कौशिक के मत से है।

इन्हीं से अपमृत्यु प्राप्त समस्त प्रेतात्माओं का आवाहन, उपस्थान पूजा पिण्ड आदि दान, उत्थापन करे

उससें पूर्व "एदं वर्हिरसदो" १८।४।५२ से प्रेतात्मा को पिण्ड (तिलादि-पुरोडाश) दे तथा स्नानदि करायें ।

"इदं हिरण्यं" (१८।४–५६) "ये च जीवा" (१८।४–५७) से प्रेतदाह में काष्ठ अनुमन्त्रित करें।

"प्राण: सिन्धूनां" (१८।४–५८) आदि "प्र वा एतीन्दुरिन्द्रस्य" (१८।४–६०) से यम को आहुति दे। ६१, ६२, ६३ तथा ६४ से प्रेतात्मा को अग्नि में आहुतियाँ दे।

यजमान दक्षिण को (अग्निध्रः) ब्रह्मा अग्नि के पूर्व को बैठें। यहाँ वैतान श्रौत-सूत्र (७।६–१ से ४) से चरु होम का विधान है।

(३) उपर्युक्त १८।४—८१ से ८८ की ८ ऋचाओं से अनावृष्टि दोष या अतिवृष्टि के उत्पात शमनार्थ वरुण देव का होम करे (न. क. १७) "चन्द्रमा अप्स्वन्तरा (१८।४—८९) से प्रारम्भ करे "यत देवा देव हेडनम्" (६।११७-१) इन उपर्युक्त दोनों से ही वरुण देव की पूजा, उपस्थान होम करे।

'अदितिर्द्यौरदिति" (७।६—१) की ४ ऋचाओं से प्रेतात्मा को चरु होम का भी विधान है।



अथर्व संहिता काण्ड–१८

(अष्टादशं काण्डम्)

अथर्व संहिता का अष्टादश (१८ वाँ) काण्ड अपने अर्थ गौरव के कारण अत्यधिक चर्चित एवं प्रसिद्ध हैं। इस काण्ड में चार अनुवाक और प्रत्येक अनुवाक में एक-एक सूक्त हैं। चारो सूक्तों की मंत्र संख्या केवल २८३ हैं।

प्रथम सूक्त यमयमी सूक्त के रूप में प्रख्यात है। यम और यमी सूर्य सन्तति हैं अतः भ्राता-भगिनी है अथवा पति-पत्नी है यह विवाद इसी सूक्त के विभिन्न भाष्यों से प्रारम्भ हुआ है। प्रथम १६ मंत्र संवाद शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। द्वितीय सूक्त में भी यम देवता हैं तृतीय सूक्त के देवताओं में नारी देवता उल्लेख-नीय है। चतुर्थ सूक्त में ईश्वर, जीव, पितर के साथ ही अग्नि यज्ञ और धेनु को भी देवत्व प्राप्त है।

यम की शान्ति, मृत्यु के उपरान्त कर्म पितृमेध, लौकिक पितृ गण अवगाहन के अतिरिक्त अनावृष्टि निवारण एवं अति वृष्टि (बाढ़ आदि) के शमनार्थ वरुण के प्रति करणीय कर्मों के कारण इस सम्पूर्ण सूक्त का अधिक महत्व है।



❀ अथर्व विधान काण्ड–१९ ❀

कांड १९ सू० १––सं संस्रवन्तु" मेधाजनन, पुष्टि तथा लक्ष्मी प्राप्ति कर्म में जौ, गेंहूँ, धान, तिल, प्रियङ्गु (कांगनी) उपवाक (सवां) की खिचड़ी में दही मधु मिला होम करे। यज्ञावशेष को अभिमन्त्रित कर खायें। कौ० ३:२

सू० २ "शतंआपो" से समस्त शान्ति कार्यों के निमित्त नदी, सरोवर, झरनों आदि से लाये गये शुद्ध-पावन जलों को अभिमन्त्रित कर प्रयोग करे।

इसी सूक्त द्वारा "अमृता" नाम की विश्वभेषजी—शान्ति का विधान है। "आपश्च विश्वभेषजी" ऋ० वे० १।२३,२० "अप्सुमे-सोमो अब्रवीद् अन्तर्विश्वानि भेषजा "ऋ० वे० १०।९।६।

सू० ३—"दिवस्पृथिव्याः" तथा "प्रातरग्निम्" (३।१६), तथा "गिरावर गराटेषु" (६।६९) ये मेधाजनन में विनियुक्त हैं। "श्रुतकर्णाय" (१९।३–४) अतीन्द्रियार्थ-दर्शी, सर्व ज्ञातव्य वेदज्ञान, अभय तथा क्रोधी के क्रोध शमन में विनियोग करें।

१९।४ "यामाहुति" इन ३ ऋचाओं से मानसिक, वाचिक, कायिक सभी अभीष्ट फल प्राप्ति हेतु जप, उपस्थान तथा होम करे।

१९।५ " इन्द्रोराजा " धन कामी इन्द्र देव का जप उपस्थान होम करे।

१९।६—"सहस्रबाहुः" (पुरुष सूक्त है) पुरुषमेध-अश्वमेध प्राजापत्य तथा ग्रह शान्ति में आदि नारायण पूजा, जप में उपस्थान होम करे।

१९।७ "चित्राणि साकम्" एवं ८/ "नक्षत्राणि साकम्" इन २ नक्षत्र कल्पोक्त शान्ति सूक्तों से. पुष्प, वस्त्र, अनुलेप आदि के साथ कृत्तिका को घी रौहिणी को विविध बीज, अश्विनी को क्षीर युक्त वृक्ष समिधायें, भरणी को कालेतिल, घी, मधु, से सू० ७ व ८ से होम उपस्थानादि करे।

१९।९ "शान्ता द्यौः" निवास गृह प्राप्ति हेतु "त्र्यायुषम्" (५।२८—७)

"असपत्नम्" (१६।१६) के साथ "शान्ता द्यौः" को जपते हुए, अङ्गुष्ठ से प्रदक्षिणा क्रम से शर्करा चारो ओर फैंक कर गृह में स्वयं या राजा या गृहस्वामी को प्रविष्ट करायें। धूम्रकेतु आदि दर्शन-जात, अनिष्ट दोष निवारणार्थ होम, जप, उपस्थान करे।

१६/९ 'शान्ताद्यौः शान्ता पृथिवी' १६/१० शंन इन्द्राग्नी मवतामर्वोभिः १६/११ शंनः सत्यस्य पतयो भवन्तुः १६/१२ उषा अप स्वसुस्तमः इन चार सूक्तों से "तुला पुरुष" को होम कर-जप, व दान करें।

१६/१३-"इन्द्रस्थबाहू अप्रतिरथ" सूक्त राजा की रथयात्रा में गणना है।

१६/१४। "इदमुच्छ्रेयो" १५ यतइन्द्र" भयामहे १६ "असपत्नं- पुरस्तात् अभय गण में है, तद्विहित कार्यों में विनियोग करे।

कां १६/१७ "अग्निर्नापातु" १८ "अग्नि ते वसुवन्तं" १९ "मित्रः पृथिव्योदक्रामत सूक्त हैं।

सू० २० "अपन्यधु" पुरोहित युद्धोद्यत-राजा, सेना नायक, यूथपति को कवच आदि अभिमन्त्रित कर धारण कराये।

१६/२१, "गायत्र्युष्णिक्" २२ आंगिरसानामाद्यैः २३ "आथर्वणानां" ये ब्रह्म वर्चस हेतु, गायत्री महाशान्ति के जप, उपस्थान, होम में विनियुक्त हैं। (न. कां. १७ व १८) प्रयोग गायत्र्यैस्वाहा; उष्णिहेस्वाहा; अनुष्टुभेस्वाहा; वृहत्यैस्वाहा; पंक्त्यैस्वाहा, त्रिष्टुभेस्वाहा, जगत्यै स्वाहा" यदि इनका "इन्द्र जुषस्व" (२।५) के साथ प्रयोग करें तो यही ऐन्द्री महाशान्ति हो जायेगी।

१९।२४ येन देवं सवितारम्" "प्राणायनमः" (११।६) याज्ञिक यजमान के राक्षसादि उत्पातों से रक्षार्थ आदित्य की उपासना, जप, होम, उपस्थानादि करें। इसीसे राजा की परकृत बाधा भी दूर होती है। इन्हीं से वस्त्रादि के धारण में तदभिमानी देवता, सविता, का भी उपस्थान करें। यह 'त्वाष्ट्री" शान्ति वस्त्र-क्षय में (न. क. १७) भी है।

१६/२५ "अश्रान्तस्यत्वा" यह दीर्घायु में तथा अश्वरोग शान्ति में विनियुक्त करें। न. क. १७

१९/२६ "अग्नेप्रजातं अकालमृत्युओं से बचने के लिए, अग्निभय से रक्षा, बल, भृत्यादि वृद्धि हेतु स्वर्ण निर्मित कुण्डल, अंगूठी आदि अभिमन्त्रित कर धारण

करायें। तुलापुरुषदान में जल के पात्र सहित अभिमन्त्रित कर अभिषेक जल में मिला कर छीटे, स्नान, उपस्थान आदि करें।

१६/२७ "गोभिष्ट्वापातु" आशीर्वाद देवता का सूक्त है। प्रजाक्षय, प्रजा (पुत्र, पौत्रादि) तथा पशु वृद्धि सुरक्षा, नैरुज्यता के निमित्त प्राजापत्य नाम की महाशान्ति करें। रविवार में जब कृत्तिका या पुष्य नक्षत्र हों, गुरुवार में पूर्णा, (५, १०, १५, ३०) तिथियाँ व पुष्य नक्षत्र हो, तब सोना, चाँदी, लोहे की अर्थात् तीनों के ही तारों से निर्मित मणि (अँगूठी) अभिमन्त्रित कर, होम तथा सूर्य उपस्थान करे। गोदधि, मधु, घृत में बिठा, धारण करें यह आकाशी, पाताली तथा पार्थिवी सुरक्षा, तथा उत्तम लोकप्राप्ति में सहायक होती है।

कां १६ सू० २८, इमं बध्नाभि२६—निक्षदर्भ सपत्नान् ३०—यत्ते दर्भ जरामृत्यु: ये तीनों धन, ऐश्चर्य, सम्पदा, उत्तम वृष्टि, पशु, धन, कीर्ति प्राप्ति हेतु, परकुचक्रागमन से सुरक्षा; शत्रु दमन कार्य, मे ऐन्द्री महाशान्ति में विनयोग करें। दर्भमणि अभिमन्त्रित कर धारण करें साथ में "अभीवर्तेने" (१।२६) भी है। १६/३१ "औदुवरेण" इस सूक्त से धनक्षय हो जाने पर धन प्राप्ति हेतु "कौवेरी" (शान्ति करें) न. क. १६ इससे पशु, पुत्र, धन, शरीर, स्वरूप, लावण्य, पुष्टि, स्वास्थ्य पुष्टि, गौ, भैंस, अश्च, हाथी-वाहन की प्राप्ति: व्याघ्र चोर आदि से हुए विनाश की शान्ति होगी। स्त्री के ऋतु-धर्म दोष, रक्तस्राव गर्भस्त्रावादि दोष में गूलर की भस्म को सू० ३१ पीली बोतल में सूर्य तप्त गंगाजल, तथा स्वर्णतप्त जल दोनों ही मिलाकर सेवन कराने से गर्भ पुष्टि, आने वाली सन्तति का रङ्ग सुन्दर पुष्ट गात्र पुष्टवीर्य होता है, गूलर के दूध को बताशे के साथ सेवन से वीर्य दोष शमन होते हैं। गूलर की समिधा, स्रुवा,सुचि से पुत्रेष्टि यज्ञ, गर्भाधन, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन का विधान है परन्तु ये वृक्ष के उत्तर पूर्व दिशा के ही लें। तै०ब्रा० (३।७।४,५) आश्व० गृ० सू० २।३, तै० सं० २।१।१-६ इन फलों को (तिल, काले, उड़द काले, धान, जौ, कांगनी) की खिचड़ी में, रस (दही, गोदुग्ध, गोघृत, मधु,) आदि मिला, अभिमन्त्रित कर खायें। इनसे मूत्रकृच्छ, बहुमूत्र, आदि की बाधा भी दूर होती है। यह शत्रुबल-क्षय, स्वधन, बल, वीर्य, वर्चस मेधा, बुद्धि, वक्तृत्व वर्द्धक हैं।

कां १६ सू० ३१ औदुम्वरेण मणिनां तथा ऋचा ६- दधातु सरस्वती तथा वां १० आमे धन सरस्वती' यह रत्नमणि-मूँगा, मोती, आदि देने वाली-औदुम्वर मणि है। इसी से सोम यागादि में प्रवृत्ति होती हैं। वृहदारण्यक उपनिषद के चतुर्थ व पञ्चम ब्राह्मण भाग में श्रीमन्थ तथा उसके उपरान्त पुत्र मन्थ के मन्थ तथा होम का महत्व वर्णित है।

१९ सू० ३२। "शतकाण्डो दुश्च्यवनः" ये ६ सूक्त यम तथा एक शत मृत्यु भय निवारण में समर्थ "याम्यी" शान्ति में विहित "नेचछत्तु." (२।२७) के साथ पाठमूल-तथा दर्भेणदेवजातेन (१९।३२७) से होम करें। दोनों को धारण करें। १९/सू०३३ "सहस्रार्ध शतकाण्डः" पिशाच-ब्रह्म, कृत्या, असुर, यातुधान, यमदूत, शत्रु-बल क्षय प्रतारणी, राजसूय यज्ञ के तुल्य सर्व श्रेष्ठ हैं। यह माधुर्य युक्त पययुक्त, बल, वीर्य वर्द्धक, पवित्र बनाने वाली हैं इसके आसन पर एक ही लगातार नित्य जप आदि पावन कर्म कर्म करने से तात्कालिक उत्पन्न उत्तम कीटाणु, रूपी विचार उसी में समाहित होते रहने से अर्थात् नष्ट न होने के कारण, मन बुद्धि शीघ्र, आसन पर बैठते ही समाहित होते हैं। ये गुण, ऊर्ण, रेशम, मृगाचर्म-व्याघ्र चर्म में भी है। घृत युक्त दर्भ होम में विनियोग करें। मृत भोजन या जन्य पाप से मुक्त होने के लिये इसी के आसन पर बैठ, व्याहृति, गायत्री जप करें और दर्भ का पानी मात्र लें चान्द्रायण, कृच्छ् चान्द्रायण व्रत के तुल्य पापपूत करने वाली है।

कां १९ सू० ३४ "जङ्गिडोऽसि' तथा ३५ इन्द्रस्यनाम—जङ्गिडदड से यह ओषधि इसी नाम से उत्तर भारत में प्रसिद्ध है। वहीं होती है। कृत्यादि दोष, अभिचार या शाप जन्य दोष, राक्षसादि भय, वातरोग, महारोग छूत जन्यरोग, सर्व प्रकार के पीड़ा कारक रोग, विशेष हिंसकरोग बल क्षय कर्त्ता रोग, निरन्तर बहने वाले रोग, विशेष कीटाणु जनित विविध रोग, निवारण में पूर्ण समर्थ तथा ओषधि, लता द्रुम स्पर्श जनित रोग निवारण में समर्थ होने से अभिमन्त्रित कर धारण करें या अन्य प्रकार सेवन करें।

सू० १९/३६ "शतवारो अनीनशत्" ३७—'इन्दं वर्चो अग्निना' ३८—"न तं यक्ष्मा अरुन्धतो ये ३ सूक्त सन्तति, कुलक्षय निवारक हैं "सन्तति नामक शान्ति" नक्षत्र कल्प तथा शान्तिकल्प विधि इन्ही से की जाती है। भुजा में शतावर-मणि धारण करें। शतावर के अग्रभाग से राक्षस जाति जड़ से यातुधान, मध्य से यक्ष्म त्वचा के रोग, (दादा-खाजादि) उलटे फोड़े, कान नाक, नेत्र कर्णपुटि, जङ्घाओं के अन्तर्वति (राग) गुदा, (भगन्दरादि) बवासीर आदि रोग निवारण करने में समर्थ तथा मृगी (अपस्मार) (हिस्टीरि) को शान्त करने वाली है।

१९/३९ "ऐतुदेवस्त्रायमाणः" सू. ३८ "नतं यक्ष्माः" इस सूक्त से गुग्गुल वर्गीय तथा "एह्यश्मानम् "आतिष्ठ" (२।१३-४) से राजा के शय्यागृह प्रवेश काल में (कुष्ठ) गुग्गुलकी धूप दें। इनके धुंवे से यक्ष्मादि कीट, तुरन्त नष्ट होते हैं अनिष्ट, अरिष्ट परिहार होता है। कुष्ठ औषधि जल दोष जनित रोग, जोर से भयङ्कर शब्द करने वाले

रोगों के शमन करने में समर्थ है सभी सन्ध्याओं में सेवन करें। कुष्ठ-विविध कीटाणु तथा उनसे उत्पन्न रोग निवारक है। पीपल मूल में उत्पन्न कुष्ठ पीपल की जटा, इन सब रोगों में विशेष लाभ प्रद है।

कां १९ सू० ४० "यन्मेछिद्रम् मनसो" इस सूक्त तथा "पुनर्मैत्विन्द्रियम्" (७।६९) मानआपो मेधाम्" (१९।४०-२)]"मानोमेधाम्,' (१९।४०-३) "या नः पीपरश्विना" (१९।४०-४२) "यदस्मृति" (७।१११) से आज्य होम, जप, उपस्थानादि करें। इन से यज्ञ, दान, ध्यान, मन्त्र वाणी जन्य उच्चारणादि दोषों, गाकर, शीघ्र किये जाने वाले, शिर हिलाकर किये जाने वाले अर्थ ज्ञान रहित, अल्पकण्ठ, रुक रुककर किये गये जप, उपस्थान, स्तोत्रादि के सभी दोषों से नष्ट हुई पवित्रता, वर्च-स्मृति पुनः प्राप्त होती है। इन सूक्तों की ऋचाओं व्याहृतियों को युक्त कर होम आदि का विधान है। इन्ही से अभिमन्त्रित कर कर्त्ता को गौ दक्षिणादि दान करें।

कां १९ सू०४१ "भद्रमिच्छन्त ऋषयः" अंगपुष्टिकरण मुष्टीकरण, वाग्शमन, दण्ड, मेखला, शिखा, सूत्र धारण में साध्य को अभिमन्त्रित कर धारण करें।

कां १९ ४२ "ब्रह्मा होता ब्रह्म यज्ञा से अंहोमुञ्च" यज्ञ में हव्यस्वीकार करने हेतु इन्द्र देव से प्रार्थना करें।

१९।४३ "यत्रब्रह्मविदो" से दण्ड, कृष्णाजिन, मेखलादि, पयोव्रत में दीक्षा लै।

कां १९ सू० ४४ "आयुषोसि" नैऋंति दोष निवारणार्थ-आञ्जनमणि धारण करें।

कां १९ सू० ४५ "हरिणस्य" (कां.३सू. ७) से हरिणभृङ्गमणि-धारण करायें। आञ्जनविसर्पक रोग, कैन्सर, जानु के नीचे के भाग में होने वाले (डौरू रोग) समस्त उलटे मुख के फोड़े, नेत्र विकार में नेत्रों में चर्म रोग में स्नान में उपयोगी है, झूठ के दोष को शमन करने वाली अञ्जन मणि है।

कां. १९ सू० ४६ "प्रजापतिष्टवा वध्नात्" बगवीर्य वर्धनार्थ जप करे।

कां १९ सू० ४७ "आरात्रि पर्थिवं रजः" रात्रिरक्षोपाय में विनियोग करे।

कां. १९ सू० ४८ "अथो यानि च यस्मा" तथा १९ सू० ४९ "इषित योषा युवतिर्दमूना" तथा १९।४९ ऋचा ९ "योऽद्यस्तेन" ऋचा १० "प्रपादी न यथा" से चोर भय निवारण हेतु चोर पराभवार्थ वधिक तथा शत्रु पराभवार्थ—उसकी—उनकी पैरों की मिट्टी, या (मार्गरज) नदी, या सरोवरके दोनों ही किनारों की सन्ध्याकाल में लाई गई मिट्टी की प्रतिभा बना, प्राण प्रतिष्ठाकर, उसी के सन्मुख दक्षिणाभिमुख बैठकर जपें।

कां. १६ सू० ५० "अधरात्रि तृष्ट धूममशी" के जप से भयंकर व्याधियों से यदि पीड़ित हों, वे प्रलाप करेंगे, प्रतिमा को पुरानी मूंज या दाभ की रस्सियों से बांध कर, स्वयं लाई बांस की छड़ी को अभिमन्त्रित कर ताड़ित करें। उसके, उनके पैरों को बांधने से पैरों को बांधने से पैरों की गति रुकेगी, गर्दन बांधने से वाणी की गति वन्द होगी, वे सर्व प्रकार अकर्मण्य हो विनष्ट होंगे। इस कांड के सू० ४७ से ५० पर्यन्त इसी के विनियोग में हैं।

सू० ५१ "अयुतोऽहम् युतोम आत्मा" तथा ५१-२ देवस्मत्वा सवितुः का आत्मोन्नति एवं विजय कामना के लिए जप करें होम करे।

सू. ५२ 'कामांस्तदग्रे'' काम सूक्त से तथा क इदं कस्मा अदात्" (३।२६-७) "यदन्नम्" (६।७१) "पुनर्मैत्विन्द्रियम्" (७।६६) से अभिमन्त्रित कर दाता-प्रतिगृहीता दोनों ही यज्ञ-दान, आदि में दान, दक्षिणादि दें तथा लें और प्रतिगृहीना भी प्रति गृह्यमाण द्रव्य लें तो पुण्य अक्षय हो जायगा। प्रतिगृहीता को प्रत्यवाय दोष भी नहीं होगा, अनिष्ट धन, वस्तु का फल भी मधुर हो जायगा।

सू० ५३ "कालो अश्वो वहति" तथा" १६-५४ "कालादापः समभवत् एवं ५२ "कामस्तदग्रे" एवं" सहस्रबाहु (१६।३) पुरुष सूक्त इन कामसूक्तों से आज्य होम कर, भूमि, स्वर्ण, प्रतिमा का दान करें।

१६।५६ "घृतस्य जूतिः" "यज्ञास्य चक्षु:" १६।५८,५) "अग्ना वाग्निः (४।३६-६) "हृदापूतम्" (४।३६-१०) "पुरस्ताद्युक्त:" ५।२६-१) इनसे यज्ञ से पूर्व यज्ञ में-आज्य होम करें। जूति-शब्द के पर्यायवाची (ऐ० आ० २।६-१ "मतिर्मनीषा जूतिः स्मृतिः सङ्कल्पः क्रतुरसुः कामोवश" इन सभी प्रज्ञान के नामों से मानसिक यज्ञ करें।

१६।६५ "हरिः सुपर्णः" आयोजला" (६६) "पश्येम शरद:" (६७) से से सूर्योयस्था न करें।

१६।६८ "अव्यसश्च" ऋचा श्रौत स्मृति समस्त कार्यारम्भ में जपें; इसी के साथ "ब्रह्म जज्ञानम्" (४।१-१) "येत्रिषप्ता" (१।१) ये जपनीय अनि-वार्य हैं।

१६।६६, ७० "जीवास्थ" ये ५ "शुद्धा न आप:" (१२।१-३०) से आयु-ष्कामी आचमन करें। "एहि जीवम्" (४।६) से आञ्जन मणि बांधें।

१६।७१ "स्तुता मया वरदा वेदमाता" गायत्री का उपस्थान, करें।

१६।७२ "यस्मात्कोशात" इसे श्रौत, स्मार्त, समस्त वेद-ब्रह्म कर्मों में ब्रह्मो त्थान कर-जपें। वेद ही-श्रौत स्मार्त सकल धर्म प्रतिपादक मन्त्र ब्राह्मण रूप हैं

प्रत्यक्षेणानुमित्याावा यस्तूपायोनवुध्यते। एतंविन्दन्ति वेदेन तस्मादोदस्यवेदता॥

अथर्व विधान-काण्ड-१९

(ऊन बिंशति काण्डम्)

अथर्व संहिता का ऊनविंशति (१९ वाँ) काण्ड विषय विस्तार एवं कर्म विनियोग की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। कतिपय विशिष्ट विद्वान इसी काण्ड को अथर्व संहिता का अन्तिम काण्ड मानते हैं।

इस काण्ड में सात अनुवाक तथा ७२ सूक्तों में ४५३ मंत्र हैं। यदि वीसवें काण्ड के अतिरिक्त चर्चा करें तो छठे काण्ड के १४२ सूक्तों में मंत्र संख्या ४५४ है अर्थात् इस काण्ड से केवल १ अधिक है जबकि सूक्त की संख्या द्विगुण है। इस काण्ड के पन्द्रह सूक्तों केवल १ मंत्र ही है। सर्वाधिक मंत्र संख्या ३० तेईसवें सूक्त में है। दर्शनीय यह है कि एक-एक मंत्र के सूक्त में कोई अत्यन्त गूढ एवं महनीय तथ्य है। इस काण्ड के अन्तिम दो सूक्त ७१ वें में वेदमाता की वन्दना 'स्तुता मया वरदा वेद माता तथा ७२ वें सूक्त में वेदानुष्ठान "यस्माद् कोशादुदभराम वेदं तस्मिन्नन्तर वदध्यां एनम्" के आधार पर एवं "स्तुता" जैसे प्रयोग के अनुरूप इसे अन्तिम काण्ड कहा जा सकता है। परन्तु प्राप्त संहिता के स्वरूप एवं "विंश काण्डो ह्यथर्व" तथा "विंशैक्थर्वति" के अनुसार बीस काण्ड ही मानता उचित है। वेद भगवती श्रुति हैं अतः श्रुत परम्परा प्राप्त "विंश काण्डीय अथर्व संहिता" मानना ही युक्ति-युक्त एवं समीचीन है

अथर्व संहिता का प्रस्तुत उन्नीसवाँ काण्ड 'प्रकीर्ण काण्ड' "सर्वतोभद्र काण्ड" "सर्व सक्षम काण्ड" "समुपवृंहणं काण्ड" और "प्रकष्ट काण्ड" आदि विविध नामों से प्रसिद्ध है। विचारकों के लिए अथर्व संहिता का उन्नीसवाँ काण्ड सदैव बहुरंगी रहा है। एकमंत्रात्मक सूक्त एवं एक सूक्त वाले अनुवाक् सूत्रात्मक सारकथन शैली के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं।

सूक्तों के अनुसार वर्ण्य विषयों की विविधता एवं अनेक देवत्व की पद्धति इसकी अपनी विशेषता है। 'आपश्च विश्व भेषज' वाला आप सूक्त (सूक्त २) सुप्रसिद्ध आथर्वण पुरुष सूक्त (६) तथा दो-दो नक्षत्र सूक्त जिनमें २८ नक्षत्रों का वर्णन स्थिति, क्रम एवं अभिजित् नामन वैदिक नथीन जिसे आज के ज्योतिर्विद नहीं मानते का विवेचन है। इसी प्रसंग में राहु-केतु, ग्रहण उल्कापात एवं मृत्यु धूमकेतु की विवेचना फिर तीन सूतों (९-१०-११) में उनकी शान्ति कि उपाय हैं। उपसू,

अप्रतिरथ, विजय, अभय पर्याय (१७-१८-१९) के बाद महाशान्ति के दो सूक्त है इन एक वाकात्मक मंत्रों में संख्याओं का उत्कृष्ट तक विवेचन है। अवश्य ही यह क्रम अटपटा लग सकता हैं परन्तु आपःमेधा के बाद पुरुष और नक्षत्र क्रम में ही यह निबद्ध मानना चाहिए। महाशान्ति के बाद "ब्रह्मविद्या" नियमित और संगत हैं।

युद्ध विद्या, राजा-सेनापति के कर्तव्य और ऐश्वर्य प्राप्ति के सूक्तों में ही औषधियों के प्रयोग उनके अभिचार, मणिबन्ध आदि आनन्द दायक हैं। दर्भ और दुम्बर गुग्गुल, कुष्ठ, आञ्चन, अस्तृत, शतावर जांगिड्य की मंत्रों के देवता के रूप में स्मरण किया है। विषय सूक्त अभय सूक्त के साथ ही 'काम सूक्त' दो काल सूक्त (५३-५४), दो स्वप्न सूक्त (५६-५७) चार रात्रि सूक्त (४७-५०) जिनके रात्रि देवता तथा रात्रि रक्षोपाय है जो आज भी व्यावहारिक एवं प्रयोजनीय है।

यदि सम्पूर्ण अथर्व संहिता में से उन्नीसवाँ काण्ड ही प्रयासपूर्वक साधा जाय तो अथर्व प्रतिनिधित्व हो सकता है। विद्वद्वरेक आचार्य केशवदेव शास्त्री चूडा-मणि ने इनके साथ अभिचार कर्म एवं कर्मकाण्डीय विनियोग देकर पूर्णत्व प्रदान किया है।

—सम्पादक
जय कुमार मुदगल



अथर्व विधान काण्ड–२०

(विंशं काण्डम्)

अथर्व संहिता का विंश (२० वाँ) काण्ड आकार-प्रकार में तो सर्वाधिक विस्तृत है ही विषय की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इस काण्ड में ९ अनुवाकों में १४३ सूक्त हैं तथा उनमें ९५८ मंत्र हैं। इस प्रकार सत्रहवें (१७) काण्ड में एक अनुवाक् एक सूक्त और केवल ३० मंत्रों की तुलना में इस २० वें काण्ड के १४३ सूक्त और ९५८ मंत्र ये दो सीमाऐं हैं यद्यपि छठे काण्ड में भी १४२ सूक्त है। परन्तु मंत्र संख्या केवल ४५४ अर्थात् इस काण्ड की मंत्र की मंत्र सख्या के आधे से भी कम है। सूक्तों में भी १४३ में ७४ सूक्तों में मंत्र संख्या १ से ५ तक ही है।

इस सम्पूर्ण विंशति काण्ड को शासन काल कहा गया है । राज धर्म, राजा के कर्तव्य, प्रजा के कर्तव्य, राजा प्रजा सम्बन्ध, मंत्री सभा, सभासद युद्ध, शान्ति, चर्या आदि का सारगर्भित वर्णन और आदेश है ।

सम्पूर्ण काण्ड में इन्द्र का देवत्व स्वीकृत है साथ ही अश्विनी देवते वरुण एवं वृहस्पति की भी स्वीकृति है । इन्द्र का सम्बन्ध युद्ध और शासन से है । वरुण को दण्ड एवं न्याय का पाश तथा बृहस्पति देवगुरु और बुद्धिदाता हैं । केवल एक सूक्त (७३३) में कुमारी देवता है । दश सूक्त १२७ से १३६ तक कुन्तोप सूक्त कहे जाते हैं । युक्त और शान्ति दोनों में इनका उपयोग करना कुन्ताप का अर्थ ही है पाप-शाप-ताप को भस्म उपयोग है । पाँच पर्याय सूक्त रक्षा सूक्त के अतिरिक्त महौषधि सूक्त भी विशिष्ठ हैं ।

वानस्पतिक शोध के आधार पर ऋग्वेद में ६७ यजुर्वेद में ८१ एवं अथर्व वेद में २८६ औषधियों के नाम मिलते हैं । सोम से सम्वन्धित औषधि एवं वनस्पतियों का वर्णन इस काण्ड में ही है । मूर्धन्य विद्वान आचार्य केशव देव शास्त्री शास्त्र चूडामणि ने इनका अध्यवसाय सहित प्रत्यक्ष किया है ।

शैली की दृष्टि से यह काण्ड अपूर्व है । सूक्त १२४ में काकु प्रयोग 'कया नश्चित आभुवः (१) अथवा 'कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो" (२) अर्थात् प्रश्न और स्वतः समाधान शैली है । सर्वाधिक आकर्षक सूत्र शैली चार सूक्तों में १२६=२०, १३०=२०, १३१=२० तथा १३२=१६ । अर्थात् ७६ मंत्रों इस अपूर्व शैली का उपयोग है । प्रथम १२६।१—एता अश्वा आप्लावन्तें तथा "शतं भारतीय शवः ३१।४" के अतिरिक्त" "अपागाद केनिका" १२६।७ अन्तपुर की परिचारिका निरालस्य हो । अथवा "नील शिखण्डो व हनत् १३२।१६ जैसे स्पष्ट आदेश हैं ।

अथर्ववेद के ब्राह्मण गोपथ तथा मुण्डक् एवं माण्डूक्य उपनिषदों पर इसी काण्ड का सर्वाधिक प्रभाव लक्षित होता है । विद्वद्वरेण्य, भेदविद् जी ने वैतान सूत्र कौशिक सूत्र, नाक्षत्र आंगिरस एवं शान्ति कल्पों के उद्धरणों के साथ अभिचार कर्म भैषज्य, आयुष्य, प्रायश्चित्त एवं राज कर्म का युक्ति संगत व्याख्यान किया है ।

—सम्पादक

जय कुमार मुदगल

श्री अग्निदेव के, भगवान श्री पुष्करजी के श्री मुख द्वारा निर्दिष्ट अथर्वविधान का वर्णन। अथर्ववेद के सूक्तों को कौशिक सूत्र अथर्व परिशिष्ट आदि गणों में विभाजित किया है जो आगे वर्णित हैं। उनमें किस विनियोगार्थ की जायेगी यह यहाँ विधान में है।

मानव शान्तातीय गण से शान्ति हवन करे (ये लघु शान्ति व वृहच्छान्तिगण अध्याय ६ में व ५ में देखें। भैषज्यगण से समस्त रोगों की शान्ति हेतु हवन करें। त्रिसप्तीय गण से सम्पूर्ण पापों की शान्ति, अभयगण से भय (सर्व प्रकार) के दूर होते हैं। अपराजित गण से विजय संग्राम, सभा, राजद्वार आदि में, आयुष्गण से अपमृत्यु का भय नहीं रहता। स्वस्त्ययनगण हवन से स्वस्ति (कल्याण), शर्मवर्मगण से श्रेय प्राप्ति तथा वन्ध्यादोषनिराकरण होता है। वास्तुगण से वास्तु दोषों की शान्ति, रौद्रगण से समस्त दोषों की शान्ति के हेतु होम करें। ये १८ इस प्रकार हैं—

१. वैष्णवी, २. ऐन्द्री, ३. ब्राह्मी, ४. रौद्री, ५. वायव्यी, ६. वारुणी, ७. कावेरी, ८. भार्गवी, ९. प्राजापत्ति, १०. त्वास्ट्री, ११. कौमारी, १२. बह्निदेवत्यै, १३. मरुद्गणी, १४. गान्धारी, १५. नैर्ऋति की, १६. आङ्गिरसी, १७. याम्यी, १८. पार्थिवी। ये सम्पूर्ण कामनाओं की देने वाली हैं।

"यस्त्वांमृत्युरित"[1] का जप मृत्युविनाशक (कल्याण प्रद) "सुपर्णास्त्वेति"[2] का हवन सर्पदष्टादि के लिये, "इन्द्रेण दत्तमिति"[3] समस्त कामनाप्रद, इन्द्रेणदत्तम्"[4] इति सम्पूर्ण बाधाओं को दूर करने वाला, "इमा देवीति"[5] मन्त्रशान्तिकारक, "गन्धर्व नगरम्"[6] अनावृष्टि व विकृति नाशक, 'चरस्थिरभवं" भूमि सूक्त भूमिजन्य विकार भूकम्पादि की निवृत्ति को शान्ति करने वाला, अतिवृष्टि, अकालवृष्टि आदि अनहोनी एक सप्ताह के अन्तर्गत, शान्त होते हैं। यदि अद्भुत दोष अनहोनी जो हो शान्ति न की गई तो ३ वर्ष के अन्तर्गत तीन वर्षों में भयप्रद होती है।

पूजनीय देवमूर्त्ति नाचै, कम्प हो, प्रज्वलित हों, रोये, पसीना आये, हँसैं तो इस अमंगल में प्रजापति के हेतु होम करे। बिना अग्नि के प्रकाश हो, राष्ट्र में अत्यन्त स्तब्धता हो इन्धनवान प्रकाश न करे तो वह राष्ट्र पीड़ा कारक राजाओं द्वारा होता है, इस अग्नि विकृत दोष के निवारणार्थ अग्निमन्त्रों से भृगु का हवन करे। असमय में वृक्ष पर फल लगैं, या दूध या रक्त की वर्षा करैं–रक्त निकले, रोये, इन वृक्षों के उत्पातों में शिवजी की आराधना, जप, होम करैं। अतितृष्टि या अनावृष्टि दोनों दुर्भिक्ष करने वाले दोषों की शान्ति कुत्र्तु में ३ दिन से अधिक लगातार वर्षा भय

कारक कही है। इस वृष्टि दोष निवारणार्थ सोम, सूर्य देवताओं की अर्च्या करें। नदी, सरोवर, नगर से बहकर समीप को जायें, विरस हों, जलाशयों में विकृति हो तो वरुण देवता की आराधना करे। स्त्रियाँ असमय में (क्वारी) प्रसव करें या काल में प्रजननहीन हों, प्रसव विकार हो, २ या अधिक को एक साथ जन्म दें, उल्टा प्रसव हो, विकृत प्रसव हो, हीनाङ्ग, अधिकाङ्ग प्रसव हो, तो ब्राह्मणों की पूजा कर, आशीर्वचन ग्रहण करें। घोड़ी, हस्तिनी, गौ यदि एक साथ २ बच्चे जनें, विजाति–घोड़ी, बछड़ा और गौ अश्व जैसा जन्मे या विकृत जन्मे या अन्य कृत कुचक्र भय हो, इसमें होम, गौ, द्विज पूजन करें। अन्य जो जहाँ जिस धर्मशास्त्र में, जिस ऋषि, देवता, महापुरुष ने ज्योतिष आदि की अनहोनी घटनायें घटें जैसे उल्कापात, आकाश में भेरी का बजना, महा भयप्रद है, वन्य जीव ग्राम में घुसें, ग्रामीण विलाव आदि ग्राम छोड़ वन को भागें, नदियाँ ध्वनि करें, स्थल में जलाभास हो, स्थल के जीव जल में, जल के जीव स्थल पर आयें, राजद्वार में शिवा दिन में रुदन करें पछोण काल में कुक्कुट बोले, दिन में गीदड़, घर में कबूतर प्रवेश करें, कृत्या (काक) शिर पर बैठें। मधुमक्खियाँ

"देवांमरुत" सूक्त सर्व कार्यसिद्धि कर्त्ता है, "यमस्य लोकात्' इससे दुःस्वप्न नाश "इन्द्रश्च पञ्चवणिजेति' से दुकान व्यापार में लाभ, "कामोमेवाजी" से हवन स्त्रियों के सौभाग्य वृद्धि, "तुभ्यमेवजवीमन्नित्य १००० आहुति से "अग्ने गोभिन्न" इति से अत्यन्त मेधावृद्धि (गुह्यविद्यालाभ)। "ध्रुवंध्रुवेण" इससे होम स्थान पद लाभ करने वाला, "अलक्तजीवेतिशुना" कृषि विकास, लाभकर, "अहन्तेभगमग्न" से सौभाग्य वृद्धि, "येमेपाशास्तथाप्येतद्" बन्धन से मुक्तिप्रद, "शयत्वहन्निति" के जप होम से शत्रु संहार, "त्वमुत्तममितीत्येतद्" यश, बुद्धि वृद्धि, "यथामृगतीत्येतत्" मे स्त्रियों की सौभाग्य वृद्धि. "येनवेहदिशञ्चैव" गर्भलाभप्रद, "अयन्तेयोगिरित्येतत्" पुत्रप्रद "शिवः शिवाभि" सौभाग्यप्रद, "वृहस्पतिर्नः परिपातु" यात्रा में सिद्धि स्वास्तिप्रद, "मुञ्चामित्वा" अपमृत्युविनाश, "अथर्वशिरसोऽध्येता" समस्त पापनाशक है। यह प्रधान मन्त्रों के कुछ कर्म हैं, कौशिक सूत्रादि में विशेष रूप से हैं।

■

शान्तिय बृक्ष व सामग्री

यज्ञिय वृक्षों की समिधा, घी, धान, जो, तिल, श्वेत सरसों, दही, दूध, दाभ, दूव, बेलपत्र, तुलसीपत्र, कमल, शान्ति पुष्टिकर सतस्त वस्तुयें (तेल, कण, राजिका) रुधिर, विपम, समिध: काँटों से युक्त ये अभिचार कर्मों की शान्ति हेतु लें। ऋषि, देवता, छन्द तथा विनियोग के साथ कर्म करने का विधान है। पृथक् वेदोक्त श्रीसूक्त लक्ष्मी वृद्धिकर हैं।

"हिरण्यवर्णा" ये १५ हरिणी ऋचा, "रथेष्वक्षेपु वाजेति' ४ यजु की लक्ष्मीप्रद "स्रावन्तीयं तथा साम" सामवेद का श्रीसूक्त, "श्रियं धातर्मयिधेहि, अथर्व श्रीसूक्त का पाठ, जप, होम, कमलपुष्प, कमल गट्ठा, विल्वपत्र, विल्वफल, तथा तिलों से होम करें। पुरुष सूक्त समस्त कामप्रद हैं। इसकी १।१ ऋचा का जप और १।१ ऋचा से अर्पित पुष्प जलांजलि, तर्पण, स्नान, अभिसेचन व यज्ञाहुति से एवं विष्णु की अर्चना से, निष्पाप, महापातक, उपपातक, शाप, पाश, अभिचार, कृत्यादि दोषों की शान्ति होती है।उपर्युक्त १८ शान्ति विधियों पृथक् तीसरी शान्ति का विधान है। इसके कृच्छव्रत से समस्त जन्मान्तरीय कर्मज दोषों, पापों से मुक्त अक्षय-कल्याण और देवत्व की प्राप्ति होती है। अभयादि ८ सौम्य सम्पूर्ण उत्पातों को नष्ट करने वाली, अमृता सर्वदैव समस्त कामनाप्रद है। अभयादिगण से वरुण की मणि धारण करे, अमृता में शतावर मणि, सौम्या की शङ्खमणि धारणार्थ है, मन्त्र व देवता को सिद्ध व प्राणप्रतिष्ठा कर धारण करें।

आगे उल्कापात, दिग्दाह, परिवेशादि अद्भुत उत्पातों की शान्ति का विधान किया है। गान्धर्वादि दोष, नगर के उत्पात व्यष्टिजन्य दोषों की शान्ति विधियों का वर्णन है। काक मैथुन का दृष्टिगोचर होना, महल की ध्वजा का गिरना, बाग सूख जाना, या दीवार, बाग, प्रासाद से पतन स्वप्न में दिखाई देना राजा को मृत्युकर है। धूल, धुआं या कुहरा से दिशाओं का आच्छादित होना, केतु का उदय, चन्द्र, सूर्य में छिद्रों का दीखना, ग्रह, तारागण की विकृति दीखना, अग्नि का दीप्त न होना, पानी के घड़ों से स्वतः पानी निकलना, महाविनाशकारी हैं। इन सभी के लिए गौ, देव, द्विज का पूजन अर्चन यजन, भोजन, दक्षिणा बलिदान आदि से शान्ति करें।

विश्व कल्याण कर वीसायन्त्रम्

	ॐ	ऐं	ॐ	
ॐ	१	९	१०	ॐ
श्रीं	१४	७ २ ॐ ३ ८	६	ह्लीं
ॐ	५	११	४	ॐ
	ॐ	क्लीं	ॐ	

ॐ प्रणव अखिल ब्रह्माण्डबोधक, ऐं वाणी तथा पराविद्या उत्थान, "ह्लीं" लज्जा बीज, हृदयस्थ पश्यन्ति शक्ति का उदय, "क्लीं" काम बीज नाभिस्थ कुण्डलिनी (मध्यमा) शक्ति का उदय "श्रीं,, मुखस्वरूप "शब्द ब्रह्म" "वैखरी,, शक्ति का का उत्थान कर्त्ता। (१) जीव ब्रह्म के एकत्व का वोधक, (१०) अनन्तत्व वोधक, (९) नव निद्धि, नव शक्ति (१४) चौदह भुवनों का केन्द्र (ॐ) (७) व्याहृति, (२) अन्तर्वाह्य जगत (३) त्रिगुणात्मिका शक्ति का (८) अष्टधा प्रकृति (६) षडविकार (५) पञ्च महाभून (११) एकादश इन्द्रिय गण, एकादश रुद्रगण (४) चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का प्रतीक है। अर्थात् जीव और ब्रह्म का अभेद्य सम्बन्ध है, उसमें अनन्त निधियाँ चौदह भुवनों में व्याप्त हैं। वही ब्रह्म सर्वत्र व्यापक और भासमान है। यह (ॐ) एकाक्षर अद्वितीय ब्रह्म सच्चिदानन्द घन स्वरूप, सप्त व्याहृति एवं अन्तर्वाह्य जगत् है जो त्रिगुणात्मिका सृष्टि तथा अष्टधा प्रकृति से आवृत अनुस्यूत है। उस "ॐ" के ध्यान धारण समाधि में मनन, निनध्यासनादि से षट् विकार नष्ट होते हैं। पञ्चभूतों पर अधिकार प्राप्त कर्त्ता है। एक इन्द्रियगण वशीभूत होती है। तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति निश्चय होती है।

निश्चत समय स्थान व पर्व पर आराधना करें। गोरोचन या लाल चन्दन की स्याही से अनार की लेखनी से प्रतिदिन पत्र पर लिखकर प्रथम सिद्ध कर लें।

यस्तु द्वादश साहस्त्रं प्रणवं जपतेऽन्वहम् ।
तस्य द्वादशी मनसिः पर ब्रह्म प्रकाशते ॥

नेत्र ज्योति रक्षार्थं यन्त्रोपासना ।

प्रति दिन हल्दी की स्याही से अनार की लेखनी से कांसे के पात्र में यन्त्र लिखें उस यन्त्र पर तांबे की कटोरी में घी का लाल बत्ती का चौमुखा दीपक रख कर पूजन कर लें। पूर्व को मुख कर हल्दी कीं माला से सूर्य के बीज मन्त्र "ॐ ह्रीं हंस" की ६ माला जपें। ११ पाठ पीछे दी गई नेत्रोपनिषद् के करें फिर ५ माला इसी बीज मंत्र की जपें। नेत्र रोग दूर हो दिव्य दृष्टि प्राप्त करे।

यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

कन्या को शीघ्र सुन्दर, योग्य वर प्राप्ति मन्त्र

ॐ हे गौरि शंकरर्धांगिनी ! यथा त्वं शंकरप्रिया ।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सु दुर्लभम् ॥

प्रेत बाधा का मन्त्र

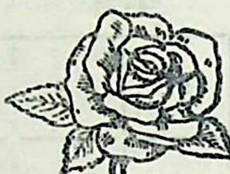
ॐ दक्षिण मुखाय पञ्चमुखहनुमते करालबदनाय नरसिंहाय
ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रू, ह्रैं, ह्रौं, ह्र सकल भूत, प्रेत दमनाय स्वाहा ॥
१० हजार जप कर, अष्टगन्ध से हवन कर सिद्ध कर लें।

विष दूर करने का मंत्र

ॐ० पश्चिम मुखाय गरुड़ाननाय पंचमुख हनुमते मं, मं, मं, मं, मं सकल विष हराय स्वाहा। ग्रहण या दीपमालिका में घी का दीपक जला १० हजार जपे। तब क्रोधित स्वर से विष को उतारने का झाड़ा दे।

महामारी, अमंगल तथा ग्रहादि दोष शान्ति मन्त्र

ऊ० ऐ ह्रीं, श्रीं, ह्रां, ह्रीं, ह्रू, ह्रैं, ह्रौं, ह्र ऊ० नमो भगवते महाबल पराक्रमाय भूतःप्रेत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, शाकिनी, डाकिनी, यक्षिणी, पूतना, मारी, महामारी, राक्षस, भैरव, बैताल, ग्रहराक्षसादिकान्क्षणेनहन हनभञ्जय २ मारय २ महामाहेश्वर, रुद्रावतार ऊ० ह्रं फट् स्वाहा । ऊ० नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्ट जनमुखस्तम्भनंकुरुकुरु स्वाहा । ऊ० ह्रां, ह्रीं, ह्रू, ठं ठं ठं फट् स्वाहा । ग्रहणादि पर्व पर या भौम से प्रारम्भ कर ७००० जप, दशांशकृत्यकर प्रयोग करना चाहिए ।



उपसंहार

वेद–श्रौत–स्मृति–सकल कर्म प्रति पादक-आम्नाय-ब्राह्मणरूप है । संहिता के अध्ययनान्तर विधि का अधिकार संहिता विधि है अथर्व वेद के ९ भेद हैं । उनमें से ४ शाखाओं शौनकादि में कौशिक विधि वर्णित हैं । गोपथ ब्राह्मणादि में अथर्वादि रहित विधि मात्र के दर्शक यथोपयोगी सूत संहिता विधान की टीका में वर्णित है । ये शान्तिक, पौष्टिक, अभिचार, अद्‌भुतादि कर्मों की संहिता विधि में है । तीन प्रकार के कर्म हैं । (१) विधि कर्म, (२) अविधि कर्म (२) उच्छ्र्य कर्म तीन ही प्रमाणक विधि हैं । (१) प्रत्यक्ष (२) अनुमान तथा (३) शब्द । कौशिक, परिशिष्ठ तथा दारिल ये आम्नाय हैं यह विधि है वेद–प्रत्यय तथा गोपथ ब्राह्मण प्रमाण २ आम्नाय प्रत्यय ही मुख्यत, अभ्यास में आते हैं । इन्हीं से इस लोक पर लोक तथा लकान्तर साधन लक्षण फल प्राप्त होता है । वेद स्वयम्भू ब्रह्न स्वरूप परंतत्व भगवान की प्राप्ति के मात्र साधन हैं इसके उद्वज्ञादि के दिव्य प्रयोग अमोघ शक्ति, समस्त भीति निवारक है । महर्षियों के तपो वल-मन्त्र वल एवं देव (ब्रह्म) वल से हस्ताभि मर्शन मात्रा से व्याधियां पलायन पर हो जाती हैं और ब्रह्म तेज ७ स्वर्गादि की उपलब्धि होना साधारण है ।

टिप्पणी

(१) प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायेन बुध्यते ।
एतं वदन्ति वेदेन तस्माद्वेदस्य वेदता ॥

(२) यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिँल्लोके स्वर्हितम् ।
तस्मिन् मां धेहि पवमानामृते लोके अक्षिते ॥ ऋ० वे० ९।११।७

(३) समत्वम् आराधनम् अच्युतस्य ।
सममतिरात्मा सुहृद्विपक्ष पक्षे ।
नहाति न च हन्ति किञ्चिद् उच्चैं ॥ नि० ३।७।२०

(४) ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः ।
ज्ञान वैराग्यगयोश्चैवषण्णां भग इतीरणा: ॥

(५) मरणं व्यसनं चैव बन्धनं च विशेषतः ।
प्रणिपातोन्मत्तादावा देवोपहृतिरेव च ॥
पुत्रादि धन नाशाश्चगृहे दोषान् बहूनपि ॥

(६) शर्वं पशुर्पतिं चोग्रं भयं अथेश्वरम् ।
महादेवं च ॥ (श० ब्रा० ६।१-११।१

(७) दुःखेन यन्न संभिन्नं नचाग्रस्तमनन्तरम् । अभिलाषोपनीतं यत् सुखं स्वर्ग पदास्पदम् ॥ तै० ब्रा० १।३।८।५॥ तथा" यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम । गीता १ ।६

वेदत्रयी न केवल-यज्ञ तथा ज्ञान की ही निधि है । अपितु ज्योतिष, खगोल, भूगर्भ वास्तु ज्ञान अद्भुत विघ्न व उनके निराकरण, से शोध, पूर्ण है । ज्वाला:मुखी युद्ध रूपात्मक, अर्थ विवृत विज्ञान पर गवेषणापूर्ण है । ऋग्वेद ज्योतिष (सोमसुधाकर भाष्य) वेदांग ज्योतिष में ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्व वेद ज्योतिष प्रधान्य हैं ऋग्वेद की ३६ कारिकायें, यजुर्वेद की ४९ तथा अथर्व के २६२ मंत्र प्रामाण्य है । इनमें "अथर्व ज्योतिष" फलित की अनेक महत्वपूर्ण अनुभूत विषयों से परिपूर्ण है । इसके मंत्र ९०, ९१, ९३, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८ अनूठे हैं । इसी में ग्रह, उल्का, विद्युत, भूकम्प दिग्दाह आदि का वर्णन तो "न भूतो न भविष्यति" का प्रतीक है । ज्वालामुखी के नित्य प्रचलन से भयङ्कर अवर्षण, अन्ध-

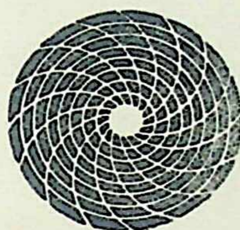
कार, पर्वत कम्पन, भूभागोत्थान, जल निरोध, दुर्भिक्ष आदि का होना और उसका निराकरण, प्राणिमात्र के त्राणार्थ, असाधारण-अन्वेषण परक है वैदिक वाङ्मय में इन्द्र वृत्रासुर युद्ध की अनेक ऋचायें इसकी पृष्ठ भूमि में प्रमाण हैं। अथर्व संहिता में भैषजों में सदंपुष्पा (त्रिसन्ध्या) वाणापर्णी, रोहिणी अजभृङ्गी, अराटकी, चीपद्रु पीतद्रु, पंद्व आदि भेषजों के उल्लेख व प्रार्थनायें हैं जो प्राणि मात्र के कल्याण स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त महत्व की अन्वेषण परक है। ये समस्त मिथ्याहार-विहार जन्य तथा कर्मज, पापज महाव्याधि- राजयक्ष्म कैन्सर गण्डमाला, मधु मेह, श्वांस, कास, अस्थिभग्न, पाण्डु, शीर्षस्थ समस्त व्याधि-कुष्ठ, नपुंसकता, वन्ध्यत्वादि के शमन में समर्थ, स्थावर, जङ्गमविष दूर करने वाली हैं। यही नहीं समस्त पाप, नैऋंति वशादि दोष क्षेत्रिय व्याधि आदि की शान्ति में अद्वितीय है।

वेद इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट परिहार के अलौकिक उपाय का ज्ञान स्रोत है। उपर्युक्त परिचय स्थूल रूप ही है। इसकी अपेक्षाकृत ज्ञान साधन का महान स्रोत इसमें समाविष्ट हैं। जो हमें नाना विषयों के मार्ग दर्शन कराते हैं। वेद विश्वतोन्मुख हैं, वेद वचनों में विविध अर्थ गुह्य रूप में निर्दिष्ट हैं। जिन्हें प्रति भावना, गुरु कृपा से प्राप्त कर सकते हैं। इसी करण वेदाधिकारियों की यथावत् वेद ग्रहण विधि ज्ञान परम्परानुगत आवश्यक है। उसके विना समस्त प्रयत्न निष्फल ही हैं। आधुनिक इतिहास में कुमारिल भट्ट जैसे मतिमान मनीषि ने वेदों के रक्षण के लिये महान चिन्ता व्यक्त की है "को वेदानुद्धरिष्यति" ऐसे ही नररत्नों को जन कल्याण भावना से स्व प्राणों को तृणवत समझ-वेदनिधि-के अन्वेषण, संरक्षण, संवर्द्धन के लिये जो भी दुष्कर साहसिक मार्ग पर अग्रसर होने का दृढ़सङ्कल्प अनिवार्य आवश्यक है। अन्यथा अब और भविष्य में वेदाक्षरश्रवण मात्र भी सुदुर्लभ ही हो जायगा जो इस रक्षण, सम्बर्द्धन, अन्वेषणादि में प्रयत्न पर हैं या हों उनके उत्साह वर्द्धनार्थ उचित आवश्यक सहयोग हम भारतीयों का सुतरां प्रयत्न आवश्यक है। अन्यथा यह ज्ञान भण्डार राष्ट्र की महान विधि जो कुछ भी छिन्न-भिन्न अवशिष्ट अप्राप्य तथा निरुपयोगि हो जायगी और हो भी रही है।

१ - संहिता विधि की श्रौत, स्मार्त, आर्ष आम्नाय से निसृत मंत्रों की प्रयोग विधि का भाषा में उल्लेख हैं। शास्त्र अगाध अगम्य है। काल, कर्म-मति दौर्बल्य से त्रुटियों का रहना असम्भव भी नहीं। यथा मति सहृदय वेद विदों को जागरुकता से मनन करने, तथा राष्ट्र की विस्मृत अमोघ ज्ञान सरिता को पुनः प्रवाहित कर त्रस्त

मानवता के कल्याण को प्रांशुमध्ये फले लोभादुद्वाहूरिव वामन:" की किम्वदन्तिका प्रयास मात्र है।

वेदार्थस्यप्रकाशेन तमोहार्दं निवारयन्।
पुमर्थांश्चतुरो देयात् विद्यातीर्थ महेश्वरः ॥



१—सप्तरात्रं घृताशी वाततो होमं प्रयोजयेत्।
गव्येन पयसा कुर्यात्-सौवर्णेन स्रुवेणतु ॥
वेदानामादिभिर्मन्त्रैर्महा व्याहृति पूर्वकैः ॥ (परिशिष्ट)

मुद्रक—आदर्श प्रिंटिंग प्रेस, बंगाली घाट, मथुरा। फोन नं० ४३२६,

